सत्य सिद्धांत

"वैज्ञानिक प्रमाणों सहित"

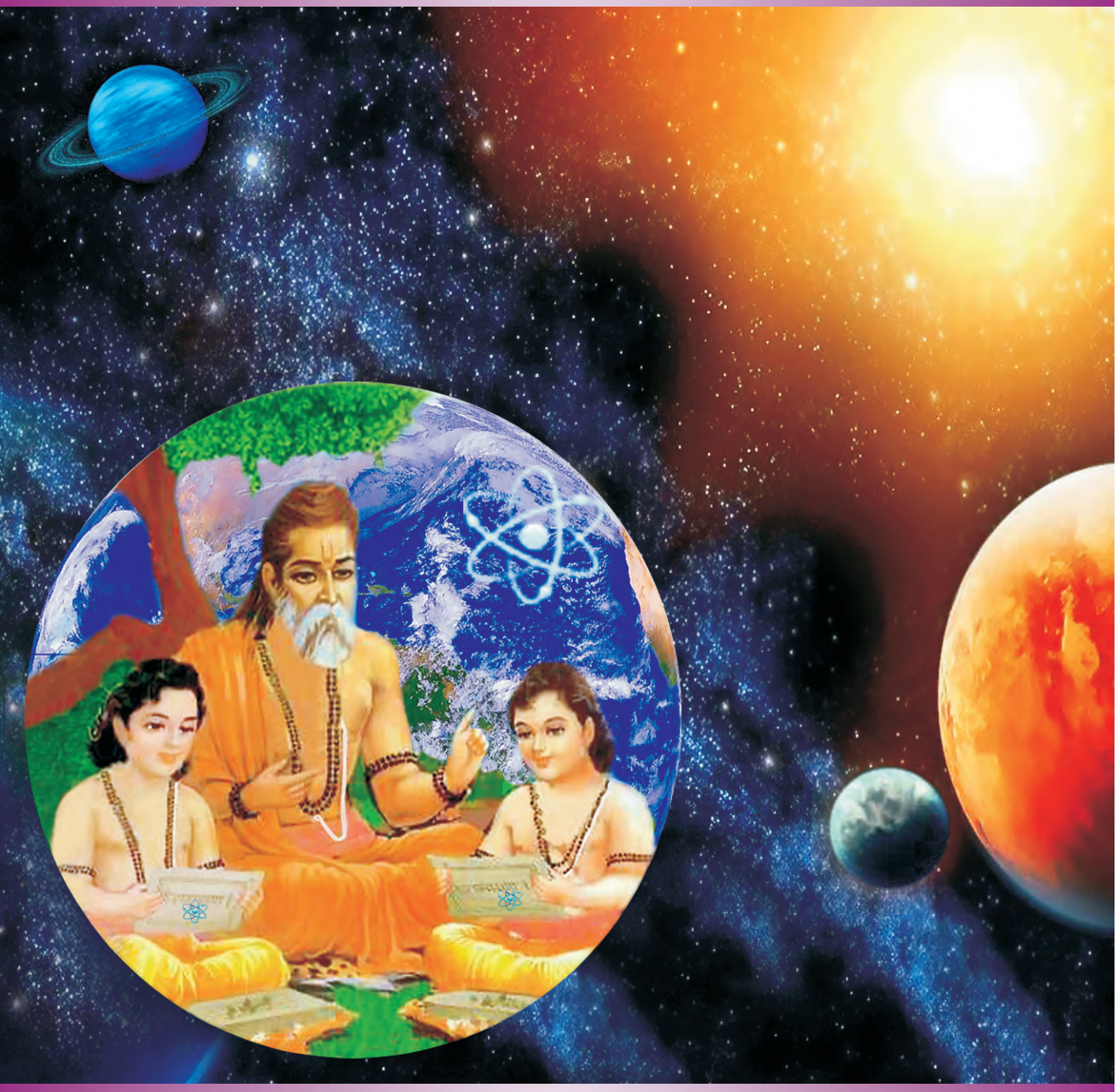

प्रकाशक

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट

आर्यवन, रोजड़, गुजरात

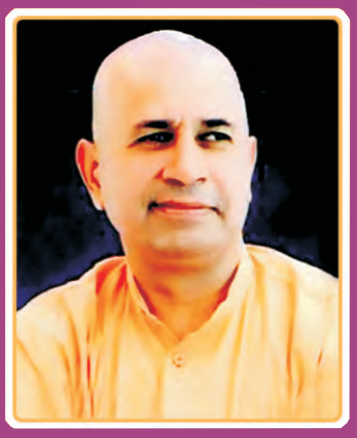

।। आशीर्वचन ।।

छोटे-छोटे शब्दार्थों-सिद्धांतों के ग्रहण से व्यक्ति कठिन से कठिन विषयों को भी सरलता से समझ लेता है। उन्ही सिद्धांतों को अतिसरल व संक्षिप्त रूप से उदाहरण, तर्क व प्रमाणों के आधार पर सिद्ध करते हुए आचार्य धर्मवीर जी 'मुमुक्षु' ने इस लघु किंतु महत्वपूर्ण पुस्तक की रचना की है।

वर्तमान में संस्कारों से वंचित होती जा रही भावी पीढ़ी के लिए ईश्वर, धर्म - संस्कृति, अध्यात्म, योग, ब्रह्मचर्य, व्यसनमुक्ति, अंधविश्वास-पाखंड व राष्ट्रधर्म आदि विषयों को सप्रमाण सिद्ध किया है। पुस्तक को धारा प्रवाह प्रश्नोत्तर रूप से प्रस्तुत कर परीक्षोपयोगी भी बना दिया है। शंका-समाधान पूर्वक संवाद विषय को गहराई से समझने में अति सहायक सिद्ध होगा। जिससे पाठकों की तर्क व चिंतन शक्ति का भी विकास होगा।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण व नैतिक मूल्यों से युक्त ये पुस्तक विद्यालीय पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके विद्यार्थियों को शिक्षा के यथार्थ स्वरूप से परीचित कराया जा सकता है। माता-पिता व अध्यापकगण स्वयं इस पुस्तक का अध्ययन करें और अपनी संतान व शिष्यों को भी अवश्य कराएं। जिनसे वे आज्ञाकारी, सदाचारी व संस्कारी बन के अपना व राष्ट्र का कल्याण कर सकें ।

इस 'सत्य सिद्धांत' नामक श्रेष्ठ व सरल रचना के लिए मैं आचार्य धर्मवीर जी 'मुमुक्षु' को बहुत आशीर्वाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि ये इसी प्रकार शिक्षा सुधार के क्षेत्र में परिश्रम करते हुए समाज का अच्छा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

- स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

निदेशक

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात)

संस्कारोदय

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि॥

ऋ०मं०३ । सू० ३८ । मं० ६ ॥ (स० प्र०, षष्ठ समु०)

ईश्वर उपदेश करता है कि राजा और प्रजा के पुरुष मिल के सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धिकारक राजा प्रजा के सम्बन्धरूप व्यवहार में तीन सभा अर्थात् विद्यार्य्यसभा, धर्मार्य्यसभा राजार्य्यसभा नियत करके बहुत प्रकार के समग्र प्रजासम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को सब ओर से विद्या, स्वातंत्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करें।

राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति परिषद् 'न्यास'

देश मे विलुप्त होती जा रही प्राचीनतम आध्यात्मिक संस्कृति, धर्म, सभ्यता, भाषा, आचार-विचार, संस्कारों एवं आदर्श परम्पराओं के संरक्षण एवं सवंर्धन के लिए इस 'परिषद्' की स्थापना की गई है।

उपलब्धियां

१. 'परिषद्' द्वारा देश भर में अब तक प्राथमिक विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में हजारों विद्यार्थियों को अपनी महान संस्कृति, महान परम्पराओ व शिक्षा के मूल उद्देश्य व नैतिक मूल्यों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ परिचय कराया गया ।
२. 'संस्कारोदय' प्रकल्प द्वारा प्रतियोगिता-परीक्षाओं का आयोजन कर पुरस्कार वितरण किये।
३. स्त्री शिक्षा, समानता व गौरव के लिए शिक्षण संस्थानों में शंका-समाधान व व्याख्यान ।
४. पर्यावरण शुद्धि एवं मानव कल्याणार्थ अनेक यज्ञों का आयोजन किया गया ।
५. साहित्य रचना एवं पत्रक वितरण द्वारा जन सामान्य को जागरूक करना आदि मुख्य है।

आ० धर्मवीर 'मुमुक्षु'
(निदेशक)

स्वामी विवेकानन्द जी 'परिव्राजक'
(मार्गदर्शक)

डॉ० मनीष आर्य
(महासचिव)

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

विश्वविख्यात् दार्शनिक, महान् विज्ञानवेत्ता-महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्य-असत्य की पाँच प्रकार से परीक्षा

- **एक** – जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों से अनुकूल हो, वह-वह 'सत्य' और उससे विरुद्ध 'असत्य' है।
- **दूसरी** – जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह-वह 'सत्य' और जो-जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है, वह-वह 'असत्य' है। जैसे- कोई कहे कि 'बिना माता पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ।' ऐसा कथन सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से सर्वथा 'असत्य' है।
- **तीसरी** – 'आप्त' अर्थात् जो धार्मिक विद्वान, सत्यवादी, निष्कपटियों का संग, उपदेश के अनुकूल है, वह-वह 'ग्राह्य' और जो-जो विरुद्ध वह-वह 'अग्राह्य' है।
- **चौथी** – अपने आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है, वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि-'मैं भी किसी को सुख वा दुःख दूँगा, तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा'।
- **पाँचवीं** – आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव....इन्हीं परीक्षाओं से मनुष्य सत्यासत्य का निश्चय कर सकता है अन्यथा नहीं।

श्रद्धा

देती है।

नम्रता

देती है।

योग्यता

देती है।

सत्य सिद्धांत

''वैज्ञानिक प्रमाणों सहित''

True Principles

" With Scientific Evidences "

लेखक

आ.धर्मवीर 'मुमुक्षु'

विद्यावाचस्पति, दर्शनाचार्य

निदेशक : राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति परिषद्

प्रकाशक :

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद, जिला साबरकांठा (गुजरात) 383307

दूरभाष : (02770) 287418, 287518 चलभाष : 94094 15011, 94094 15017

Email: darshanyog@gmail.com, Website : www.darshanyog.org

Facebook/Skype : darshanyog, Youtube : darshanyog2009

मुख्य वितरक :

राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति परिषद्

National Council of Education and Culture

1076, Gram Sabha, Near Sardar Patel Lake, Pooth Kalan, Delhi-110086

(Near Sector-20, Rohini)

Email : ncecbharat@gmail.com, M. : 9818651472, 9968114400

विद्या पढ़ने से पूर्व ईश्वर से प्रार्थना

ओ३म् सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्य्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।। ओ३म् शांतिः शांतिः शांतिः।।

हे ईश्वर! आप हम दोनों 'गुरु और शिष्य' की साथ-साथ रक्षा करें।
हम दोनों को साथ-साथ सुख प्रदान करें। हम दोनों का साथ-साथ बल बढ़ायें।
हम दोनों का पढ़ना-पढ़ाना तेजस्वी हो। हम परस्पर द्वेष न करें।
आध्यात्मिक दु:ख, आधिभौतिक दु:ख और आधिदैविक दु:ख हमारे दूर हों।

प्रथम संस्करण : 1 जून 2017
द्वितीय संस्करण : 1 मार्च 2018
तृतीय संस्करण : 20 अक्टू. 2018 (परिवर्धित)
मुद्रक : साह ग्राफिक्स, दिल्ली-82
लागत मूल्य : पैंतीस रुपये (35 रू.)

© लेखकाधीन

शब्द संयोजन: डी.आर. प्रिन्टर्स
आवरण सज्जा : डॉ. मनीष आर्य
प्राप्ति स्थान :

१. आचार्य संदीप जी 'दर्शनाचार्य'
आर्य समाज, सैक्टर-14, सोनीपत (हरि0)
मो0 : 9466821003

२. दर्शन योग महाविद्यालय
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर
जिला रोहतक (हरि0) - 124001
मो0 : 7027026175

३. आचार्य योगेश 'वैदिक'
वेद प्रचार समिति-वैदिक संस्थान
फतेहपुर टोंगरा रोड़, शिवपुरी, म. प्र.-473551
मो0 : 9993046901

४. वेद ऋषि
बी-405, नेहरू विहार, निकट पुलिस बूथ
दिल्ली-110054 (भारत)
वेबसाईट : www.vedrishi.com

विषय सूची

	विषय	पृष्ठ सं०
1	बाल शिक्षा	1
2	अध्ययन-अध्यापन	3
3	युवा शिक्षा-ब्रह्मचर्योपदेश	6
4	आहार गुण-दोष	7
5	वर्ण-आश्रम	10
6	राजधर्म	12
7	ईश्वर	14
8	वेद-धर्म	17
9	सृष्टि विद्या	19
10	आध्यात्मिक ज्ञान	21
11	शंका-समाधान	23
12	योगाभ्यास	25
13	स्मरणीय	27
14	गुरु-शिष्य संवाद	29
15	चरित्र चर्चा	33
16	स्वास्थ्य रक्षा	36
17	प्रश्न पत्र का प्रारूप	41

डॉ. सत्य पाल सिंह
Dr. Satya Pal Singh

सत्यमेव जयते

मानव संसाधन विकास; और
जल संसाधन, नदी
विकास एवं गंगा संरक्षण राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT;
AND WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT AND
GANGA REJUVENATION
GOVERNMENT OF INDIA

सं.73/2018-19/

अक्तूबर 16, 2018

!!सम्मति!!

उत्कृष्ट साहित्य ही उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान कर सकता है। बिना उत्कृष्ट शिक्षा व संस्कारों के मनुष्य कभी भी महान लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और शिक्षा के बिना सभ्य समाज की आशा निराधार है। सार्थक शिक्षा ही मनुष्य के चिंतन को व्यापक स्वरूप प्रदान करती है। मनघड़ंत मान्यताओं या कल्पनाओं को शिक्षा का आधार नहीं कहा जा सकता। विज्ञान सम्मत शिक्षा, समाज व राष्ट्र से मतभेद और भ्रम मिटाकर समभाव व सद्भाव बढ़ाती है, कुरीतियों-कुसंस्कारों का अंत करती है जिससे समाज व राष्ट्र एकता के सूत्र में बंधा रहता है।

विभिन्न मूलभूत विषयों से समन्वित तर्क व प्रमाणों से परिपुष्ट "सत्य सिद्धांत" नामक यह पुस्तक प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक के विद्यार्थियों व अभिभावकों के लिए समान रूप से उपयोगी है। यदि शिक्षा से चारित्रिक व नैतिक मूल्य निकाल दिए जाएं तो वो अर्थार्जन मात्र का आधार बन जाती है, फिर उससे समाज व राष्ट्र के कल्याण की आशा नहीं कि जा सकती।

मूल्यपरक शिक्षाओं से युक्त पुस्तक "सत्य सिद्धांत" के नवीन संस्करण के लिए मैं पुस्तक के लेखक, आचार्य धर्मवीर मुमुक्षु को शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के अध्ययन से विद्यार्थीगणों की अपने अभिभावकों एवं शिक्षकगणों के प्रति आदर-सत्कार की प्रेरणा एवं नई ऊर्जा मिलेगी।

(डॉ सत्य पाल सिंह)

Office : Room No. 104-A, 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001
Tel.: (O) +91-11-23070036, 23381302 , Fax : +91-11-23782052, (R)+91-11-23015800, 23012800 Telefax : +91-11-23794029
E-mail : dr.satyapalsingh@gov.in

।। सम्मति ।।

अध्ययन-अध्यापन काल से ही एक ऐसे पाठ्यक्रम की ललक थी जो अक्षर ज्ञान और भौतिक सुख-साधनों के साथ-साथ धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान का भी विकास कर सके। कुछ ऐसे अतिमहत्व के विषय जिनकी चर्चा तो दशकों से है पर चरितार्थ होने की आशा नहीं बंधती। उसी उद्देश्य को यह 'सत्य सिद्धांत' नामक पुस्तक पूर्ण करती है। यदि विद्यार्थी जीवन में ही मनुष्य को उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव व शिक्षा-संस्कारों का बोध करा दिया जाए तो नि:संदेह समाज व राष्ट्र का बड़ा भारी उपकार संभव है। शिक्षण संस्थानों में ऐसी सारगर्भित, प्रामाणिक व तार्किक 'नैतिक शिक्षा' से सम्बंधित पुस्तक की बड़ी आवश्यकता थी, जिसकी मान्यता सार्वभौमिक हो। लेखक ने उन्ही युवा शिक्षा से युक्त व अन्य और भी कई महत्वपूर्ण विषयों और परिभाषाओं का प्रामाणिक वर्णन इस 'सत्य सिद्धांत' नामक पुस्तक में किया है। साथ ही अनेक मनगढ़ंत सिद्धांतों, कुप्रथाओं और अंधविश्वासों पर भी तार्किक प्रहार कर यथार्थ को प्रकाशित किया है। गुरु-शिष्य के मध्य सम्बन्ध, शंका-समाधान, संवाद और प्रश्नोत्तर किस रूप में हों, उनका भी बड़ा सुन्दर धाराप्रवाह वर्णन किया है। प्रस्तुत पुस्तक को पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग बनाकर यदि अध्ययन-अध्यापन किया जाए तो शिक्षा का मूल उद्देश्य नि:संदेह पूर्ण होगा।

वैज्ञानिक प्रमाणों से परिपुष्ट व सत्य सिद्धांतों से युक्त ये पुनीत रचना अपने उद्देश्य में पूर्ण हो, इन्ही शुभकामनाओं के साथ मैं आचार्य धर्मवीर जी 'मुमुक्षु' को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

नफे सिंह (प्रधानाचार्य)
भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' से सम्मानित

।। सम्मति ।।

विद्यार्थी जीवन से ही एक अभिलाषा थी कि हमारी शिक्षा पद्धति में नैतिक शिक्षा एक मुख्य विषय हो। लेकिन वो आधारहीन, आडम्बरयुक्त, काल्पनिक न हो। अपितु तार्किक और प्रामाणिक हो। जिससे उत्तम गुण कर्म स्वभावों को जानकर मनुष्य मात्र अपना जीवन श्रेष्ठतम बना सके। विद्यार्थी काल में श्रेष्ठ गुणों के आचरण करने से जीवन सरल एवं सार्थक हो जाता है। इसलिए नैतिक शिक्षा विद्यार्थी जीवन का एक अभिन्न अंग होना चाहिए।

ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का वर्णन भी आप तभी जान पाएगें जब आप धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से अग्रसर हो। प्रमाणिक और वैज्ञानिक पद्धति से जानना ही किसी विषय को पूर्ण बनाता है।

'आचार्य मुमुक्षु जी' ने जीवन को श्रेष्ठ रूप से जीने के लिए अपने विचारों को प्रामाणिक पद्धति से इस 'सत्य सिद्धांत' नामक रचना में रखा है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी ज्ञान का सर्वोत्तम रूप विद्यार्थी जीवन में श्रेष्ठ और प्रामाणिक पुस्तकें ही हैं जिससे वह उत्तम मार्ग पर चल सकें और कुसंस्कारों, कुप्रथाओं और अंधविश्वासों को त्यागकर प्राचीन सिद्धान्तों को प्रामाणिक रूप से समझ और धारण कर जीवन सफल कर सकें।

इस सुंदर रचना के द्वितीय संस्करण के लिए 'आचार्य मुमुक्षु जी' को मेरी अनेकों शुभकामनाएं।

डॉ० नेहा रावत 'वैज्ञानिक'
CSIR- National Aerospace Laboratories, Bengaluru (Karnataka)

विविधताओं से भरे हुए इस जगत में समस्त प्राणियों में मनुष्य ही कर्म करने में पूर्ण समर्थ है। लेकिन वे पापकर्म और पुण्यकर्म दोनों हो सकते हैं और बिना परीक्षा के पाप-पुण्य का निर्णय नहीं हो सकता। यह निर्णायक बुद्धि या योग्यता भी मनुष्य अपने आप प्राप्त नहीं कर सकता जब तक सर्वज्ञ चेतनसत्ता उसे ये ज्ञान न दे। आधुनिक विज्ञान ने पदार्थों को जीवनोपयोगी बनाकर मानव का बहुत कल्याण किया है। किन्तु जीवन में आने वाले सुख-दुख, जन्म-मृत्यु आदि व सृष्टि के रचयिता व ज्ञानदाता ईश्वर के विषय में वह अब भी मौन है। मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक विकास भी अनिवार्य है। किसी भी विषय को प्रमाण और तर्कों के साथ वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत करना उस विषय को सार्वकालिक, सार्वदेशिक, सर्वहितकारी बना देता है। आचार्य जी ने जीवन को उत्तम बनाने वाली उसी अमूल्य शिक्षा को बड़ी प्रामाणिक पद्धति से इस '**सत्य सिद्धांत** वैज्ञानिक प्रमाणों सहित' नामक पुस्तक में रखा है।

मुझे विश्वास है कि इसके अध्ययन से पाठकजन अपने सामाजिक व आध्यात्मिक जीवन को ऊंचा उठाने में सफल होगा। इस सर्वहितकारी रचना के लिए मैं आचार्य श्री धर्मवीर जी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

-सौरभ 'वैज्ञानिक' (डी.आर.डी.ओ.)
Defence Research and Development Organization

।। भूमिका ।।

समस्त प्राणियों में मनुष्य के पास ही ऐसी बुद्धि है जिसको उत्तम शिक्षा के द्वारा विकसित किया जाता है। मनुष्यों से अतिरिक्त किसी भी जीव के लिए कोई आचार संहिता नहीं है इसीलिए मनुष्य अन्य प्राणियों से उत्कृष्ट व भिन्न है।

उत्तम शिक्षा मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन निर्माण का ही आधार नहीं होती अपितु सामाजिक व राष्ट्रीय उत्थान का भी मूल कारण होती है। अपने शिष्य व संतानों को उत्तम गुण-कर्म-स्वभावों व संस्कारों से वंचित रखना उन पर तथा समाज पर घोर अन्याय है। समाज की वर्तमान दिशा व दशा देखकर कोई भी बुद्धिजीवी इसका अनुमान सहज ही लगा सकता है। शिक्षा की ऐसी संस्कारहीन, मूल्यहीन एकांगी व्यवस्था जिसका उद्देश्य धनार्जन कर भोग-विलास मात्र ही हो वह स्वयं, परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए कल्याणकारी कभी नहीं हो सकती।

देशभर के शिक्षण संस्थानों में व्याख्यानों के अवसर पर शिक्षक समुदाय की ये इच्छा थी कि 'नैतिक शिक्षा' से सम्बन्धित पुस्तक लिखूँ। जिससे विद्यार्थियों का चारित्रिक व आत्मिक विकास हो सके। नैतिक शिक्षा से वंचित आधुनिक पद्धति से पढ़ने वाले विद्यार्थी ईश्वर, आत्मा, धर्म, सभ्यता आदि के विषय में भ्रमित होके नास्तिक होते जा रहे हैं। और बिना अकाट्य तर्क व प्रमाणों के वे इन विषयों को ग्रहण भी नहीं कर सकते।

अत: प्रस्तुत पुस्तक विश्वविख्यात् वैज्ञानिकों, विचारकों व शिक्षाविदों से परिपुष्ट तर्क व प्रमाणों के साथ लिखी गई है क्योंकि बिना सुप्रमाण व सुतर्कों के कभी सत्य सिद्ध नहीं होता। पुस्तक का प्रारूप परम्परा से कुछ हटकर अवश्य लगेगा। जिसका कारण पृष्ठों का पूर्ण उपयोग लेकर सर्वसुलभ बनाना मात्र रहा है। इस पुस्तक को पढ़ व पढ़ाकर माता-पिता व शिक्षक अपने संतान व शिष्यों का सुखद भविष्य सुनिश्चित कर सकेंगे। क्योंकि थोड़ी भी उत्तम शिक्षा व उत्तम संस्कार प्राप्त करने वाली संतान दु:खी और असहाय कभी भी नहीं होती। मानव जीवन एवं शिक्षा के मूल उद्देश्य को पूर्ण करने में ये लघु रचना सहायक हो, परमपिता परमात्मा से ऐसी प्रार्थना है।

कृतज्ञता व धन्यवाद ज्ञापन

परमगुरु परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनसे प्राप्त ज्ञान, बल व सामर्थ्य से ये रचना कार्य सम्पन्न हुआ है। **'सुविख्यात् मौलिक चिंतक, वैदिक दार्शनिक एवं शंका-समाधान विशेषज्ञ' श्रद्धेय गुरुदेव स्वामी विवेकानन्द जी 'परिव्राजक'** ने अपने आशीर्वचन व अमूल्य सत्परामर्श से अनुगृहीत किया तथा **श्रद्धेय आचार्य संदीप जी 'व्याकरण-दर्शनाचार्य'** वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़, से इस रचना की प्रेरणा प्राप्त हुई तदर्थ उनको हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

श्री नफे सिंह जी (प्रधानाचार्य), **डॉ० नेहा रावत** 'वैज्ञानिक'(CSIR-NAL, Bengaluru), **श्री सौरभ जी** 'वैज्ञानिक' (DRDO) द्वारा सम्मति प्रदान करने के लिए हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ। पुस्तक को 'वैज्ञानिक प्रामाणिकता' के साथ लिखने का विचार देने के लिये **डॉ० मनीष आर्य**, महासचिव- 'राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति परिषद्' का भी मैं विनीत भाव से धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

विनीत:
धर्मवीर 'मुमुक्षु'

वैशाख पूर्णिमा, वि. सं. २०७४

(10 मई 2017)

बाल शिक्षा

॥ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमयेति ॥ शतपथ ब्रा०॥

हे परमगुरु ईश्वर ! आप हमको असत्यमार्ग से छुड़ाके सत्यमार्ग, अविद्यान्धकार से छुड़ाके विद्यारूप सूर्य, मृत्यु से छुड़ाके आनन्दामृत प्राप्त कराइए ।

प्र. 1 शिक्षा किसे कहते हैं?
उ० जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मता, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको **'शिक्षा'** कहते हैं।

प्र. 2 विद्या किसे कहते हैं?
उ० प्रकृति से लेकर परमात्मा तक सब विषयों को जानकर उनसे लाभ लेना **'विद्या'** कहलाती है।

प्र. 3 नैतिक शिक्षा किसे कहते हैं?
उ० जिसमें मानवता सिखाई जाए, जैसे-ईमानदारी, राष्ट्रभक्ति, न्याय, दया, ब्रह्मचर्यादि, इसे **'नैतिक शिक्षा'** कहते हैं।

प्र. 4 अविद्या किसे कहते हैं?
उ० विपरीतज्ञान को **'अविद्या'** कहते हैं,जैसे-सुखदायी विद्या प्राप्ति में कष्ट व दुखदायी व्यसनों में सुख समझना आदि।

प्र. 5 सभ्यता किसे कहते हैं?
उ० जिस व्यवहार को सत्पुरुष श्रेष्ठ मानते हैं, वह **'सभ्यता'** है, जैसे-सच बोलना, मधुर बोलना, सेवा करना आदि।

प्र. 6 धर्मात्मता किसे कहते हैं?
उ० आत्मा को न्याय-दयादि गुणों से युक्त करना **'धर्मात्मता'** है।

प्र. 7 जितेन्द्रियता किसे कहते हैं?
उ० सुख-दु:ख,निंदा-स्तुति,लाभ-हानि में समता **'जितेन्द्रियता'** है।

प्र. 8 मनुष्य ज्ञानवान कब होता है?
उ० जब तीन उत्तम शिक्षक हों।

प्र. 9 तीन उत्तम शिक्षक कौन हैं?
उ० 1. माता 2. पिता 3. आचार्य = शिक्षक। (1)

प्र. 10 गुरु किसे कहते हैं?
उ० माता-पिता व ज्ञानदाता को ही **'गुरु'** कहते हैं।

प्र. 11 माता ही सर्वोत्तम गुरु क्यों है?
उ० संतानहित की भावना व प्रेम सर्वाधिक होने से।

प्र. 12 क्या भूत-प्रेतों से डरना ठीक है?
उ० नहीं, भूत-प्रेत नामक कोई चेतन प्राणी नहीं होता।

प्र. 13 झाड-फूंक से रोग ठीक होते हैं?
उ० नहीं, ये विज्ञान विरुद्ध, अंधविश्वास व छल-कपट है।

प्र. 14 छल-कपट किसे कहते हैं?
उ० दूसरों को धोखा देकर स्वार्थ सिद्ध करना **'छल-कपट'** है।

प्र. 15 क्या जन्मकुंडली सच होती है?
उ० नहीं, जन्मकुंडली में लिखी बातें झूठी होती हैं।

प्र. 16 क्या ज्योतिष शास्त्र झूठा है?
उ० नहीं, गणित ज्योतिष पूर्णसत्य, फलित ज्योतिष झूठ है।

प्र. 17 क्या राहु, केतु, शनि दुख देते हैं?
उ० नहीं, ये एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम हैं।

प्र. 18 राहु किसे कहते हैं?
उ० दुष्टों से छुड़ाने वाले ईश्वर को ही **'राहु'** कहते हैं।

प्र. 19 केतु किसे कहते हैं?
उ० सबके आधार व दु:खनाशक ईश्वर को **'केतु'** कहते हैं।

प्र. 20 जन्मकुंडली झूठी होती है, इसे सिद्ध कीजिए?
उ० उदा0 जैसे-एक ही समय में जन्में अनेक बच्चों का ज्ञान, बल, सुख-दु:ख व भोग एकसा नहीं होता।

प्र. 21 क्या गंडे, ताबीज, लॉकेट पहनने, पशुओं की बलि चढ़ाने से दु:ख-दरिद्रता मिटती है?
उ० नहीं, अपितु इससे लोग और अधिक वहमी, कायर, हिंसक, दरिद्र व अंधविश्वासी बन जाते हैं।

मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद ॥ श०ब्रा०॥

(1) **"वस्तुत: जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य! वह संतान बड़ा भाग्यवान! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से संतानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता संतानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए (मातृमान्) अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान्' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे'**
महान दार्शनिक, विज्ञानवेत्ता, शिक्षाविद् 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' कृत 'सत्यार्थ प्रकाश' द्वितीय समु०

प्र. 22 संस्कार किसे कहते हैं? **उ०** सब दुष्ट गुण-कर्म-स्वभावों से आत्मा, बुद्धि, मन और शरीर को हटाकर शुभ गुण-कर्म-स्वभावों को धारण करना और कराना **'संस्कार'** कहलाता है। (1)

प्र. 23 माता-पिता अपनी संतानों को कैसा उपदेश करें ?

उ० निम्नोक्त उपदेश करें कि जिससे वे सदाचारी, विद्यावान, धार्मिक, ईश्वरभक्त व राष्ट्रभक्त बनें।

क. सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः ॥ तैत्तिरियोपनिषद् ११.१॥

सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय में प्रमाद (उपेक्षा) मत करो।

ख. मातृदेवो भव! पितृ देवो भव! आचार्य देवो भव ॥ तैत्तिरियोपनिषद् ११.२॥

माता को देवी समझो! पिता को देव जानो! आचार्य 'शिक्षक' को देवता स्वरूप समझो।

ग. प्रत्यक्षं च परोक्षं च परेषाम् आचरेत्प्रियम्।

सामने व पीठ पीछे दूसरों को प्रिय लगने वाला आचरण करना चाहिए।

घ. आचारो हन्ति अलक्षणम् ॥ मनुस्मृति ४.१५६॥

सदाचार मनुष्य के समस्त दोषों और दुर्गुणों को नष्ट कर देता है।

ङ. कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥ ऋग्वेद ६.६३.५॥

सम्पूर्ण विश्व को 'श्रेष्ठ' बनाओ।

च. वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः ॥ यजुर्वेद ९।२३॥

हम राष्ट्र में जागरूक व अग्रगण्य हों ।

छ. इदं राष्ट्रमकरः सुनृतावत् ॥ अथर्व० १३.१.२०, अर्चन्ननु स्वराज्यम् !! ऋग्वेद १.८०.७ ॥

इस राष्ट्र को सत्यवादी बनाओं । स्वराज्य की पूजा करो ।

ज. दुष्प्रणीतेन मनसादुष्प्रणीततरा कृतिः ॥ महाभारत॥

मन में दुर्विचार आने से मनुष्य के कर्म भी दुष्ट हो जाते हैं।

झ. ब्रह्मारम्भे अवसाने च पादौ ग्राह्यौगुरोः सदा॥ मनुस्मृति॥

विद्यारम्भ और समाप्ति पर सदैव शिक्षकों के चरणस्पर्श करने चाहिए।

ञ. अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, संभ्रातरो वावृधुः सौभगाय ॥ ऋग्वेद ५.६०.५ ॥

हममें से कोई छोटा-बड़ा नहीं है, हम सब भाई-भाई हैं, हम सब मिलकर समृद्धिहित काम करें।

ट. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ॥ हितोपदेश॥

परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं मन्नत मांगने से नहीं।

ठ. कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः॥ अथर्व० ७.५०.८॥

मेरे दाएँ हाथ में परिश्रम है तो बाएँ हाथ में विजय है।

ड. आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ॥ नीतिशतक ॥

आलस्य मनुष्य के शरीर में रहने वाला महानशत्रु है।

ढ़. सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्। ॥ व्यवहारभानु ॥

सुख चैन के इच्छुक को विद्या कहाँ, और विद्यार्थी को सुख-चैन कहाँ ।

ण. न विद्यया विना सौख्यं नराणां जायते ध्रुवम्। ॥ व्यवहारभानु ॥

बिना विद्या के किसी भी मनुष्य को स्थाई सुख नहीं हो सकता।

त. विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ यजुर्वेद ४०.१४ ॥

यथार्थज्ञान से पूर्णानन्द परमेश्वर की प्राप्ति होती है।

(1) **''संस्कार घर तथा विद्यालय में ही आत्मसात् किये जा सकते हैं।''**

'भारत के महामहिम राष्ट्रपति' विश्वविख्यात् वैज्ञानिक, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

अध्ययन-अध्यापन

प्र. 1 शिक्षक किसे कहते हैं?
उ० जो श्रेष्ठ आचरण को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ा देवे, उसको **'आचार्य'** या **'शिक्षक'** कहते हैं।

प्र. 2 विद्यार्थी किसे कहते हैं?
उ० जो विद्याप्राप्ति का इच्छुक व गुरु का आज्ञाकारी हो।

प्र. 3 विद्यार्थियों का परमधर्म क्या है?
उ० अपनी विद्या व शरीर का बल बढ़ाते रहना।

प्र. 4 पूर्वकाल में लोग कहां पढ़ते थे?
उ० वैदिक गुरुकुलों में। (1)

प्र. 5 गुरुकुल शिक्षा प्रणाली क्या है?
उ० घर से दूर **'गुरु आश्रम'** में रहकर पढ़ना-पढ़ाना।

प्र. 6 गुरुकुल प्रणाली के क्या लाभ हैं?
उ० समय व धन की बचत, उच्च जीवन निर्माण।

प्र. 7 मनुष्य कैसे सुशोभित होता है?
उ० विद्या, सुशिक्षा, सुसंस्कार आदि उत्तम गुणों से।

प्र. 8 विद्या ही सर्वश्रेष्ठ धन क्यों है?
उ० क्योंकि विद्या से सर्वोत्तम सुख मिलता है।

प्र. 9 विद्या की उन्नति कैसे होती है?
उ० सीखी हुई विद्या अन्यों को पढ़ाने व सिखाने से।

प्र. 10 श्रेष्ठ विद्यार्थी के क्या गुण हैं?
उ० आज्ञाकारी होना, अनुशासन व विद्या प्रिय होना।

प्र. 11 क्या स्त्री शिक्षा आवश्यक है?
उ० हाँ, स्त्री ही तो सर्वप्रथम शिक्षक है।

प्र. 12 साक्षर व्यक्ति किसे कहते हैं?
उ० जो पढ़ना- लिखना जानता हो, उसे **'साक्षर'** कहते हैं।

प्र. 13 शिक्षित व्यक्ति किसे कहते हैं?
उ० जिसकी पढ़ी विद्या व आचरण एक हो वह **'शिक्षित'** है।

प्र. 14 शिक्षितजन की क्या पहचान है?
उ० शिक्षितजन धार्मिक, चरित्रवान व जितेन्द्रिय होता है।

प्र. 15 सम्पूर्ण सुख किसे मिलता हैं?
उ० जो विद्या पढ़कर धर्माचरण करता है।

प्र. 16 असफल कौन होता है?
उ० असावधान, निर्बल, निराश व नास्तिक व्यक्ति।

प्र. 17 सफल कौन होता हैं?
उ० सावधान, स्वस्थ, दृढ़प्रतिज्ञ व आस्तिक व्यक्ति।

प्र. 18 किनका अनुकरण करना चाहिए?
उ० सच्चे विद्वान, महापुरुष व देशभक्तों का।

प्र. 19 विद्यार्थियों के परम शत्रु क्या हैं?
उ० आलस्य, अभिमान, दुर्व्यसन व कुसंगति।

प्र. 20 आदर्श व्यक्तित्व कैसे बनता है?
उ० श्रद्धा, नम्रता, शिष्टता, सरलता व कृतज्ञता से।

प्र. 21 आयु, विद्या, यश, बल कैसे बढ़ते हैं?
उ० माता-पिता, विद्वानों की सेवा व आज्ञापालन से।

प्र. 22 पढ़ाई का श्रेष्ठ फल कब मिलता है?
उ० मन को सब ओर से हटा केवल पढ़ाई में लगाते हैं तब।

प्र. 23 वैदिक गुरुकुलों में शिक्षा व्यवस्था कैसी होती है?
उ० 1. विद्यालय नगर से दूर शांत, एकांत में होते हैं। 2. विद्यार्थी (ब्रह्मचारी) संयमी व तपस्वी होते हैं। 3. लड़के-लड़कियों के विद्यालय अलग-अलग होते हैं। 4.सबकी सुविधाएं एक समान होती हैं।

प्र. 24 वर्तमान वैदिक गुरुकुलों में कौन-कौन से विषय पढ़ाए जाते हैं?
उ० वेद, व्याकरण, आयुर्वेद, योग, विज्ञान, गणित, राजनीति, इतिहास, अर्थशास्त्र, कम्प्यूटर आदि।

प्र. 25 सहशिक्षा में हमें दूसरी लड़कियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?
उ० जैसा पवित्र व्यवहार हम दूसरों से अपनी बहन के प्रति चाहते हैं, वैसा।

प्र. 26 क्या प्रसिद्ध महापुरुष भी गुरुकुलों में पढ़े हैं?
उ० हाँ, श्री राम, श्री कृष्ण, महात्मा बुद्ध, आचार्य चाणक्य, महर्षि दयानन्द आदि गुरुकुलों में पढ़े हैं।

प्र. 27 हमें अपने शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?
उ० श्रद्धायुक्त मधुर व्यवहार, जिससे वे प्रसन्न होकर हमें अधिक से अधिक विद्या सिखा सकें।

प्र. 28 माता-पिता व अध्यापकों को परम संतोष कब होता है?
उ० जब वे अपने शिष्य और संतानों को विद्या, सभ्यता आदि गुणों से परिपूर्ण देखते हैं तब।

(1)**''प्राचीन शिक्षण व्यवस्था गुरुकुल आधारित थी, इसमें मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली पर बल दिया जाता था । उन दिनों गुरु-शिष्य के मध्य एक प्रकार का आत्मीय सम्बंध हुआ करता था ।''**
विश्वविख्यात् वैज्ञानिक, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

प्र. 29 सबके लिए विद्या का सर्वाधिक महत्व क्यों है?

उ० क्योंकि विद्या ग्रहण करके ही मनुष्य सद्व्यवहार का ज्ञान व सुख-शांति प्राप्त कर सकते हैं।

प्र. 30 बिना पढ़े पास कर देना ठीक है? **उ०** नहीं, ये अन्याय और अपराध है।

प्र. 31 क्या ये छात्रों पर दया नहीं है? **उ०** नहीं, विद्या से वंचित रखके आगे धकेलना **'निर्दयता'** है।

प्र. 32 उत्तम शिक्षक के क्या गुण हैं? **उ०** उत्तम शिक्षक विद्वान, तपस्वी व सदाचारी होता है।

प्र. 33 विद्या किस प्रकार से आती है? **उ०** विद्या चार प्रकार से आती है:-

(क) आगम काल अर्थात् शिक्षक से एकाग्र होकर शब्द और अर्थों का ग्रहण करना।

(ख) स्वाध्याय काल अर्थात् पढ़े हुए शब्द व अर्थों को एकान्त में दृढ़ (पक्का) करना।

(ग) प्रवचन काल अर्थात् पढ़ी व समझी हुई विद्या को दूसरों को पढ़ाना।

(घ) व्यवहार काल अर्थात् जैसा पढ़ा, समझा व पढ़ाया वैसा ही आचरण करना ।

प्र. 34 क्या हम भी शिक्षक बन सकते हैं?

उ० हाँ, कठोर परिश्रम व सही मार्गदर्शन से आप शिक्षक बन सकते हैं।

प्र. 35 शिक्षक का परमधर्म क्या है? **उ०** जैसे-सूर्य जगत को अंधकार से मुक्त कर देता है, वैसे ही अपने ज्ञान से राष्ट्र को अज्ञान और अविद्या से मुक्त कराना शिक्षक का **'परमधर्म'** है।

प्र. 36 शिक्षक को कैसे कर्म नहीं करने चाहिए?

उ० शिक्षक कोई भी ऐसा अधर्मयुक्त कर्म या चेष्टा न करे जिससे विद्यार्थी भी चरित्रहीन हो जाएं।

प्र. 37 क्या गुरु 'शिक्षक' ईश्वर से भी महान होता है?

उ० नहीं, ईश्वर से महान् तो कोई नहीं होता। गुरु ईश्वर से छोटा व अन्यों से महान होता है।

प्र. 38 शिक्षक किस प्रकार से विद्यार्थियों को शिक्षा दें?

उ० शिक्षक एकाग्रता के साथ विद्यार्थियों को सुशिक्षा प्रदान करें जिससे उनकी विद्या में रुचि बढ़े।

प्र. 39 पढ़ेंगे तो भी मरेंगे न पढ़ें तो भी मरेंगे, फिर पढ़ने की क्या आवश्यकता है?

उ० खाओगे तो भी मरोगे, न खाओगे तो भी मरोगे, फिर खाने की क्या आवश्यकता है? अर्थात पढ़ें अवश्य।

प्र. 40 शिक्षक व शिष्यों के मध्य कैसे सम्बंध होने चाहिए?

उ० शिष्य माता-पिता के तुल्य अपने शिक्षकों को और शिक्षक स्वसंतानवत् शिष्यों को समझें।

प्र. 41 शिक्षकों का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

उ० शरीर में जो स्थान बुद्धि का है, हमारे जीवन में वही पवित्र स्थान उत्तम शिक्षकों का होता है।

प्र. 42 किन के संतान व शिष्य विद्वान, गुणवान और सुशिक्षित होते हैं?

उ० उन माता-पिता व शिक्षकों के जो पढ़ाने में लाड़ कभी नहीं करते।

प्र. 43 शिक्षकों द्वारा छात्रों को दण्ड देने से मना किया हुआ है, क्या ये सही है?

उ० नहीं, शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को सभ्य और शिक्षित बनाने हेतु दिये जाने वाले दण्ड से रोकना अन्याय है। परन्तु शिक्षक ऐसा दण्ड कभी भी न दें जिससे उनकी शारीरिक व बौद्धिक हानि हो।[1]

प्र. 44 दण्ड की क्या आवश्यकता है? **उ० 'दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं है'** यह नियम है।

[1] **''जो माता पिता और आचार्य, संतान और शिष्यों का ताड़न करते हैं, वे जानो अपने संतान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो संतानों और शिष्यों का लाड़न (लाड़) करते हैं वे अपने संतानों तथा शिष्यों को विष पिला के नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं क्योंकि लाड़न से संतान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं।''... सन्तान और शिष्य लोग भी ताड़ना से प्रसन्न और लाड़न से अप्रसन्न सदा रहा करें। परन्तु माता-पिता तथा अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भय प्रदान और भीतर से कृपा दृष्टि रखें।''**

महान दार्शनिक व शिक्षाविद् - महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत 'सत्यार्थ प्रकाश'

प्र. 45 कठोर दण्ड मिलने पर क्या करें ? **उ०** अपने प्रधानाचार्य जी या प्रधानाचार्या जी को बताएं।

प्र. 46 दण्ड मिलने पर क्या सोचना चाहिए?

उ० शांत मन से यही सोचें कि 'यह दण्ड हमारे सुधार और विद्यावृद्धि के लिए दिया गया है।'

प्र. 47 क्या हम अपने दोषों का दण्ड स्वयं ले सकते हैं?

उ० हाँ, माता-पिता, गुरुजनों व अधिकारियों को अपना दोष बताकर हम उनसे स्वयं दण्ड ले सकते हैं।

प्र. 48 दण्ड कौन दे सकता है?

उ० बच्चों को घर में माता-पिता, विद्यालय में शिक्षकजन व अन्यत्र अधिकारी दण्ड दे सकते हैं।

प्र. 49 माता-पिता हमें दण्ड दे सकते हैं तो क्या शिक्षक दण्ड नहीं दे सकते? **उ०** दे सकते हैं, लेकिन नीतिनिर्माता नहीं जानते कि शिक्षकों के लिए शिष्य भी पुत्र-पुत्री के तुल्य होते हैं।

प्र. 50 विद्याप्राप्ति का मुख्य प्रयोजन क्या है? **उ०** पुरुषार्थ अर्थात् मनुष्य जीवन का मुख्य प्रयोजन - **धर्म** = कर्त्तव्यपालन, **अर्थ** = धनार्जन, **काम** = भौतिक आवश्यकता पूर्ति, **मोक्ष** = पूर्ण दु:ख निवृत्ति है।

प्र. 51 विद्या पढ़ने व धर्माचरण में किसका मूल्य अधिक है ? **उ०** धर्माचरण का ।

प्र. 52 विद्यार्थी व युवा ही परिवार व राष्ट्र का भविष्य हैं, ऐसा क्यों कहते हैं?

उ० इसलिए कि परिवार व राष्ट्र का उत्थान-पतन युवकों पर ही निर्भर है। युवावर्ग यदि अपने कर्त्तव्यों को परमधर्म समझकर उच्च चरित्रवान होगा, तो ही परिवार व देश आगे बढ़ेगा अन्यथा नहीं।

प्र. 53 परीक्षा में आशानुकूल अंक न मिलने से कई विद्यार्थी आत्महत्या क्यों कर लेते हैं ?

उ० क्योंकि उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य नहीं जाना, न ही माता-पिता समझा पाते, इसीलिए दबाव में ऐसा कर जाते हैं। शिक्षा आत्महत्या नहीं अपितु असफलताओं को सफलता में बदलना सिखाती है। (1)

प्र. 54 यदि परीक्षा में असफल हो जाएं या कम अंक प्राप्त हों तो क्या सोचें?

उ० ये सोचें कि क्या कमी रह गई। क्योंकि 'एक असफलता हमारी सौ भूलों से परिचय कराती है।'

प्र. 55 विद्यार्थी व गुरुजनों के बीच पूर्वकाल जैसी गुरुभक्ति व आत्मीयता के अभाव का क्या कारण है?

उ० 1. शिक्षा का व्यवसायीकरण 2. शिक्षा का अंग्रेजीकरण 3. धार्मिक व नैतिक शिक्षा की उपेक्षा।

प्र. 56 क्या कॉलेज व विश्वविद्यालयों में भी शिक्षक दण्ड दे सकते हैं?

उ० हाँ, जो विद्या का यश जानते हैं वे दण्ड देने व लेने से नहीं डरते। ये हमारी सभ्यता व संस्कृति है।

प्र. 57 विद्यार्थी हिंसक होते जा रहे हैं, इसका क्या कारण है?

उ० 1. नैतिक शिक्षा का अभाव 2. आलस्य, अभिमान 3. नशा 4. कुसंगति के कारण।

प्र. 58 माता-पिता का हमको पढ़ाना, पालन-पोषण करना 'कर्त्तव्य' है या 'अहसान'?

उ० 'कर्त्तव्य', और इसी में माता-पिता के हमारे लिए समस्त उपकार आ जाते हैं।

प्र. 59 क्या माता-पिता व गुरुजनों की समस्त बातें माननी चाहिए?

उ० माता-पिता व गुरुजनों की सत्य, न्यायसंगत, धर्मयुक्त बातें माननी चाहिए। (2)

(1) **''प्राप्तांक किसी विषय विशेष में मात्र ज्ञान के सूचक भर हैं, चरित्र की गुणवत्ता के मापक तो बिलकुल नहीं। एक आदर्श नागरिक बनने में अच्छे अंको के साथ अच्छे नैतिक मूल्य तथा आचरण का मिश्रण आवश्यक है।''**

विश्वविख्यात् महान वैज्ञानिक '' भारत रत्न'' डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

(2) **यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।। तैत्ति0 11.2**

माता-पिता, आचार्य अपने संतान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि जो-जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उन-उन का ग्रहण करो जो-जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग कर दिया करो।... यही माता-पिता का कर्त्तव्य कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपनी संतानों को तन-मन-धन से विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।

महान दार्शनिक व शिक्षाविद् - महर्षि दयानन्द सरस्वती

युवा शिक्षा-ब्रह्मचर्योपदेश

प्र. 1 जी, पूर्वोक्त 'विद्या व शारीरिक बल' बढ़ाने में सहायक साधन कौन सा है?

उ० विद्या व शारीरिक बल बढ़ाने का सर्वोत्तम साधन है **'ब्रह्मचर्य'** ।

प्र. 2 ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है? उ० हमारे शरीर में रस,रक्त,मांस,मेद,अस्थि,मज्जा,शुक्र (रज/वीर्य) सात धातुएं हैं। शुक्र धातु खाए गए आहार का निचोड़ है। यही हमारे जीवन को चलाती है। इस अमूल्य धातु की रक्षा करना ही **'ब्रह्मचर्य'** है और ब्रह्मचर्यपूर्वक खूब विद्या पढ़ना **'ब्रह्मचर्याश्रम'** है।

प्र. 3 इस अमूल्य धातु की रक्षा कैसे की जा सकती है?

उ० शुद्ध सात्विक आहार, श्रेष्ठ ग्रंथ व महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ना तथा व्यायाम द्वारा छात्र-छात्राएं इस अमूल्य धातु-ब्रह्मचर्य की रक्षा कर महान जीवन की आधारशिला रख सकते हैं।

प्र. 4 जी, ब्रह्मचर्य नाश के कारण बताइये?

उ० 1.तीखा भोजन, मांसाहार, चाय-कॉफी, नशा सेवन। 2.गंदे चित्र, मित्र व स्त्री-पुरुषों का संग। 3.देर से सोना व प्रातः देर से उठना, अपवित्रता। 4. योगाभ्यास, व्यायाम-परिश्रम न करना।

प्र. 5 ब्रह्मचर्य नाश से क्या हानि है? उ० बल, बुद्धि, स्मरणशक्ति व स्वास्थ्य का नाश होता है।

प्र. 6 ब्रह्मचर्य रक्षा के क्या लाभ हैं? उ० बल, बुद्धि, स्मृति, उत्साह व दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

प्र. 7 जी, ब्रह्मचर्य रक्षा से अनजान हम फिर से स्वास्थ्य, बल, बुद्धि कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

उ० ब्रह्मचर्य नाश के कारणों के त्याग से आप शीघ्र ही बल-बुद्धि व स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। (1)

प्र. 8 ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन कब तक करना चाहिए?

उ० जब तक विद्या पूर्ण होके विवाह योग्य आयु न हो जाए, तब तक।

प्र. 9 क्या विवाह करना आवश्यक है? उ० नहीं, असंख्य महापुरुषों ने जनकल्याणार्थ विवाह नहीं किया।

प्र. 10 बिन विवाह साथ-साथ रह सकते हैं? उ० नहीं, ये स्त्री-पुरुषों से भिन्न प्राणियों का धर्म है।

(1) **॥ ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत ॥ अथर्ववेद 11.5.19 ॥**

। ब्रह्मचर्यरूपी तप द्वारा विद्वानों ने मृत्यु को मार भगाया ।

ब्रह्मचर्य साधना बालक-बालिका दोनों के लिए ही आवश्यक है। जीवन का एक छोर **'बाल्यावस्था'** है, मध्य भाग **'युवावस्था'** है और दूसरा छोर **'वृद्धावस्था'** है। **'बाल्यावस्था'** माता-पिता के सहारे, **'युवावस्था'** अपने बल पर तथा **'वृद्धावस्था'** दूसरों के सहारे बितानी होती है। जो बालक विद्याहीन होकर अपनी **'जवानी'** को दुष्कर्मों-दुर्व्यसनों में बिताते हैं, उनकी जवानी बुढ़ापे जैसी होकर भयानक कष्ट पैदा करती है।

ब्रह्मचर्यहीन का जीवन भी ज्ञान, बल, सुख-शांति व स्मृद्धिहीन हो जाता है।

विद्यार्थियों को प्रातः-सायं ईश्वर के गुणों का ध्यान व अपने दोषों का निरीक्षण अवश्य ही करना चाहिए। कभी कोई दुष्कर्म या दुर्विचार मन में आ जाए तो प्रायश्चित करें व अपने भले के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें और पुनः गलती न करने का संकल्प करें। कभी निराश न हो, ईश्वर को परम सहायक मानें, महापुरुषों को आदर्श बनाएं, सत्पुरुषों का संग करें, कुसंगति से दूर रहें तो जीवन की दिशा व दशा बदलकर विद्यार्थी महान सुख, शांति व समृद्धि प्राप्त कर लेता है।

शंका :- डॉक्टर तो कहते हैं ब्रह्मचर्य नाश से कोई हानि नहीं होती, ऐसा क्यों?

समाधान :- कुछ डॉक्टरों को ब्रह्मचर्य नाश से होने वाले गुप्तरोगों से मोटी कमाई होती है। लड़के-लड़कियां छुपकर डॉक्टरों-वैद्यों के पास जाते हैं। यदि वे इसकी हानियां बताएंगे, समझाएंगे तो गुप्तरोग होंगे ही नहीं। तब उनका व्यापार कैसे फले-फूलेगा? ब्रह्मचर्य रक्षा के लाभ और विनाश से हानि तो विद्वान माता-पिता व शिक्षक ही बताते हैं।

आहार गुण-दोष

प्र. 1 आहार किसे कहते हैं?
उ० जो पदार्थ खाए जाने पर बल, बुद्धि, आयु और स्वास्थ्य की वृद्धि करे, उसे **'आहार'** कहते हैं।

प्र. 2 स्वास्थ्य का आधार क्या है?
उ० 1. शुद्धाहार 2. निद्रा 3. ब्रह्मचर्य।

प्र. 3 आहार कितने प्रकार का होता है?
उ० तीन-क्रमशः सात्विक, राजसिक, तामसिक।

प्र. 4 तीनों आहारों के क्या गुण हैं?
उ० क्रमश : सुखदायी, दुःखदायी, बुद्धिनाशक।

प्र. 5 आहार कैसा होना चाहिए?
उ० सात्विक, शाकाहारी, पौष्टिक, ऋतु अनुकूल ।

प्र. 6 सात्विकाहार कैसा होता है?
उ० अन्न, शाक, फल, मेवा, घी, दूध आदि बुद्धिवर्धक।

प्र. 7 राजसिकाहार कैसा होता है?
उ० भारी, तीखा, मसालेदार, चटपटा एवं बाजारु खाना।

प्र. 8 तामसिकाहार कैसा होता है?
उ० दुर्गंधयुक्त, अपवित्र, हिंसा व छल-कपट से प्राप्त।

प्र. 9 भोजन का ज्ञान कैसे होता है?
उ० आयुर्वेद के ग्रंथों से।

प्र. 10 व्यायाम के क्या लाभ हैं?
उ० व्यायाम से शरीर सुंदर, सुडौल व बलिष्ठ होता है।

प्र. 11 शीघ्र जागरण के क्या लाभ हैं?
उ० बुद्धि, स्मृति व स्वास्थ्य की वृद्धि होती है।

प्र. 12 निद्रा किसे कहते हैं?
उ० इन्द्रियों के थककर विश्राम करने को **'निद्रा'** कहते हैं।

प्र. 13 अनिद्रा के क्या कारण हैं?
उ० रोग, चिंता, भय, लोभ व तनाव।

प्र. 14 विद्यार्थी का आहार कैसा हो?
उ० सात्विक, पौष्टिक व बुद्धिवर्धक होना चाहिए।

प्र. 15 समय पर किया गया पौष्टिक आहार भी प्रायः लाभ क्यों नहीं करता?
उ० रोग, शोक, भय, चिंता, अनिद्रा के कारण पौष्टिक आहार भी लाभ नहीं करता।

प्र. 16 भोजन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उ० भोजन बैठकर, शांत व मौन होकर करें, ठीक से चबाएं, मात्रापूर्वक लें, बेमेल भोजन न करें। (1)

प्र. 17 बेमेल भोजन किसे कहते हैं?
उ० जो एक साथ खाने से रोगी बनाते हैं, जैसे-दूध-दही, खीर-रायता, दूध-अचार, ठंडा-गर्म आदि।

प्र. 18 वे कौन सी छोटी-छोटी भूलें हैं जो हमें रोगी बना देती हैं?
उ० भूख-प्यास, नींद, छींक, जम्हाई, डकार, गैस, मल-मूत्रादि वेगों को रोकना रोगी बनाता है।

प्र. 19 भोजनोपरांत तुरंत जल पीने से क्या हानि होती है?
उ० दमा, गठिया, मोटापा, मन्दाग्नि, कब्ज, आलस्य आदि रोग होते हैं।

प्र. 20 स्वस्थ व्यक्ति की क्या पहचान होती है?
उ० जो व्यक्ति अपनी आयु के अनुसार सब कार्य प्रसन्नतापूर्वक कर ले, उसे **'स्वस्थ'** कहते हैं।

प्र. 21 अतिथि भोजन कर रहा हो तो बार-बार पूछना या जबरदस्ती करना क्या उचित है?
उ० नहीं, सभ्यता से एक बार पूछना शिष्टाचार है, बार-बार पूछना अत्याचार है। अत्याचार न करें।

प्र. 22 क्या एक साथ एक ही थाली या प्लेट में खाने से प्रेम बढ़ता है?
उ० नहीं, एक साथ थाली या प्लेट में खाने से कई भयंकर रोग बढ़ते हैं; प्रेम नहीं बढ़ता।

(1) **''मात्रायुक्त आहार का यह लक्षण है कि भोजन का पेट पर पीड़ाजनक दबाव न पड़े, हृदय की गति में रुकावट न हो, दोनों पार्श्वों (पासुओं) में फटने जैसी पीड़ा न हो, पेट में अधिक भारीपन न हो, इन्द्रियां तृप्त हो जाए, भूख और प्यास शांत हो जाए, खड़ा होने, बैठने, सोने, चलने, श्वास लेने व छोड़ने, हंसने व बात करने में सुख का अनुभव हो, प्रातः और सायंकाल सुख से भोजन पच जाए और भोजन से शरीर में बल, रूप और मांस की वृद्धि हो। यह मात्रा पूर्वक सेवन किये गये आहार की पहचान है।'' चरक संहिता, विमान०, अ० 2 सूत्र 6**

प्र. 23 भोजन का प्रयोग किस प्रकार करना चाहिए?
उ० भोजन को दवाई समझकर खाएं, वर्ना जीवन भर दवाईयां भोजन समझकर खानी पड़ेगी।

प्र. 24 व्रत व उपवास किसे कहते हैं?
उ० अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्यादि के ग्रहण का संकल्प लेकर पालन करना **'व्रत'** कहलाता है।
रोगादि की अवस्था में आहार त्याग कर जलादि का सेवन करना **'उपवास'** कहलाता है।

प्र. 25 व्यसन किसे कहते हैं?
उ० शरीर, बल, बुद्धि व चरित्र को नष्ट करने वाली आदतें **'व्यसन'** कहलाती हैं।

प्र. 26 शरीर, बल, बुद्धि व चरित्र को नष्ट करने वाले व्यसन कौन से हैं?
उ० बीयर, शराब, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक्स, चाय, सिगरेट, तम्बाकू, जुआ, चोरी आदि का सेवन। (1)

प्र. 27 क्या प्रमाण है कि ये आदतें हानिकारक हैं?
उ० शराब, मांस आदि राक्षसों व पिशाचों का आहार है।। वेद, मनुस्मृति ।।
गांजा, भांग, शराब, मांस-मछली सेवनकर्ता के जप-तप, व्रत व्यर्थ हैं। ।।गुरुग्रंथ साहिब।।

प्र. 28 क्या अण्डा भी मांसाहार है? **उ०** हाँ, यह जीवित मुर्गी का गर्भ होता है।

प्र. 29 शाकाहार किसे कहते हैं? **उ०** अन्न, फल, मेवा, शाक-सब्जी व दुग्ध पदार्थों को।

प्र. 30 मांस खाने में क्या दोष है? **उ०** मांसाहारी अल्पायु, रोगी व हिंसक हो जाता है।

प्र. 31 शुद्धाहार का क्या गुण है? **उ०** शुद्धाहार से बुद्धि शुद्ध व स्मृति तेज होती है।

प्र. 32 शाकाहार और मनुष्य का क्या सम्बन्ध है?
उ० शाकाहार मनुष्य का सच्चा आहार है, दवाई की दवाई स्वास्थ्य का आधार है।(2)

प्र. 33 क्या कोल्ड ड्रिंक्स भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं?
उ० हाँ, सभी कोल्ड ड्रिंक्स में अनेक प्रकार के घातक रसायन पाए जाते हैं।

प्र. 34 चाय, कॉफी, कोल्ड ड्रिंक्स से क्या हानि है?
उ० 1. आंत, दांत व नेत्रों की कमजोरी 2. कब्ज, मधुमेह, मूत्रदोष 3. स्नायुदुर्बलतादि रोग होते हैं।

प्र. 35 मांसाहारी प्राणियों में शक्ति अधिक होती है या शाकाहारियों में?
उ० शाकाहारियों में, जैसे-हाथी, घोड़ा, ऊंट, गैंडा व बैल आदि।

प्र. 36 मांसाहारी व शाकाहारी प्राणियों में क्या अंतर है?

उ० मांसाहारी (कुत्ता, बिल्ली, शेर आदि)	**शाकाहारी** (गाय, घोड़ा, हाथी आदि)
क. इनके दांत, पंजे तेज नुकीले होते हैं।	क. इनके दांत, पैर तेज नुकीले नहीं होते हैं।
ख. जन्म के समय आँखें बन्द होती हैं।	ख. जन्म के समय आँखें खुली होती हैं।
ग. भूख में अपने बच्चों को खा जाते हैं।	ग. भूखे मर जाते हैं पर मांस कभी नहीं खाते।
घ. चाटकर पानी पीते व भोजन निगलते हैं।	घ. मुँह से पानी पीते व भोजन चबाते हैं।
ड़. पसीना नहीं आता, रात में देख लेते हैं।	ड़. पसीना आता है, रात में देख नहीं सकते।

प्र. 37 जीवहत्या का पाप किस मनुष्य को लगता है? **उ०** निम्न आठ जनों को :-
1. मांसाहार समर्थक। 2. मारने वाला। 3. काटने वाला। 4. बेचने वाला। 5. खरीदने वाला। 6. पकाने वाला। 7. परोसने वाला। 8. खाने वाला। ये आठ हिंसक हैं।

प्र. 38 क्या इन आठ जनों के अतिरिक्त भी किसी को हिंसा का दोष लग सकता है?
उ० हाँ, वर्तमान में आधुनिक जीवनशैली के इच्छुक 99% लोग हिंसा के दोषी हो सकते हैं।

(1) **चाय, कॉफी, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थ बच्चों में काम वासना भड़काते हैं। – डॉ. जैक्सन**
सिगरेट में 4 हजार कैमिकल व 50 प्रकार के जानलेवा जहर होते हैं। – मैडिकल साईंस

(2) **''शाकाहार का हमारी प्रकृति (स्वभाव) पर गहरा प्रभाव पड़ता है यदि दुनियां शाकाहार को अपना ले तो इंसान का भाग्य पलट सकता है।''**
–विश्वविख्यात् वैज्ञानिक एल्बर्ट आइंसटाईन

मांसाहार से हृदय रोग, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, आंत व स्तन कैंसर, गुर्दे फेल होते हैं। – विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)

प्र. 39 हिंसा किसे कहते हैं? **उ०** स्वार्थ के लिए जीवों को दु:ख देना **'हिंसा'** होती है।

प्र. 40 हिंसक को क्या दु:ख मिलता है? **उ०** हिंसक दुखी, अल्पायु व नरकगामी होता है।

प्र. 41 अहिंसक को क्या सुख होता है? **उ०** अहिंसक सुखी, स्वस्थ व स्वर्गगामी होता है।

प्र. 42 लोग मांसाहार क्यों करते हैं? **उ०** स्वाद, शक्ति व मांस बढ़ाने के विचार से।

प्र. 43 क्या शाकाहार शक्ति व पौष्टिकता में मांसाहार का मुकाबला कर सकता है?

उ० हाँ, शक्ति व पौष्टिकता में शाकाहार मांसाहार से कई गुणा श्रेष्ठ व सस्ता है। प्रति 100 ग्राम-
शाकाहार में - प्रोटीन 43 चिकनाई 98 कैल्शियम 9 लौह 10 केलोरीज 900% है।
मांसाहार में - प्रोटीन 23 चिकनाई 13 कैल्शियम 0.2 लौह 02 केलोरीज 400% है।

प्र. 44 फल-सब्जियों में भी जीवन होता है, फिर इन्हे खाने में हिंसा व पाप क्यों नहीं? **उ०** क्योंकि-
1. इन्हें दु:ख नहीं होता। 2.शाकाहार में किसी का विरोध नहीं। 3.शास्त्रानुसार ये मांसाहार नहीं।
4. इन्हें खाने की ईश्वराज्ञा है। 5. ये शाकाहारियों और मनुष्यों का स्वाभाविक आहार है।

प्र. 45 पेड़-पौधों को दु:ख क्यों नहीं होता? **उ०** क्योंकि ये बहुत गहरी बेहोशी में रहते हैं।

प्र. 46 यदि मांसाहार न करें तो पशुओं की संख्या बहुत बढ़ जाएगी, फिर ये हमें खाएगें तब?

उ० तब बढ़े हुए मांसाहारी शेरादि इन्हे नष्ट करेंगे और शाकाहारी जीव मनुष्यों को खाते नहीं।

प्र. 47 नशेड़ी व्यक्ति का जीवन स्तर कैसा होता है?

उ० नशेड़ी व्यक्ति अपनी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति कभी नहीं कर पाता।

प्र. 48 शराब व सिगरेट आदि नशों के सेवन का क्या कारण है?

उ० 1. झूठा दिखावा 2. अज्ञानता 3. कुसंगति 4. क्षणिक जोश व तनाव मुक्ति के लिए।।

प्र. 49 यदि मांसाहार न करें तो अन्न के अभाव में लोग भूखे नहीं मर जाएगें?

उ० नहीं, मांसाहार की अपेक्षा शाकाहार प्राप्ति अत्यन्त सरल व सस्ती है। (1)

प्र. 50 व्यसनों से बचने के क्या उपाय हैं? **उ०** निम्न उपाय हैं -
1. अमूल्य जीवन का महत्व समझें। 2.व्यसनों के दुष्परिणाम को सदा याद रखें।
3. व्यसनी, कपटी मित्रों से दूर रहें। 4. सभ्य व शिक्षित लोगों से मित्रता करें।

प्र. 51 शरीर की शुद्धि कैसे होती है? **उ०** स्नानादि से शरीर की बाहरी शुद्धि होती है।

प्र. 52 मन की शुद्धि कैसे होती है? **उ०** सत्य के आचरण से।

प्र. 53 बुद्धि की शुद्धि कैसे होती है? **उ०** सत्य ज्ञान से।

प्र. 54 भाग्य किसे कहते हैं? **उ०** पूर्वकृत कर्मों का फल ही **'भाग्य'** कहलाता है।

प्र. 55 पुरुषार्थ किसे कहते हैं? **उ०** आत्मकल्याणार्थ किए जाने वाले शुभ कर्मों को।

प्र. 56 भाग्य बड़ा है या पुरुषार्थ? **उ०** पुरुषार्थ, क्योंकि पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता है।

प्र. 57 क्या भाग्य भरोसे बैठना उचित है? **उ०** नहीं, क्योंकि भाग्य में दु:ख भी हो सकता है।

मांसाहार के महादोष

1. मांसाहार ईश्वर प्राप्ति में बाधक है। 2. मांसाहार महापाप है। 3. मांसाहार पशुत्व लाता है। 4.मांसाहार शास्त्र निन्दित है। 5. मांसाहार घोर निर्दयता है। 6. मांसाहार मानवीय प्रकृति विरूद्ध है। 7. मांसाहार मानव की अनधिकार चेष्टा है। 8.मांसाहार योगाभ्यास का विरोधी है।

(1) जितने प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग मांस उत्पादन में किया जाता है उससे आधे संसाधनों का प्रयोग यदि कृषि उत्पादन में किया जाए तो मांस से दोगुना शाकाहार प्राप्त किया जा सकता है। अमेरिका में 66% अनाज व सोयाबीन (मांस के लिए) पशुओं को खिला दिया जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार दुनिया की मांस की खपत में मात्र 10% की कटौती प्रतिदिन भुखमरी से मरने वाले 18 हजार बच्चों व 6 हजार व्यस्कों का जीवन बचा सकती है। (दैनिक जागरण 29 अगस्त 2009)

वर्ण - आश्रम

प्र. 1 वर्ण किसे कहते हैं?
उ० जो व्यवसाय अपने गुणों से अर्जित किया जाए ,उसे **'वर्ण'** कहते हैं, जैसे-अध्यापन, रक्षा, व्यापार, श्रमसेवा आदि

प्र. 2 आश्रम किसे कहते हैं?
उ० जिसमें निरंतर परिश्रम करके गुणों को ग्रहण किया जाए, उसे **'आश्रम'** कहते हैं, जैसे-ब्रह्मचर्याश्रम में खूब विद्या पढ़ना।

प्र. 3 वर्ण कितने हैं?
उ० चार-क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

प्र. 4 आश्रम कितने हैं?
उ० चार-क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम।

प्र. 5 वर्ण व्यवस्था क्या है?
उ० योग्यता के आधार पर व्यवसायों का वर्गीकरण करना।

प्र. 6 ब्राह्मणादि जन्म से होते हैं?
उ० नहीं, गुण-कर्म-स्वभावों के ग्रहण से होते हैं।

प्र. 7 ब्राह्मण किसे कहते हैं?
उ० जो विद्या पढ़ने-पढ़ाने का कर्म करे, वह **'ब्राह्मण'** है।

प्र. 8 क्षत्रिय किसे कहते हैं?
उ० जो प्रजा का पालन व रक्षा करे, उसे **'क्षत्रिय'** कहते हैं।

प्र. 9 वैश्य किसे कहते हैं?
उ० जो कृषि-व्यापार आदि कर्म करे, उसे **'वैश्य'** कहते हैं।

प्र. 10 शूद्र किसे कहते हैं?
उ० मजदूर-सेवकादि श्रमजीवी व्यक्ति को **'शूद्र'** कहते हैं।

प्र. 11 क्या शूद्र अछूत होता है?
उ० नहीं, शूद्र समाज व राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है।

प्र. 12 शूद्र ब्राह्मण बन सकता है?
उ० हाँ, बन सकता है और असंख्य बने भी हैं। (1)

प्र. 13 गृहस्थ के अधिकारी कौन हैं?
उ० धार्मिक, शिक्षित, स्वस्थ व सदाचारी युवक-युवतियाँ।

प्र. 14 विवाह का क्या आधार है ?
उ० स्त्री-पुरुष के अनुकूल गुण-कर्म-स्वभाव का मेल होना।

प्र. 15 घरों में तनाव क्यों होता है?
उ० संवेदनहीनता, मतभिन्नता, निर्धनता व स्वार्थ के कारण।

प्र. 16 घर में शांति के उपाय क्या हैं?
उ० वाणी की मधुरता, परस्पर संवेदना, कर्त्तव्यपरायणता।

प्र. 17 निंदा किसे कहते हैं?
उ० अच्छे को बुरा व बुरे को अच्छा कहना **'निंदा'** है।

प्र. 18 श्राद्ध किसे कहते हैं?
उ० श्रद्धापूर्वक माता-पिता आदि की सेवा करना **'श्राद्ध'** है।

प्र. 19 तर्पण किसे कहते हैं?
उ० माता-पिता आदि को सदा प्रसन्न (तृप्त) रखना **'तर्पण'** है।

प्र. 20 पितर किसे कहते हैं?
उ० पालने वाले, रक्षा करने वाले, ज्ञानदाता ही **'पितर'** हैं।

प्र. 21 गृहस्थ का परमधर्म क्या है?
उ० प्रतिदिन प्रातः-सायं **'पञ्चमहायज्ञ'** करना।

प्र. 22 क्या मनुस्मृति में वर्णित वर्ण व्यवस्था से भेदभाव पैदा नहीं होता?
उ० नहीं, उदा. जैसे-एक शूद्र (मजदूर) की चार संतानों में तीन पढ़कर शिक्षक, सैनिक, व्यापारी बन गई व चौथी अनपढ़ गँवार ही रही। तो ये शूद्र पिता की संतानें ही क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र हुई। लेकिन जन्मकुल के कारण अन्य तीनों को भी शूद्र (मजदूर) मानना अत्याचार है।

प्र. 23 जात-पात अथवा छुआछूत का क्या अर्थ है?
उ० व्यक्ति के गुणों को छोड़ जन्मकुल को देखकर ऊंच-नीच का बर्ताव करना **'जात-पात'** कहलाती है।

प्र. 24 जात-पात अर्थात् छुआछूत की दूषित परम्परा समाज में किसने चलाई?
उ० वेदों को ठीक से न जानने वाले कुछ अविद्वान लोगों ने।

प्र. 25 क्या भारत के अतिरिक्त देशों में भी वर्ण व्यवस्था है?
उ० हाँ, ये समाज का, संसार का आधार है, जैसे-शिक्षक, रक्षक, व्यापारी व श्रमजीवी वर्ग।

शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम्। क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥ मनुस्मृति ॥

(1) **''जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण, कर्म, स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र-ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाए, वैसे ही ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण, कर्म, स्वभाव शूद्र के समान हो तो वह शूद्र हो जाए।''**

प्र. 26 क्या मृत माता-पिता आदि पितरों का भी श्राद्ध व तर्पण होता है?

उ० नहीं, मृतजनों का सेवा-सत्काररूपी 'श्राद्ध' व 'तर्पण' संभव नहीं हो सकता। (1)

प्र. 27 प्रतिदिन करने योग्य 'पञ्चमहायज्ञ' कौन से हैं?

उ० 1. **ब्रह्मयज्ञ**=ईश्वर की संध्योपासना 2. **देवयज्ञ**=हवन करना 3. **पितृयज्ञ** = माता-पिता की सेवा 4. **बलिवैश्वदेवयज्ञ** =जीवों की रक्षा करना 5. **अतिथियज्ञ** = विद्वानों की सेवा कर ज्ञान लेना।

प्र. 28 गृहस्थाश्रम में स्त्री को अधिक सम्मान देने की बात क्यों होती है?

उ० क्योंकि **''स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ''** ऋग्. 8.33.19, अर्थात् 'स्त्री ही पारिवारिक आचार शिक्षिका है।' (2)

प्र. 29 स्त्री को अबला (असहाय) क्यों कहते हैं ?

उ० ये झूठे ग्रंथों की देन है; वेद में स्त्री को साम्राज्ञी, तेजस्विनी, विजयिनी कहा है। (3)

प्र. 30 स्त्री ही प्रथम शिक्षिका है तो फिर प्रतिदिन कन्या-भ्रूण हत्याएं क्यों होती हैं?

उ० 1. पुरुष से वंशवृद्धि 2. दहेज प्रथा 3. सामाजिक असुरक्षा 4. अविद्या के कारण।

प्र. 31 क्या शास्त्रों में भ्रूणहत्या के दोषी को दंड देने का अधिकार है?

उ० हाँ, अथर्ववेद 8.6.25 में 'गर्भ का नाश करने वाले का समाज से नाश कर देना चाहिए ।'

प्र. 32 क्या पर्दाप्रथा से स्त्रियों के सम्मान की रक्षा होती है?

उ० नहीं, स्त्रियों की रक्षा तो उनके चरित्र से होती है; पर्दाप्रथा तो गुलामी की सूचक है।

प्र. 33 पुत्र किसे कहते हैं? उ० दुःखों से बचाने वाली संतान को **'पुत्र'** कहते हैं।

प्र. 34 वानप्रस्थ का क्या अर्थ है? उ० एकांत या वन में जाकर स्वाध्याय-योगाभ्यास करना।

प्र. 35 वानप्रस्थ कब लेते हैं? उ० परिवार के प्रति अपने कर्त्तव्य पूरे हो जाने के बाद।

प्र. 36 संन्यास कब ग्रहण करते हैं? उ० ब्रह्मचर्याश्रम या वानप्रस्थाश्रम के पश्चात्।

प्र. 37 संन्यास का हक किसे है? उ० पूर्ण वैराग्यवान विद्वान को।

प्र. 38 वैराग्य किसे कहते हैं? उ० सुख-संपत्तियों के भोगों में अनिच्छा को **'वैराग्य'** कहते हैं।

प्र. 39 संन्यास किसे कहते हैं? उ० पूर्णवैराग्य होने पर ईश्वराज्ञा पालन करने को **'संन्यास'** कहते हैं।

प्र. 40 संन्यास का उद्देश्य क्या है? उ० मोक्ष अर्थात् परमानन्द परमेश्वर की प्राप्ति।

प्र. 41 संन्यासी के क्या कर्म हैं? उ० सत्योपदेश, पाखंडनिवारण और वेदों का प्रचार करना।

प्र. 42 पंडित किसे कहते हैं? उ० सत्यासत्य के ज्ञाता, धार्मिक, विद्वान को **'पंडित'** कहते हैं।

प्र. 43 हमारे देश में लाखों साधु-संन्यासी, धर्मगुरु हैं फिर भी पाखंड-अधर्म क्यों बढ़ रहा है?

उ० अधिकांश साधु-संन्यासी व धर्मगुरुओं में समाज सुधार की इच्छा व योग्यता न होने के कारण।

प्र. 44 कुछ सच्चे संन्यासियों के नाम बताइये।

उ० महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दयानन्द गिरी, स्वामी सत्यपति परिव्राजक आदि।

प्र. 45 'परिव्राजक' किसे कहते हैं?

उ० जो संन्यासी सर्वत्र घूम-घूमकर वेदोक्त सत्योपदेश व शंका-समाधान करे, उसे **'परिव्राजक'** कहते हैं।

(1) **'पितृ' शब्द से सबके रक्षक श्रेष्ठ स्वभाव वाले ज्ञानियों का ग्रहण होता है। मनुष्यों को ज्ञान चक्षु देकर उनके अविद्या रूपी अंधकार के नाश करने वाले हैं, उनको 'पितर' कहते है।। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका।।**

प्रजनार्थं महाभागाः, पूजार्हा गृहदीप्तयः। स्त्रियःश्रियश्च गेहेषु, न विशेषोऽस्ति कश्चन ॥ मनुस्मृति 9.26॥

(2) **''उत्तम संतानों को जन्म देने हेतु जिसका निर्माण हुआ है, ऐसी महान भाग्यशालिनी, पूजनीया और घर की शोभा कहलाने वाली जो स्त्रियाँ हैं, वे ही असली लक्ष्मियाँ हैं, स्त्रियों और लक्ष्मियों में कोई अंतर नहीं है।''**

(3) **उताहमस्मि संजया ॥ ऋग्० 10.159.3 ॥** **''मैं विजयिनी स्त्री हूँ।''**

प्रति तिष्ठ विराडसि ॥अथर्ववेद 14.2.15॥ **''नारी तेजस्विनी के रूप में प्रतिष्ठित हो।''**

राजधर्म

प्र. 1 राजधर्म किसे कहते हैं? उ० प्रजा के प्रति राजा के कर्त्तव्यों को **'राजधर्म'** कहते हैं।

प्र. 2 राजधर्म के उदाहरण दीजिए। उ० प्रजापालन, दुष्टों को दण्ड, निष्पक्ष न्याय करना आदि।

प्र. 3 राज कौन कर सकता है? उ० पराक्रमी, न्यायप्रिय, सदाचारी, देशभक्त **'क्षत्रिय'**।

प्र. 4 राजसभा के सदस्य कैसे हों? उ० धार्मिकजन जो दण्डनीति और न्यायनीति के ज्ञाता हों।

प्र. 5 न्याय किसे कहते हैं? उ० कर्मानुसार यथायोग्य फल देने को **'न्याय'** कहते हैं।

प्र. 6 अन्याय किसे कहते हैं? उ० पक्षपातपूर्ण व्यवहार व फल देने को **'अन्याय'** कहते हैं।

प्र. 7 मंत्री किन्हे बनाएं? उ० स्वदेशोत्पन्न, विशेषज्ञ विद्वान व धार्मिक व्यक्तियों को।

प्र. 8 राजा का परमधर्म क्या है? उ० प्रजापालन व राष्ट्रहित **'राजा का परमधर्म'** है।

प्र. 9 राजदूत किसे बनाएं? उ० निर्भीक, नि:स्वार्थी, कुशलवक्ता को।

प्र. 10 किनसे शत्रुता नहीं करें? उ० बुद्धिमान, कुलीन, शूरवीर, धैर्यवान व्यक्ति से।

प्र. 11 दया किसे कहते हैं? उ० परपीड़ा दूर करने की इच्छा को **'दया'** कहते हैं।

प्र. 12 राजा के परमशत्रु क्या हैं? उ० व्यसन-व्यभिचार, अन्याय, अज्ञान व पक्षपात।

प्र. 13 सभा में किनको नियुक्त करें? उ० विद्यावान, चरित्रवान, धार्मिक व्यक्तियों को।

प्र. 14 सर्वोत्तम राज्य कौन सा है? उ० **'स्वराज्य'** जो सर्वोपरि सुखदायी होता है।

प्र. 15 स्वराज्य किसे कहते हैं? उ० स्व=अपना, राज्य=राज अर्थात् स्वाधीन राज्य। (1)

प्र. 16 राष्ट्रीय एकता के सूत्र क्या हैं? उ० एक भाषा, एक मत (विचार), एक संविधान।

प्र. 17 राष्ट्र में धर्म व न्याय की स्थापना का मंत्र क्या है? उ० कठोर दण्ड व्यवस्था। (2)

प्र. 18 न्यायधीश द्वारा बलात्कारी, हत्यारों को फांसी देना हिंसा है या अहिंसा?

उ० जो न्याय है, वह अहिंसा है और बलात्कारी, देशद्रोही, आतंकी को फांसी देना **'अहिंसा'** है।

प्र. 19 जब कोई जीवन दे नहीं सकता तो उसे जीवन लेने का अधिकार कैसे हो सकता, ये अन्याय नहीं?

उ० नहीं, क्या बलात्कारी, आतंकी जीवन लेकर वापस कर देते हैं? नहीं ना । यदि कोई इस जीवन जीने के अधिकार को तोड़ेगा तब न्यायधीश का दण्डस्वरूप फांसी देना **'न्याय'** है, **'अहिंसा'** है।

प्र. 20 हमारा देश भ्रष्टाचार मुक्त कैसे हो सकता है?

उ० जब माता-पिता व शिक्षक घर और विद्यालयों में चरित्रवान नागरिकों का निर्माण करेंगे तब। (3)

प्र. 21 क्या 'जन्मभूमि' को माता के तुल्य सम्मान दिया जा सकता है?

उ० हाँ, **'माताभूमि:पुत्रोऽहं पृथिव्या:'**अथर्व012.1.12, **'ये भूमि हमारी माता है, हम इसके पुत्र हैं।'**

प्र. 22 राष्ट्र सशक्त कब बनता है?

उ० जब सब वर्ण-आश्रम, मत-पंथ-सम्प्रदाय एकजुट, एकमत होकर राष्ट्रहित कर्म करते हैं तब।

'' स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।''

यस्य ते नू चिदादिशं, न मिनन्ति स्वराज्यम्। न देवो नाधिगुर्जनः ॥ ऋग्वेद ८.९३.११॥

(1) **''ईश्वर तेरे आदेशरूप स्वराज्य को कोई कभी भी नहीं रोक सकता है। न देवता, न कोई अजेय शक्ति।''**

(2) **''कठोर सजा मिलेगी दोषियों को तभी समाज सुधरेगा । ..... जघन्य अपराध की सजा सिर्फ मौत है ।''**

'' सर्वोच्च न्यायालय, 5 मई 2017 ''

(3) **''एक आदर्श नागरिक बनने की शिक्षा घर से ही मिलती है। सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए एक व्यापक आन्दोलन की आवश्यकता है। यह आंदोलन अपने घर और विद्यालय से ही प्रारंभ करना होगा। भ्रष्टाचार उन्मूलन में मेरी दृष्टि में मात्र तीन प्रकार के लोग सहायक सिद्ध हो सकते हैं, वे हैं - माता-पिता और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक। यदि ये तीनों बच्चों को सच्चाई और ईमानदारी का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई इनको डिगा पाए।'' '' महान वैज्ञानिक-शिक्षाविद् डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ''**

प्र. 23 विदेशी शासक की निंदा क्यों की जाती है?

उ० इसलिए कि 'विदेशी शासक चाहे पिता तुल्य हो, तो भी उसकी नीयत सदा शोषण की रहती है।'

प्र. 24 क्या राजनीति का धर्म से कोई सम्बंध नहीं है?

उ० राजा के न्याय, रक्षा आदि धर्म को ही **'राजनीति'** कहते हैं, अतः राजनीति धर्म से अलग नहीं है।

प्र. 25 ''अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता'' का सही अर्थ क्या है?

उ० अभिव्यक्ति से पूर्व सोचो कि मेरे इस कथन से मुझ पर, परिवार पर, समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यदि सर्वहितकारी है तो अभिव्यक्त करो। ये **'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता'** का सही अर्थ है।

प्र. 26 सब मनुष्यों को किन कार्यों में परतंत्र रहना चाहिए?

उ० सब मनुष्यों को सामाजिक-सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए।

प्र. 27. धार्मिक राजनीतिज्ञ कौन-कौन हुए हैं? उ० श्री कृष्ण, महात्मा विदुर, आचार्य चाणक्य आदि।

प्र. 28 लोकप्रिय स्वदेशीय राजा कैसा होता है?

उ० 1. राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने वाला 2. जन सामान्य की भावनाओं को जानने वाला।

प्र. 29 क्या देश में अनेक सम्प्रदायों का होना अर्थात् 'अनेकता में एकता' हमारी विशेषता है?

उ० नहीं, अनेकता होती ही एकता की विरोधी है। अनेकता से विरोध बढ़ता है। (1)

प्र. 30 क्या अपने स्वतंत्र देश में हम स्वेच्छा से जैसे चाहें वैसे नहीं रह सकते?

उ० नहीं, हम अपनी शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक व राष्ट्रोन्नति में स्वतंत्र हैं, स्वेच्छा में नहीं।

प्र. 31 भारतीय संस्कृति कौन सी है? उ० प्राचीनतम '' **वैदिक संस्कृति**'' ।

प्र. 32 'संस्कृति' किसे कहते हैं? उ० निखरना या निखारना अर्थात् वह विद्या सुशिक्षा जनित व्यवहार पद्धति जो जीवन को निर्दोष व परम मांगलिक बना दे, उसे **'संस्कृति'** कहते हैं।

प्र. 33 हम अपनी संस्कृति की रक्षा कैसे कर सकते हैं?

उ० वेदादि सत्यशास्त्रों के अध्ययन, सत्पुरुषों के जीवन व सत्य इतिहास को धारण करके ।

प्र. 34 अपनी सभ्यता, शिक्षा व संस्कृति को भूलने या छोड़ने से क्या हानि होती है?

उ० अपनी व राष्ट्र की दुर्गति हो जाती है, जैसे-हम भूलकर सदियों गुलाम रहे थे ।

प्र. 35 आज हम किस शिक्षा व संस्कृति को धारण कर रहे हैं?

उ० संस्कारहीन पाश्चात्य - अंग्रेजी शिक्षा व संस्कृति को ।

प्र. 36 अंग्रेजी शिक्षा से तो दुनियां चाँद पर पहुंच गई, फिर उसकी निंदा क्यों?

उ० ये ठीक है, लेकिन धरती पर मनुष्य कैसे रहें, ये तो अंग्रेजी शिक्षा सिखाती ही नहीं। (2)

प्र. 37 हमारी शिक्षा व संस्कृति के गौरव क्या हैं?

उ० युग-युग के संचित संस्कार, ऋषि-मुनियों के उच्च विचार ।
धीरों वीरों के व्यवहार, हैं निज संस्कृति के शृंगार ।। ''राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त''

प्र. 38 हमारी इस प्राचीनतम परम मांगलिक 'वैदिक संस्कृति' की विकृति का क्या कारण है?

उ० हमारा वेद विरुद्ध आचरण, विदेशी अंग्रेजादि शासक और उनके कुछ चाटुकार भारतीय इतिहासकार। (3)

(1) ''एक समुदाय द्वारा विशेषाधिकारों की मांग दूसरे समुदाय को ऐसा ही करने के लिए प्रेरित करेगी, जिससे परस्पर संघर्ष व झगड़े ही बढ़ेंगे।'' ''उच्चतम न्यायालय, 18 अगस्त 2005''

(2) ''यदि हम पक्षपात रहित होकर भली-भान्ति परीक्षा करें तो हमको स्वीकार करना पड़ेगा कि हिन्दु (आर्य) ही सारे संसार के साहित्य, धर्म और सभ्यता के जन्मदाता हैं।''
'' अंग्रेजी विद्वान डब्ल्यू. डी. ब्राउन'' (18-2-1884 के ''डेली ट्रिब्यून'' नामक पत्र में)

(3) ''अंग्रेजी शिक्षा एक ऐसे वर्ग को शिक्षित करेगी जिसका रक्त और रंग तो भारतीयों का होगा किन्तु जो अपनी रूचि, सम्मति, आचार-व्यवहार और बुद्धि में अंग्रेज होंगे।''
- लार्ड मैकाले (भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के विनाशक)

ईश्वर

हमको अविद्यान्धकार से छुड़ाके विद्यारूप सूर्य प्राप्त कराने वाला परमगुरु ईश्वर है, कृपया बताइए-

प्र. 1 ईश्वर किसे कहते हैं?
उ० सर्वज्ञ, नियन्ता, चेतन सत्ता को **'ईश्वर'** कहते हैं।

प्र. 2 ईश्वर कहां रहता है?
उ० ईश्वर सर्वव्यापक अर्थात् सर्वत्र विद्यमान है।

प्र. 3 ईश्वर का आकार कैसा है?
उ० ईश्वर रूप, रंग, आकार से रहित **'निराकार'** है।

प्र. 4 ईश्वर क्या करता है?
उ० सृष्टि की रचना, व्यवस्था व प्रलयादि करता है।

प्र. 5 ईश्वर ने सृष्टि क्यों बनाई ?
उ० हमारी सुख-शांति व कर्मों का फल देने के लिए।

प्र. 6 निराकार भी कर्त्ता होता है?
उ० हाँ, कर्त्ता निराकार ही होता है, जैसे-जीवात्मा।

प्र. 7 ईश्वर अनंत सृष्टि कैसे रचता है?
उ० सर्वज्ञ, सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान होने से।

प्र. 8 ये सृष्टि किससे बनी है?
उ० **'प्रकृति'** अर्थात् सत्व, रज, तम नामक तीन पदार्थों से।

प्र. 9 संसार में कितने पदार्थ हैं?
उ० तीन - ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति।

प्र. 10 ईश्वर सर्वत्र है तो सृष्टि किसमें है?
उ० ईश्वर में, जैसे-निराकार आकाश में ब्रह्माण्ड।

प्र. 11 क्या ईश्वर भी एक पदार्थ है?
उ० हाँ,जिसमें गुण हो उसे **'वस्तु'** या **'पदार्थ'** कहते हैं।

प्र. 12 निराकार में भी गुण होते हैं?
उ० हाँ, जैसे-निराकार वायु में स्पर्श गुण होता है।

प्र. 13 ईश्वर में कौन से गुण हैं?
उ० ज्ञान, बल, क्रिया, न्याय, आनन्दादि अनंत गुण हैं।

प्र. 14 ईश्वर न्यायकारी कैसे है?
उ० सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व नि:स्वार्थी होने से।

प्र. 15 ईश्वर को चेतन क्यों कहते हैं?
उ० क्योंकि चेतन ही कर्त्ता और व्यवस्थापक होता है।

प्र. 16 ईश्वर को कौन बनाता है?
उ० कोई नहीं, ईश्वर जन्म-मरण से रहित **'अनादि'** है।

प्र. 17 'अनादि' किसे कहते हैं?
उ० जिसका उत्पत्ति-विनाश व कारण न हो।

प्र. 18 उत्पत्ति-विनाश किसका होता है?
उ० प्राकृतिक जड़ वस्तुओं का, जैसे-सूर्य, पृथ्वी, शरीरादि।

प्र. 19 जड़ व चेतन में क्या भेद है?

उ० **जड़ में**- 1.इच्छा, ज्ञान व प्रयत्न नहीं होता। **चेतन में**-1.इच्छा, ज्ञान व प्रयत्न होता है।
2.परिवर्तन बनना-बिगड़ना होता है। 2.परिवर्तन, बनना-बिगड़ना नहीं होता।
3.रूप, रंग, छोटा-बड़ा आकार होता है। 3.रूप, रंग, आकार नहीं होता है।

प्र. 20 जो आंखों से ही न दिखाई दे, ऐसी निराकार वस्तु ईश्वर को कैसे माना जा सकता है?
उ० सुख-दु:ख, शब्द, गुरुत्वाकर्षण बल, साफ्टवेयर निराकार हैं, फिर भी दुनियां मानती है। (1)

प्र. 21 बिना चेतन सत्ता ईश्वर के सृष्टि अपने आप क्यों नहीं बन सकती?
उ० क्योंकि सृष्टि रचना में नियम, क्रम, व्यवस्था है और जड़ पदार्थ स्वयं बन नहीं सकते, जैसे-घड़ी। अत: जहां भी नियम, क्रम, व्यवस्था होगी वहां चेतन सत्ता का अस्तित्व सिद्ध होगा ही।(2)

प्र. 22 अनेक विद्वान ईश्वर को ही नहीं मानते, ऐसा क्यों?
उ० वे लोग ईश्वर, आत्मा और प्रकृति के गुण, कर्म, स्वभाव को ठीक-ठीक नहीं जानते इसलिए।

(1) **''किसी ने भी प्रोटोन या इलैक्ट्रोन को देखा नहीं है, किंतु उसके प्रभाव को देखा है।''**
बेने यू. आल्ट (भूरसायनविद् रिसर्च फैलो, भूरासायनिक प्रयोगशाला वैली सेड्स, न्यूयार्क-अमेरिका)

(2) **'इस तरह का अनुमान, जिस पर किसी भी उपलब्ध ज्ञान के सहारे तर्कपूर्ण ढंग से प्रहार नहीं किया जा सकता, यह है कि 'कोई भी जड़ पदार्थ स्वयं अपने आपको उत्पन्न नहीं कर सकता।'**
जार्ज अर्ल डेविस (भौतिकविद् , मैटिरियल लैबोरेटरी में न्यूक्लिओनिक्स विभाग के अध्यक्ष)

प्र. 23 बिना हाथ-पैरों के निराकार ईश्वर संसार कैसे बना सकता है?

उ० जैसे-चुम्बक बिना हाथ-पैरों के लोहा खींच लेता है। सूर्य किरणें गति कर लेती हैं। विद्युत रेलगाड़ी चला देती है। वैसे ही निराकार ईश्वर बिना हाथ-पैरों के सृष्टि रच देता है।

प्र. 24 ईश्वर साकार क्यों नहीं है? **उ० साकार**-सर्वज्ञ, अजर-अमर नहीं होता, जैसे-मनुष्य।

प्र. 25 क्या सृष्टिकर्त्ता एक ही है? **उ०** हाँ, क्योंकि सृष्टि में सर्वत्र एक ही नियम, क्रम, व्यवस्था है।

प्र. 26 ईश्वर अनेक क्यों नहीं हैं? **उ०** सृष्टि रचनादि में सर्वत्र एकरूपता होने से ईश्वर अनेक नहीं।

प्र. 27 ईश्वर से हमारा क्या सम्बंध हैं? **उ०** ईश्वर हमारा माता-पिता, गुरु व राजा है।

प्र. 28 ईश्वर से क्या मांगना चाहिए? **उ०** विद्या, बल, बुद्धि व आनन्द मांगना चाहिए।

प्र. 29 ईश्वरानन्द कैसे मिलता है? **उ०** ईश्वर की शुद्ध स्तुति, प्रार्थना, उपासना करके।

प्र. 30 स्तुति, प्रार्थना, उपासना का क्या अर्थ है?

उ०
- ईश्वर के न्याय, बल, ज्ञानादि गुणों की प्रशंसा करना **'स्तुति'** कहलाती है।
- ईश्वर से विद्या, बल, बुद्धि व सहायता मांगना **'प्रार्थना'** कहलाती है।
- ईश्वर के ज्ञानादि गुणों को धारण करने का अभ्यास **'उपासना'** कहलाती है।

प्र. 31 ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना का विशेष फल क्या है?

उ०
- स्तुति से - ईश्वर के न्याय, दया आदि कल्याणकारी गुणों में प्रेम होना।
- प्रार्थना से - निरभिमानता, आत्मा में नम्रता, परिश्रम में प्रेम होना।
- उपासना से - ईश्वर के ज्ञान व आनन्द से परिपूर्ण हो जाना।

प्र. 32 क्या प्रार्थना से इच्छा पूर्ण होती है? **उ०** नहीं, प्रार्थना संग परिश्रम करने से इच्छा पूरी होती है।

प्र. 33 किन ग्रंथों में ईश्वर का वर्णन है? **उ०** वेद, उपनिषद् , दर्शनशास्त्र, मनुस्मृति में।

प्र. 34 ईश्वर सगुण है या निर्गुण? **उ०** ईश्वर सगुण व निर्गुण दोनों है।

प्र. 35 एक ही ईश्वर सगुण व निर्गुण दोनों कैसे हो सकता है?

उ०
- ईश्वर - सर्वज्ञ, दयालु, शुद्ध व पवित्र आदि गुणों के होने से **'सगुण'** है।
- ईश्वर - अज्ञान, अन्याय, राग-द्वेष, पक्षपातादि गुणों के न होने से **'निर्गुण'** है।

प्र. 36 ईश्वर का मुख्य नाम क्या है? **उ०** **'ओम्'** जिसे **'प्रणव'** व **'ओंकार'** भी कहते हैं।

प्र. 37 'ओम्' शब्द का क्या अर्थ है? **उ०** सर्वरक्षक।

प्र. 38 ईश्वर के कितने नाम हैं? **उ०** गुण, कर्म, स्वभाव अनुसार अनन्त नाम हैं।

प्र. 39 ईश्वर के कुछ नाम बताइये? **उ०** लक्ष्मी, महादेव, सरस्वती, पुरुष, भगवान आदि।

प्र. 40 क्या शिव, कृष्णादि ईश्वर हैं? **उ०** नहीं, ईश्वर एक अद्वितीय है।

प्र. 41 इनको भगवान क्यों कहते हैं? **उ०** बुद्धि, बलादि 'भग' अर्थात् ऐश्वर्य विशेष होने से।

प्र. 42 महादेवादि तो मनुष्यों के नाम हैं? **उ०** हैं, पर गुण-कर्मानुसार ईश्वर के भी हैं। (1)

प्र. 43 ईश्वर, महादेव, सरस्वती के क्या अर्थ हैं?

उ०
- जिसके ज्ञान, बल, सामर्थ्य के समान कोई दूसरा नहीं, उसे **'ईश्वर'** कहते हैं।
- जो देवों का देव और विद्वानों का विद्वान है, उस ईश्वर को ही **'महादेव'** कहते हैं।
- सृष्टि-ब्रह्माण्ड का पूर्ण ज्ञान जिसे हो, उस ईश्वर को ही **'सरस्वती'** कहते हैं।

(1)
- **जो समस्त जगत को देखता अर्थात् सृष्टिरचना करता है और जो धार्मिक विद्वान योगियों का लक्ष्य अर्थात् देखने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'लक्ष्मी' है।**
- **जो सब ऐश्वर्यों से पूर्ण और भजने योग्य है, इसलिए उस ईश्वर का नाम 'भगवान' है।**
- **जो सब जगत में परिपूर्ण हो रहा है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'पुरुष' है।**

प्र. 44 ईश्वर सर्वव्यापक है तो गन्दगी में अपवित्र होता है या नहीं?

उ० नहीं होता, जैसे-सूर्य की किरणें गंदगी में पड़ने पर भी अपवित्र नहीं होती।

प्र. 45 ईश्वर के मुख्य कर्म क्या हैं?

उ० 1. सृष्टिरचना 2. पालन करना 3. प्रलय करना 4. वेदज्ञान देना 5. जीवों के कर्मफल देना।

प्र. 46 क्या ब्रह्मा, विष्णु, शिव तीनों क्रमशः सृष्टि की रचना, पालन व प्रलय नहीं करते?

उ० नहीं, ये तीनों काम एक ही ईश्वर के करने से, उसी के ब्रह्मादि तीन नाम हैं, तीन लोगों के नहीं। जैसे-एक ही सुनार गहनें बनाता है, रक्षा करता है और पुराने गहनों को फिर गला देता है।

प्र. 47 स्वभाव किसे कहते हैं?

उ० जिसका सम्बंध वस्तु से कभी अलग न हो, जैसे-सूर्य से प्रकाश व गर्मी, इसे ही **'स्वभाव'** कहते हैं।

प्र. 48 ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का ज्ञान कैसे होता है?

उ० वेद व सृष्टिरचना को देखकर। (1)

प्र. 49 ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव कैसे हैं?

उ० ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।

प्र. 50 'सत् चित्' किसे कहते हैं? **उ०** जो सदा वर्तमान व ज्ञान स्वरूप हो।

प्र. 51 'निर्विकार' किसे कहते हैं? **उ०** जो परिवर्तन आदि से रहित हो।

प्र. 52 'अनुपम' किसे कहते हैं? **उ०** जिसके तुल्य अथवा बढ़के कोई न हो।

प्र. 53 'अजर-अमर' किसे कहते हैं? **उ०** जिसमें जन्म, बुढ़ापा व मृत्यु आदि न हो।

प्र. 54 'पवित्र' किसे कहते हैं? **उ०** जो राग, द्वेष, अज्ञान, अविद्या से शून्य हो।

प्र. 55 'सर्वान्तर्यामी' किसे कहते हैं? **उ०** जो समस्त जगत को नियंत्रण में रखता हो।

प्र. 56 'सर्वशक्तिमान' किसे कहते हैं? **उ०** जो अपने कार्य में किसी की भी सहायता न लेता हो।

(1) **'' हमारा तर्कसंगत निष्कर्ष यह है, जिससे बचा नहीं जा सकता, कि न केवल सृष्टि की रचना हुई है प्रत्युत किसी ऐसे पुरुष की इच्छा और योजना के अनुसार सृष्टि की रचना हुई जिसमें बुद्धि और ज्ञान की पराकाष्ठा थी (सर्वज्ञ) जिसमें अपनी योजना के अनुसार इसके रचने और इसे जारी रखने का सामर्थ्य था (सर्वशक्तिमान) और जो सर्वत्र और समस्त विश्व भर में इसे लागू कर सकता था (सर्वव्यापक) इसका अर्थ यह है बिना किसी संकोच के हम सर्वोच्च आत्मतत्व-ईश्वर, विश्व के 'रचयिता' और 'नियामक' (व्यवस्थापक) के अस्तित्व के तथ्य को स्वीकार करते हैं।**

प्रो० जान क्लीव लैण्ड कोथरान (गणितज्ञ , रसायनशास्त्री, मिनेसोटा विश्वविद्यालय, अमेरिका)

शंका :- ईश्वर दयालु है तो हमें पाप कर्म करने से रोकता क्यों नहीं ?

समाधान :- ईश्वर पाप कर्म करने से रोकता है। ''जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता व चोरी आदि बुरी व परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण आरम्भ करता है, उस समय जीव (मनुष्य) की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाते हैं। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं किंतु परमात्मा की ओर से है।'' यही भय, शंका और लज्जा उत्पन्न करना ईश्वर का पाप कर्म से रोकना कहा जाता है।

प्र. 57 जी,आपने कहा कि चेतन में रूप,आकार नहीं होता लेकिन गाय, मनुष्यादि चेतन में तो ये सब हैं ?

उ० रूप, रंग, आकारादि तो शरीरों के होते हैं, नित्य चेतन आत्मा तो आकार आदि से रहित है।

प्र. 58 नित्य पदार्थ किसे कहते हैं?

उ० जिन पदार्थों के निमित्त, उपादान व सामान्य कारण न हों, उन्हे **'नित्य पदार्थ'** कहते हैं।

प्र. 59 अनित्य पदार्थ किसे कहते हैं?

उ० जिन पदार्थों के निमित्त,उपादान,सामान्य कारण हों,उन्हे**'अनित्य पदार्थ'** कहते हैं, जैसे-घर, शरीर।

प्र. 60 संसार में कितने पदार्थ नित्य हैं?

उ० ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति, ये तीन पदार्थ **नित्य** हैं।

प्र. 61 जी, क्या ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य होते हैं?

उ० हाँ, पूर्वोक्त ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव नित्य हैं, जैसे-सूर्य में प्रकाश व उष्णता आदि।

प्र. 62 यदि ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव नित्य हैं तो उसके बनाये मनुष्यादि अनित्य क्यों हैं?

उ० इसलिए कि जो वस्तु बनाई जाती है वह अनित्य ही होती है चाहे कोई भी बनाये।

प्र. 63 ईश्वर दयालु है तो फिर दुष्ट मनुष्य और हिंसक शेर आदि क्यों बनाता है?

उ० क्योंकि जिस जीवात्मा के जैसे गुण कर्मादि होते हैं, ईश्वर उन्हे वैसा ही शरीर,बुद्धि दे देता है।

प्र. 64 नहीं, मेरे कहने का तात्पर्य है कि ईश्वर दुष्टों को जन्म ही क्यों देता है?

उ० ईश्वर स्वेच्छा से थोड़े ही बनाता है, कर्मानुसार फल देना तो उस न्यायकारी का स्वभाव है।

प्र. 65 लेकिन दुष्टों के पैदा होने से संसार में अशांति और आतंक नहीं फैलता क्या?

उ० फैलता तो है, पर उन्हे सुधारने के लिए प्रभु ने वेद में कठोर दण्ड विधान भी तो दिया है।

प्र. 66 मनुष्य पाप कर्म करता ही क्यों है?

उ० अपनी अज्ञान-अविद्या, अल्पज्ञता और स्वार्थपूर्ति के लिए।

प्र. 67 ईश्वर सर्वव्यापक-सर्वशक्तिमान है तो पाप कर्म करने ही क्यों देता है?

उ० क्योंकि मनुष्य चेतन होने से भले-बुरे कर्म करने में स्वतंत्र है, ईश्वराधीन नहीं है।

प्र. 68 तो फिर सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान, न्यायकारी होने का लाभ ही क्या हुआ?

उ० सर्वज्ञ होने से वह सब जान लेता है और उचित समय पर पुण्यात्माओं को उत्तम मनुष्य शरीर व पापात्माओं को कुत्ता, गधा आदि बना देता है। ये शक्ति केवल ईश्वर के पास ही है।

प्र. 69 क्या ईश्वर बिना कारण के शरीर, पृथ्वी, सूर्य आदि सृष्टि की रचना कर सकता है?

उ० नहीं, कारण के बिना कार्य कोई नहीं कर सकता, न ईश्वर, न ही जीवात्मा।

प्र. 70 जी, हम भी ईश्वर की भांति निराकार क्यों नहीं हैं?

उ० हम भी(आत्मा) निराकार ही हैं पर कर्मफलानुसार हमारा साकार जड़ शरीर ईश्वर बना देता है।

प्र. 71 जी, हम जीवात्मा बिना शरीर के कर्म क्यों नहीं कर सकते?

उ० जीवात्मा अतिसूक्ष्म, अल्पशक्ति, अल्पज्ञ हैं इसलिए शरीरादि साधनों बिना कर्म नहीं कर सकते।

प्र. 72 जी, क्या सच में ईश्वर हमारा परम पिता और माता है?

उ० हाँ है, तभी तो हमारे लिए अन्न,फल,दूध,जल,औषधियां और वेद विद्या देकर रक्षा व पालन करता है।

प्र. 73 जी, हमें पशु आदि नीच योनियों में जन्म न मिले इसका क्या उपाय है?

उ० न्यायपूर्वक कर्म करते हुए ईश्वर की स्तुतिप्रार्थनोपासना करना ही उपाय है। अर्थात्-

हे परमेश्वर! आप सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा न्यायकारी हैं। आपने ही हमें यह जीवन प्रदान किया है। आपके कारण ही हम विचारने, बोलने तथा कर्मों को करने में समर्थ हैं। प्रत्येक क्षण मन, वाणी और शरीर से किये जाने वाले समस्त कर्मों को आप जानते हैं। आप से छुप करके हम कोई भी काम नहीं कर सकते। आपकी अनुभूति हमारी बुद्धि में प्रत्येक क्षण बनी रहे जिससे हम बुरे कर्मों और उनके दु:खरूप फल से बचकर सुख शांति को प्राप्त करें, ऐसी आपसे प्रार्थना है।

वेद-धर्म

जी, पूर्वोक्त ईश्वर के गुण कर्म, स्वभाव का ज्ञान वेद से होता है, कृपया बताइए-

प्र. 1 वेद किसको कहते हैं? **उ०** ईश्वर के उपदेश को **'वेद'** कहते हैं।

प्र. 2 'वेद' शब्द का क्या अर्थ है? **उ०** वेद अर्थात् **'ज्ञान'**, वेद अर्थात् **'विद्या'** है।

प्र. 3 ईश्वर ने वेद ज्ञान कब दिया? **उ०** सृष्टि के प्रारंभ में मनुष्योत्पत्ति के साथ। (1)

प्र. 4 वेद कितने व कौन से हैं? **उ०** क्रमशः 4 - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

प्र. 5 क्रमशः वेदज्ञान किनको दिया? **उ०** अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा नामक 4 ऋषियों को।

प्र. 6 चार को ही वेदज्ञान क्यों दिया? **उ०** क्योंकि ये ही सबसे योग्य व पवित्रात्मा थे।

प्र. 7 वेद किस भाषा में हैं? **उ०** **'संस्कृत'** भाषा में।

प्र. 8 ऋषियों ने संस्कृत कैसे सीखी? **उ०** सर्वत्र विद्यमान ईश्वर के सिखाने से सीखी।

प्र. 9 वेदों में कौन सी विद्या है? **उ०** क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान।

प्र. 10 वेद विद्या किस रूप में है? **उ०** वेद विद्या **मंत्र** अर्थात् बीज रूप में है।

प्र. 11 वेदों में कुल कितने मंत्र हैं? **उ०** लगभग 20349 मंत्र हैं।

प्र. 12 वेदोत्पत्ति को कितना समय हुआ है? **उ०** लगभग 1,96,08,53,117 वर्ष।

प्र. 13 इतनी पुरानी गणना कैसे की गई? **उ०** प्रतिदिन के 'संकल्प पाठ' व ज्योतिष गणना से।

प्र. 14 हम तक वेदज्ञान कैसे पहुंचा? **उ०** प्रतिदिन के वेदपाठ व याद करने-कराने द्वारा।

प्र. 15 वर्तमान में वेद किस रूप में हैं? **उ०** ऋग्वेदादि चार पुस्तकों के रूप में।

प्र. 16 वेद का पठन-पाठन कहां होता है? **उ०** कुछ विश्वविद्यालय व गुरुकुलों में।

प्र. 17 पुराण कितने प्राचीन हैं? **उ०** लगभग 2400 वर्ष।

प्र. 18 बायबिल कितनी प्राचीन है? **उ०** लगभग 2000 वर्ष।

प्र. 19 कुरान कितनी प्राचीन है? **उ०** लगभग 1400 वर्ष।

प्र. 20 प्राचीनतम ग्रंथ कौन सा है? **उ०** ईश्वर का उपदेशग्रंथ **'वेद'**।

प्र. 21 वेद ही ईश्वरकृत ग्रंथ हैं, ये कैसे सिद्ध करोगे? **उ०** निम्न तर्क व प्रमाणों से :-

क. जैसा ईश्वर एक, सर्वज्ञ, न्यायकारी है वैसा ही वर्णन जिसमें हो, वह ग्रंथ **'ईश्वरकृत'**।

ख. जैसा ईश्वर निर्भ्रम है, वैसा ही निर्भ्रम ज्ञान जिसमें हो, वह ग्रंथ **'ईश्वरकृत'**। (2)

ग. जैसी सृष्टि रचना है वैसा ही स्पष्ट वर्णन जिसमें हो, वह ग्रंथ **'ईश्वरकृत'**।

घ. किसी मत-पंथ-सम्प्रदाय व भेदभाव का वर्णन जिसमें न हो, वह ग्रंथ **'ईश्वरकृत'**।

ड़. जो इतिहास शून्य और मनुष्योत्पत्ति संग 'संविधान' रूप में प्राप्त हो, वह ग्रंथ **'ईश्वरकृत'**। (3)

च. सब विद्याओं, भाषाओं और विज्ञान का मूल जिसमें हो, वह ग्रंथ **'ईश्वरकृत'**।

छ. सृष्टि का सदुपयोग और मोक्ष प्राप्ति का निर्भ्रांत ज्ञान जिसमें हो, वह ग्रंथ **'ईश्वरकृत'**। (4)

(1) **''यदि परमात्मा ने विशिष्ट आप्त पुरुषों के माध्यम से इतिहास के किसी समय विशेष में मानव मात्र को कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य (धर्म-अधर्म) के सम्बंध में ज्ञान या उपदेश दिया है तो भलाई और बुराई का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। तभी पाप से बचने को कर्त्तव्य (धर्म) बताया जा सकता है''**
प्रो० जान लियो ऐबरनेथी (गवेषणा और रसायनविद्, फ्रेस्नो स्टेट कालेज, कैलिफोर्निया)

(2) **''केवल सूक्ष्मदर्शी की अंतर्दृष्टि है, जो वेदों में भरे सूक्ष्म ज्ञान को प्रकट कर सकती है।''**
मैटर लिंक (नोबेल पुरस्कार विजेता सुप्रसिद्ध दार्शनिक)

(3) **''वेदों के उपदेश सरल, देश व जाति विशेष के इतिहास से रहित और सार्वभौम तथा उसमें ईश्वर विषयक युक्ति युक्त विचार दिए हैं।''** **थोरियो (अमेरिका के सुविख्यात् विद्वान)**

(4) **''ऋग्वेद मनुष्य मात्र की उच्च प्रगति और आदर्श की उच्चतम कल्पना है।''**
फ्रांस के सुविख्यात् विद्वान-लेओं देल्बो (अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य संघ में की गई घोषणा)

प्र. 22 मनुष्यमात्र का धर्म क्या है? उ० **'वैदिक धर्म'** अर्थात् ईश्वराज्ञा। (1)

प्र. 23 वेद ही विश्व धर्म क्यों है? उ० क्योंकि वेद ब्रह्मांड के परमशासक का संविधान है।(2)

प्र. 24 मनुष्य वेद रच सकते हैं? उ० नहीं, अल्पज्ञ मनुष्य वेद रचना नहीं कर सकते। (3)

प्र. 25 वेद पढ़ने का हक किसे है? उ० संसार के मनुष्यमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है।

प्र. 26 वेदों में संशोधन संभव है? उ० नहीं, वेद ईश्वरीय सार्वकालिक, निर्भ्रांत ज्ञान है।

प्र. 27 ईश्वर ने वेद ज्ञान क्यों दिया? उ० अविद्या के नाश के लिए,जैसे-अंधकार नाश हेतू सूर्य।

प्र. 28 संसार में कितने धर्म हैं? उ० एक,ईश्वराज्ञा **'वेद'** ,जैसे- संसार में विज्ञान,गणित एक है।

प्र. 29 अनेक मतों से क्या हानि है? उ० परस्पर विरोध व राष्ट्र का विघटन।

प्र. 30 धर्म किसे कहते हैं? उ० जो पक्षपात रहित, न्यायाचरण, सर्वहितकारी, सत्यभाषणादि ईश्वराज्ञा है, उसको **'धर्म'** कहते हैं।

प्र. 31 अधर्म किसे कहते हैं? उ० पाप, पक्षपात, अन्याय, हिंसा, असत्याचरणादि ईश्वराज्ञा भंग करने को **'अधर्म'** कहते हैं।

प्र. 32 धर्म के लक्षण कितने व कौन से हैं? उ० धर्म के 10 लक्षण हैं - धैर्य, क्षमा, दम, चोरी त्याग, पवित्रता, इन्द्रियनियंत्रण, बुद्धिवृद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध।

प्र. 33 धर्म का ज्ञान कैसे होता है? उ० वेद, ऋषिकृतग्रंथ और महापुरुषों के आचरण से।

प्र. 34 धर्म का आधार क्या है? उ० वेद और विज्ञान। (4)

प्र. 35 मत-पंथों का आधार क्या है? उ० मनुष्यों के अपने बनाए रीति-रिवाज व मान्यताएं।

प्र. 36 क्या मत-पंथ एक हो सकते हैं? उ० हाँ, सत्य के ग्रहण व असत्य के त्याग से ऐसा संभव है।

प्र. 37 मत-सम्प्रदाय क्यों बनते हैं? उ० अज्ञान, अविद्या, स्वार्थ व घटना विशेष के कारण।

प्र. 38 मत-सम्प्रदायों की निंदा ठीक है? उ० नहीं, लेकिन **'सत्यार्थ संवाद'** में दोष नहीं।

प्र. 39 सत्य का निर्णय कैसे होता है? उ० सत्य वह होता है जो - 1. वेदानुसार हो। 2. सृष्टि नियमानुसार हो। 3. आत्मानुकूल हो। 4. विद्वानों का कहा हो। 5. प्रमाण सिद्ध हो।

प्र. 40 क्या तिलक, कंठी-माला, दाढ़ी-मूंछ, टोपी-कपड़ों आदि चिह्नों से धर्म की पहचान नहीं होती है?

उ० नहीं, धर्म का सम्बंध पाप-पुण्य कर्मों से है विशेष चिह्न तो मत-सम्प्रदायों की पहचान हैं।

प्र. 41 क्या ईश्वरीय ज्ञान बदलता रहता है? उ० नहीं,इससे ईश्वर पक्षपाती, अज्ञानी व अन्यायी हो जायेगा।

(1) **''वैदिक धर्म केवल एक ईश्वर का प्रतिपादन करता है। यह एक पूर्णतया 'वैज्ञानिक धर्म' है, जहां धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। यहां धार्मिक सिद्धांत विज्ञान व फिलासफी आश्रित है।'' अंग्रेजी विद्वान् डब्ल्यू. डी. ब्राउन (The Superiority of the Vedic Religion में)**

(2) **''हाँ, मुझे ईश्वर में विश्वास है, जो केवल सर्वशक्तिमान देवता ही नहीं है.....अपितु वह ऐसा ईश्वर है, जिसको अपनी सृष्टि के सर्वोत्कृष्ट प्राणी, मनुष्य की चिंता भी है।''**

प्रो० सेसिल वोइस हैमान (जीव विज्ञानविद् अध्यक्ष-विज्ञान गणित विभाग, एस्बरी कालेज)

(3) **''यदि हमें निश्चित ज्ञान और आश्वासन प्राप्त करना हो तो वह सहायताहीन केवल तर्क के धुंधले प्रकाश में निर्बलतापूर्वक भटकते हुए मनुष्य के मन को प्राप्त नहीं हो सकता, किंतु सर्वज्ञ परमात्मा द्वारा मनुष्य के मन तक पहुंचाये ज्ञान से ही ऐसा होना संभव है।''**

सुप्रसिद्ध युरोपीय वैज्ञानिक डा० फ्लेमिंग (23-29 नवम्बर 1914 को Science Week में)

(4) **''कितनी आश्चर्यजनक सच्चाई है। हिन्दुओं 'आर्यों' का ईश्वरीय ज्ञान 'वेद' ही जो लोकों की मंद और क्रमिक रचना बताता है, सब ईश्वरीय ज्ञानों में से एक ऐसा है, जिसकी कल्पनाएं आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्ण रूप से मिलती हैं।'**

फ्रांस के सुविख्यात् विद्वान् , चीफ जस्टिस 'जैकोलियट' (बायबल इन इंडिया में)

सृष्टि विद्या

प्र. 1 सृष्टि किसे कहते हैं?
उ० अलग-अलग पदार्थों का बुद्धिपूर्वक मेल होकर अनेक रूप बनना **'सृष्टि'** या **'जगत'** कहलाता है।

प्र. 2 क्या शरीर भी सृष्टि है?
उ० हाँ, शरीर भी बुद्धिपूर्वक तत्त्वों के मेल से बना है।

प्र. 3 शरीर किन तत्त्वों से बना है?
उ० पञ्च तत्त्वों अर्थात् महाभूतों के मेल से।

प्र. 4 महाभूत किसे कहते हैं?
उ० पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु,आकाश ये पांच **'महाभूत'** हैं।

प्र. 5 महाभूत किससे बने हैं?
उ० जड़ प्रकृति से।

प्र. 6 महाभूत कौन बनाता है?
उ० सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर।

प्र. 7 संसार को प्रकृति क्यों कहते हैं?
उ० संसार का मूल कारण प्रकृति होने से।

प्र. 8 क्या प्रकृति का नाश होता है?
उ० नहीं, प्रकृति नित्य व अनादि है।

प्र. 9 बीज पहले हुआ था या वृक्ष?
उ० बीज, बीज अर्थात् कारण,जो सदा कार्य से पूर्व होता है।

प्र. 10 सृष्टि बनने में कितने कारण हैं?
उ० तीन-निमित्त कारण, उपादान कारण, सामान्य कारण।

प्र. 11 निमित्त कारण किसे कहते हैं?
उ० जिसके बनाने से कोई वस्तु बने, जैसे - हलवाई।

प्र. 12 उपादान कारण किसे कहते हैं?
उ० जिसके बिना कुछ न बने, जैसे-घी, सूजी, चीनी।

प्र. 13 सामान्य कारण किसे कहते हैं?
उ० जो वस्तु बनाने में सहायक हो, जैसे - कढ़ाई, कड़छी।

प्र. 14 सृष्टि का निमित्त कारण कौन है?
उ० निमित्त कारण-सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर है। (1)

प्र. 15 सृष्टि का उपादान कारण क्या है?
उ० उपादान कारण- सत्व,रज,तम अर्थात् प्रकृति है।

प्र. 16 सृष्टि का सामान्य कारण क्या है?
उ० सामान्य कारण- काल(समय), आकाश, दिशा है।

प्र. 17 सर्वप्रथम मनुष्योत्पत्ति कहां हुई?
उ० **'तिब्बत'** (प्राचीन भारतीय भूखंड) में।

प्र. 18 प्रथम मनुष्योत्पत्ति कैसे हुई?
उ० ईश्वर के पैदा करने से।

प्र. 19 आदिमानव किसे कहते हैं?
उ० सृष्टि के आदि-आरंभ में जन्में मनुष्यों को।

प्र. 20 सभ्यता के आदिजनक कौन थे?
उ० आर्य लोग (हिन्दु)।(2)

प्र. 21 आर्य किसे कहते हैं?
उ० श्रेष्ठ, विद्वान, आस्तिक व्यक्ति को।

प्र. 22 क्या आर्य बाहर से आए थे?
उ० नहीं, आर्य इसी भारत भूमि के आदि निवासी हैं।

प्र. 23 आर्यों की संस्कृति कौन सी है?
उ० **'वैदिक संस्कृति'**।

प्र. 24 आर्यों का आदि देश कौन सा है?
उ० आर्यावर्त (भारत)।

प्र. 25 हिन्दु (आर्यों) का धर्म क्या है?
उ० ईश्वरोक्त सत्य सनातन **'वैदिक धर्म'**।

प्र. 26 अनार्य किसे कहते हैं?
उ० अधार्मिक, पक्षपाती, दुराचारी, हिंसक, नास्तिक को।

प्र. 27 शूद्र आर्य है या अनार्य ?
उ० शूद्र व्यक्ति भी आर्य होता है।

---

(1) **'' एक महान प्रथम कारण, एक शाश्वत, सर्वज्ञ, और सर्वशक्तिमान सृष्टा (निर्माता) अवश्य होना चाहिए और यह सारा विश्व उसी की कारीगरी है..उस शक्ति का नाम ही 'परमात्मा' है।''**

प्रो० फ्रैंक ऐलन 'वैज्ञानिक' (मानिटोबा विश्वविद्यालय, कनाडा)

''वैज्ञानिक के रूप में मैं यह भी विश्वास करता हूँ कि ईश्वर का इस संसार पर स्थायी नियंत्रण है''

एमलर डबल्यू मौरेर (गवेषणा रसायनविद्, कृषि विभाग अमेरिका)

''....समस्त प्रकृति का नियंत्रणकर्ता परमात्मा है और वही इसको लगातार धारण करता है।''

प्रो० लीस्टर जौन जिमरमैन (मृदा, वनस्पतिक्रियाविज्ञानविद्, गोशेन कॉलेज)

(2) **''आर्यावर्त केवल हिन्दु (आर्य) धर्म का ही घर नहीं है, वरन् वह संसार की सभ्यता का आदि भाण्डार है।''**

कॉन्ट जार्न्स जेन (हिन्दुओं के देवताओं की वंशावली)

प्र. 28 सृष्टि की आयु कितनी है? उ० 4,32,00,00,000 वर्ष।

प्र. 29 फिर सृष्टि का क्या होगा? उ० 'प्रलय' अर्थात् 'सृष्टि का विनाश'

प्र. 30 प्रलय कब तक रहती है? उ० 4,32,00,00,000 वर्षों तक।

प्र. 31 क्या प्रलयोपरान्त सृष्टि बनेगी? उ० हाँ, 4,32,00,00,000 वर्षों के लिए फिर बनेगी।

प्र. 32 प्रलय में जीव कहां रहेंगे? उ० ईश्वराधीन मूर्छित अवस्था में।

प्र. 33 सृष्टि बननी बिगड़नी कब रुकेगी ? उ० कभी नहीं, ये क्रम अन्तहीन है।

प्र. 34 क्या ग्रहादि स्वयं गति करते हैं? उ० नहीं, ग्रहादि ईश्वर की व्यवस्था से गति करते हैं। (1)

प्र. 35 सृष्टि बने कितना समय हुआ है? उ० 1,96,08,53,117 वर्ष (28/3/2017 को पूरे हुए) (2)

प्र. 36 सृष्टि बने हुए इतने ही वर्ष हुए हैं, इसका क्या प्रमाण है?

उ० आदिकाल से चला आ रहा 'संकल्पपाठ' व 'ज्योतिषशास्त्र' की गणना इसके प्रमाण हैं।

प्र. 37 आपने तो ज्योतिषशास्त्र को झूठा बताया था फिर उसका प्रमाण कैसे मान्य होगा?

उ० मैनें जन्मकुंडली, भविष्यवाणी आदि फलित ज्योतिष को झूठा कहा था, गणित ज्योतिष को नहीं।

प्र. 38 ईश्वर ने मनुष्योत्पत्ति किस प्रकार की?

उ० जैसे-अण्डों में पक्षियों के बच्चे बनते हैं, वैसे ईश्वर ने भूमि में अण्डों के अंदर मनुष्य शरीर बनाये।

प्र. 39 उन अण्डों से पैदा हुए बालकों का पालन-पोषण किसने किया?

उ० उन्होनें स्वयं किया, क्योंकि ईश्वर ने उन स्त्री-पुरुषों को युवा ही पैदा किया था।

प्र. 40 बिना मुख के निराकार ईश्वर ने मनुष्यों को वेद ज्ञान कैसे दिया?

उ० जैसे- निराकार आत्मा बिना मुख के मन में बात कर लेता है, वैसे।

प्र. 41 प्रकृति पूजा किसे कहते हैं?

उ० प्रकृति अर्थात् संसार का भोग, रक्षा व स्वच्छ रखना ही **'प्रकृति पूजा'** है। (3)

प्र. 42 वातावरण स्वच्छता के क्या उपाय हैं?

उ० यज्ञ-हवन करना, शौचालय का प्रयोग करना, प्रदूषण को रोकना तथा वृक्षारोपण करना आदि।

प्र. 43 हवन-यज्ञ से वातावरण शुद्ध कैसे होता है?

उ० हमारे शरीर, घर, वाहन व कारखानों से निरंतर गंदगी निकलती रहती है जो प्रदूषित, जहरीली व रोगकारक होती है। हवन अर्थात् अग्नि में विधि-विधान से रोगनाशक, पुष्टिवर्धक, सुगंधित पदार्थ डालने से शुद्ध व रोगनाशक ऊर्जा निकलती है; जिससे वायु, जल, अन्न तथा औषधियों की शुद्धि होती है। इसलिए हवन अवश्य करना चाहिए।

(1) **''विश्व की योजना, क्रम और व्यवस्था के पीछे एक 'अति चेतना ' है। इसी शक्ति ने समस्त द्रव्य और ऊर्जा को किसी निश्चित समय में पैदा किया है। उसी ने आकाशीय ग्रह-नक्षत्रों को इस प्रकार बांध दिया और उनमें ऐसी मूल प्रेरणा भर दी है कि वे विश्व का विस्तार करने के लिए खेलते रहें। उसने पृथ्वी को बनाकर उसमें ऐसी स्थितियां पैदा कर दी, जो जीवन के अनुकूल हों।.....मनुष्य को बुद्धि भी परमात्मा की बुद्धि से आई है।''**

ओलिन कैरोल कार्कैलिट्ज (रासायनिक इंजीनियर, गवेषणा रसायनविद्)

(2) **''ज्योतिषी और गणितज्ञ सूर्य से पृथक हुई पृथ्वी की आयु लगभग 2 अरब वर्ष बताते हैं।''**

एच. जी. वेल्स, विश्वविख्यात इतिहासवेत्ता (Outline of History Page No. 19)

(3) **''विभिन्न रोगों के जन्तुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल तथा सुलभ पद्धति अन्य कोई नहीं है।''**

एम. मोनियर, चिकित्सा शास्त्री (एन्शिएंट हिस्ट्री ऑफ मेडिसिन)

''...रेडिएशन के प्रभाव को यज्ञ (हवन) के माध्यम से दूर किया जा सकता है।''

राजस्थान पत्रिका (24.3.11)

आध्यात्मिक ज्ञान

प्र. 1 आध्यात्मिक ज्ञान किसे कहते हैं?
उ० आत्मा, ईश्वर, मन, बुद्धि, पुनर्जन्म व मोक्ष सम्बंधी ज्ञान को **'आध्यात्मिक ज्ञान'** कहते हैं। (1)

प्र. 2 आत्मा किसे कहते हैं?
उ० जो मन, वाणी और शरीर से काम करता है और जिसे सुख-दु:ख की अनुभूति होती है, उसे **'आत्मा'** कहते हैं।

प्र. 3 शरीर किसे कहते हैं?
उ० जिसके द्वारा आत्मा कर्म व सुख-दु:ख की अनुभूति करता है, उसे **'शरीर'** कहते हैं।

प्र. 4 कर्म किसे कहते हैं?
उ० जीवात्मा मन, वाणी व शरीर से जो चेष्टा विशेष करता है, उसे **'कर्म'** कहते हैं।

प्र. 5 आत्मा व परमात्मा में क्या भेद है?
उ० **आत्मा**-अल्पज्ञ, अल्पशक्ति, एकदेशीय है।
परमात्मा-सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है।

प्र. 6 आत्मा व ईश्वर में क्या समता है?
उ० दोनों चेतन, नित्य, पवित्र व निराकार हैं।

प्र. 7 जन्म और मृत्यु किसे कहते हैं?
उ० आत्मा व देह का मेल **'जन्म'** व छूटना ही **'मृत्यु'** है।

प्र. 8 शरीर व आत्मा को कौन मिलाता है?
उ० सर्वज्ञ, सृष्टिकर्ता ईश्वर। (2)

प्र. 9 जन्म और मृत्यु किसकी होती है?
उ० शरीर की।

प्र. 10 मृत्यु के बाद हम कहां जाते हैं?
उ० पुनर्जन्म अथवा मोक्ष में चले जाते हैं।

प्र. 11 दूसरे जन्म में कौन भेजता है?
उ० कर्मफलदाता ईश्वर।

प्र. 12 पूर्वजन्म की याद क्यों नहीं रहती?
उ० आत्मा का ज्ञान व सामर्थ्य कम होने से।

प्र. 13 हमारा जन्म क्यों होता है?
उ० पाप-पुण्य कर्मों का फल भोगने के लिए।

प्र. 14 हमारी मृत्यु क्यों होती है?
उ० शरीर व इन्द्रियों की शक्ति नष्ट होने से।

प्र. 15 क्या जन्म लेना सुखदायी है?
उ० नहीं, जन्म के साथ दु:ख भी जुड़े हैं।

प्र. 16 जन्म व मृत्यु कैसे रुक सकती है?
उ० ईश्वरभक्ति, निष्काम कर्म व योगाभ्यास से।

प्र. 17 जन्म-मृत्यु से छूटना क्या है?
उ० मोक्ष अर्थात् मुक्ति, अपवर्ग, कैवल्य, नि:श्रेयस।

प्र. 18 मुक्ति किसकी होती है?
उ० जीवात्मा की।

प्र. 19 मुक्ति में क्या होता है?
उ० सम्पूर्ण दु:खों का नाश व पूर्णानन्द की प्राप्ति।

प्र. 20 मुक्ति में आत्मा कहां रहती है?
उ० सर्वव्यापक, आनन्दस्वरूप ईश्वर में।

प्र. 21 आत्मा बंधनयुक्त क्यों होती है?
उ० अविद्या, कुसंग, कुकर्मों व कुसंस्कारों से।

प्र. 22 आत्मसाक्षात्कार कैसे होता है?
उ० योगाभ्यास द्वारा 'समाधि' में।

प्र. 23 मुक्तात्मा ईश्वर में मिल जाती हैं?
उ० नहीं, स्वतंत्रता से आनन्द भोगती हैं।

प्र. 24 आत्मा स्त्री है, पुरुष है या नपुंसक?
उ० कोई नहीं, ये तीनों लिंग शरीर के होते हैं।

प्र. 25 आत्मा की पहचान क्या है?
उ० इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख-दु:ख व ज्ञान का होना।

प्र. 26 अकालमृत्यु से भटकती आत्माएं क्या-क्या दु:ख देती हैं?
उ० मृत्यु के बाद आत्माएं न भटकती हैं, न सुख-दु:ख देती हैं, न उन्हे कोई नाम, स्थान, जन्म याद रहता है।

(1) **''कठिन परिश्रम तथा वैज्ञानिक प्रवृत्ति के साथ अध्यात्म का योग (मेल) आपको एक अच्छा इंसान बनाएगा। 'नोबेल पुरस्कार विजेता' वैज्ञानिक डॉ. सी.वी. रमण एक आध्यात्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। यदि आप विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में ईश्वर में अटूट आस्था के साथ आगे बढ़ते हैं तो कार्य के परिणामों में स्वत: ही वृद्धि होती चली जाएगी।'' महान् वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम**

(2) **''....इसी सत्ता (परमात्मा) ने उस मनुष्य में ऐसी आत्मा का आधान किया है जिसका अपना व्यक्तित्व है और इच्छा है।'' ओलिन कैरोल कार्कैलिट्ज (रासायनिक इंजिनीयर, गवेषणा रसायनविद्)**

प्र. 27 मुक्ति कैसे प्राप्त होती है?
उ० ईश्वरभक्ति, निष्काम कर्म व योगाभ्यास से।

प्र. 28 मुक्ति कितने जन्मों में होती है?
उ० कई जन्मों में।

प्र. 29 शरीर आत्मा का क्या सम्बंध है?
उ० आत्मा स्वामी है और शरीर उसका साधन है।

प्र. 30 क्या सब जीवों में एक ही आत्मा है?
उ० नहीं, प्रत्येक शरीर में अलग आत्मा है।

प्र. 31 क्या सब जीवों में एक सी आत्मा है?
उ० हाँ, स्वरूप से सब में एक सी आत्मा है।

प्र. 32 आत्माएं कितनी हैं?
उ० आत्माएं अनंत हैं।

प्र. 33 क्या मोक्ष में शरीर रहता है?
उ० नहीं, मोक्ष में शरीर नहीं रहता।

प्र. 34 देह बिन मोक्षानंद कैसे मिलता है?
उ० आत्मा की स्वाभाविक शक्ति व ईश्वरीय शक्ति द्वारा।

प्र. 35 कर्मफल किस रूप में मिलता है?
उ० सुख-दु:ख अथवा स्वर्ग-नरक के रूप में।

प्र. 36 स्वर्ग किसे कहते हैं?
उ० सांसारिक सुख विशेष की प्राप्ति को **'स्वर्ग'** कहते हैं।

प्र. 37 नरक किसे कहते हैं?
उ० सांसारिक दु:ख विशेष की प्राप्ति को **'नरक'** कहते हैं।

प्र. 38 सुख किसे कहते हैं?
उ० स्वतंत्रता, निर्भयता व प्रसन्नता को **'सुख'** कहते हैं।

प्र. 39 दु:ख किसे कहते हैं?
उ० बाधा, पीड़ा व पराधीनता को **'दु:ख'** कहते हैं।

प्र. 40 मनुष्य किसे कहते हैं?
उ० जो बिना विचारे कर्म को न करे, उसे **'मनुष्य'** कहते हैं।

प्र. 41 बुद्धि किसे कहते हैं?
उ० जिस साधन से हम 'निर्णय' करते हैं, वह **'बुद्धि'** है।

प्र. 42 शरीर कैसे मिलते हैं?
उ० पुण्य कर्मों से मनुष्य, पाप कर्मों से पशु आदि के।

प्र. 43 कर्म कितने प्रकार के होते हैं?
उ० **चार**-पुण्य कर्म,पाप कर्म,मिश्रित कर्म,निष्काम कर्म।

प्र. 44 पुण्य कर्म किसे कहते हैं?
उ० आनन्द-उत्साह-निर्भयतायुक्त धार्मिक कर्मों को।

प्र. 45 पाप कर्म किसे कहते हैं?
उ० दु:ख-अशान्ति-भयदायक अधार्मिक कर्मों को।

प्र. 46 मिश्रित कर्म किसे कहते हैं?
उ० सुख-दु:ख देने वाले, पाप-पुण्य युक्त कर्मों को।

प्र. 47 निष्काम कर्म किसे कहते हैं?
उ० नि:स्वार्थ, लोकहितार्थ, मोक्षदायक पुण्य कर्मों को।

प्र. 48 निष्कामी कौन हो सकता है?
उ० पूर्णयोगी, ईश्वरभक्त, विद्वान संन्यासी।

प्र. 49 पुण्य कर्मों के उदा० दीजिए।
उ० पढ़ना-पढ़ाना, सेवा, परोपकार, सत्याचरणादि करना।

प्र. 50 कर्म करने के साधन कितने हैं?
उ० **तीन**-मन, वाणी, शरीर।

प्र. 51 मन किसे कहते हैं?
उ० जिस साधन से हम चिंतन-विचार करते हैं, वह **'मन'** है।

प्र. 52 मन से कितने पुण्य कर्म होते हैं?
उ० **तीन**-दया करना, लोभ त्याग, आस्तिकता।

प्र. 53 मन से कितने पाप कर्म होते हैं?
उ० **तीन**-हिंसा करना, लोभ करना, नास्तिकता।

प्र. 54 वाणी से कितने पुण्य कर्म होते हैं?
उ० **चार**-सत्य, मधुर, हितकारी बोलना, स्वाध्याय करना।

प्र. 55 वाणी से कितने पाप कर्म होते हैं?
उ० **चार**-झूठ, कठोर, अहितकारी बोलना, व्यर्थ बोलना।

प्र. 56 शरीर से कितने पुण्य कर्म होते हैं?
उ० **तीन**-रक्षा करना, दान देना, सेवा करना।

प्र. 57 शरीर से कितने पाप कर्म होते हैं?
उ० **तीन**-हिंसा करना, चोरी करना, व्यभिचार करना।

प्र. 58 सभी कर्मों का फल कौन देता है?
उ० सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी ईश्वर।

प्र. 59 न्यायधीश पूर्ण न्याय कर सकता है?
उ० नहीं, क्योंकि न्यायधीश सर्वज्ञ, सर्वव्यापक नहीं है।

प्र. 60 हम किसकी इच्छा से कर्म करते हैं?
उ० अपनी, ईश्वर ने हमें कर्म करने की स्वतंत्रता दी है।

प्र. 61 हम शरीर हैं आत्मा हैं या ईश्वरांश?
उ० आत्मा हैं और शरीर, इन्द्रियां हमारे साधन हैं।

प्र. 62 इन्द्रियां किसे कहते हैं?
उ० जो आत्मा के ज्ञान व कर्म के साधन हैं, वह **'इन्द्रियां'** हैं।

प्र. 63 ज्ञानेन्द्रियां कौन सी हैं?
उ० नेत्र, नासिका, कर्ण, जिह्वा, त्वचा, ये 5 **'ज्ञानेन्द्रियां'** हैं।

प्र. 64 कर्मेन्द्रियां कौन सी हैं?
उ० हाथ, पैर, मुख, मल व मूत्र द्वार, ये 5 **'कर्मेन्द्रियां'** हैं।

शंका-मुक्ति में ऐसी क्या विशेषता है जो इस संसार में नहीं?

समा.-1. मुक्ति में आत्मा ईश्वर का सर्वोत्तम आनन्द भोगता है। 2. ब्रह्माण्ड की सैर करता है। 3. सृष्टि रचना देखता है। 4. मुक्त आत्माओं से मिलता है। 5. सम्पूर्ण दु:खों से छूट जाता है।

शंका-समाधान

शं. 1 पूजा किसे कहते हैं? **समा.** किसी वस्तु का सम्मान कर, उससे यथायोग्य लाभ लेना **'पूजा'** है।

शं. 2 ईश्वर पूजा किसे कहते हैं? **समा.** ईश्वर के उपदेशों का पालन कर ज्ञान व आनन्द लेना **'ईश्वर की पूजा'** या **'ईश्वरभक्ति'** करना कहलाती है।

शं. 3 ईश्वरभक्ति की क्या विधि है? **समा.** ईश्वर के तुल्य अपने गुण-कर्म-स्वभाव को बनाना।

शं. 4 ईश्वरभक्ति के क्या लाभ हैं? **समा.** आत्मबल की प्राप्ति, पूर्ण सुख-शांति व ईश्वर की प्राप्ति।

शं. 5 क्या ईश्वर की मूर्ति पर फल-फूल चढ़ाकर पूजा नहीं कर सकते?

समा. नहीं, मूर्ति जड़ है। ईश्वर चेतन व निराकार है उस पर फल-फूल, जलादि नहीं चढ़ सकते।

शं. 6 ईश्वर की मूर्ति जड़ नहीं होती, पुजारी उसमें प्राणप्रतिष्ठा कर देते हैं, तब क्या दोष है?

समा. ये प्राणप्रतिष्ठा नहीं, पाखंडप्रतिष्ठा है क्योंकि प्राणप्रतिष्ठा के बाद भी मूर्ति जीवित-चेतन नहीं होती।

शं. 7 जो बच्चों के समान ईश्वर का सही स्वरूप नहीं जानते क्या उनके लिए मूर्तिपूजा ठीक नहीं हैं?

समा. नहीं, बच्चों को शुरु में 2X8=16 सिखाते हैं या 2X8=8?, 2X8=16 ही ना। तब गणित के समान विद्या-विज्ञान के दाता ईश्वर के स्वरूप को ही ठीक न सीखना व सिखाना महापाप, महाअन्याय है।

शं. 8 क्या मूर्तिपूजा ईश्वरप्राप्ति का साधन नहीं है, जैसे - सेवकों के माध्यम से प्रधानमंत्री से मिलते हैं?

समा. नहीं, क्योंकि सेवक चेतन, ज्ञानी है वह प्रधानमंत्री से मिला सकता है, लेकिन मूर्ति तो ज्ञानहीन जड़ है, वह न बोल सकती है न चल सकती है इसलिए ईश्वर से नहीं मिला सकती।

शं. 9 जी, ये तो श्रद्धा का विषय है 'जैसी भावना वैसा भगवान का रूप', ठीक है ना?

समा. नहीं, ये अश्रद्धा है। श्रद्धा का अर्थ है 'सत्य को स्वीकार करना' जिसका आधार है तर्क व प्रमाण। (1)

शं. 10 ईश्वर तो एक व निराकार ही है उसके रूप अनेक हैं, तब मूर्तिपूजा में क्या दोष है?

समा. दोष ये है कि 'निराकार वस्तु के अनेक रूप' का उदाहरण संसार में कोई नहीं दिखा सकता।

शं. 11 क्या कलियुग में मूर्तिपूजा ही ईश्वर की पूजा नहीं है?

समा. नहीं, क्योंकि कलियुग में सूर्य को सूर्य ही मानते हैं अतः कलियुग में ईश्वर को मूर्ति मानना अविद्या है।

शं. 12 ऐसी कौन सी वस्तु है जिसमें ईश्वर नहीं है? **समा.** कोई नहीं, ईश्वर कण-कण में है।

शं. 13 कण-कण में है तो मूर्ति में ईश्वर क्यों नहीं है? **समा.** सर्वव्यापक होने से मूर्ति में भी है।

शं. 14 जब मूर्ति में भी ईश्वर है तो मूर्तिपूजा का खंडन क्यों?

समा. क्योंकि जड़ मूर्ति में ईश्वर के समान ज्ञान, बल व सर्वज्ञता आदि गुण नहीं हैं।

शं. 15 मूर्तिपूजा तो लोग ईश्वर के अवतारों की करते हैं, इसलिए कोई दोष नहीं है।

समा. दोष है, अवतार कहते हैं 'उतरने को'। सर्वव्यापक होने से ईश्वर का आना-जाना असंभव है।

शं. 16 ईश्वर अवतार न ले तो पापियों का नाश कैसे करेगा?

समा. जैसे-बिना जन्म लिए ईश्वर पापियों के शरीर बना देता है, वैसे ही नष्ट भी कर सकता है।

(1) ''तर्क से परे भागने की आवश्यकता नहीं है। तर्क का ठीक ढंग से और जोर के साथ प्रयोग करना चाहिए। जो श्रद्धा तर्क पर आधारित नहीं है, वह दुर्बल श्रद्धा है और खंडन तथा परेशान करने वाले आघातों से छिन्न भिन्न हो सकती है। यदि धार्मिक श्रद्धा भी तर्क पर आधारित न हो तो उससे आचार-व्यवहार दूषित ही होता है। उस तर्क से और विचार के उन सिद्धांतों से परे नहीं भागना चाहिए .... जिन पर हमारे महान वैज्ञानिकों के विचार और कार्य आधारित हैं। ईश्वर, विश्वास तर्क और विचार के उन्हीं सिद्धांतों पर आधारित हैं जिन पर भौतिक प्रगति का भविष्य में विश्वास टिका है।'' **एण्ड्रयू कौन्वे आइवी (शरीरक्रियाविज्ञानविद्, विश्वविख्यात् वैज्ञानिक, अमेरिका के युद्धमंत्री के परामर्शदाता, 1320 वैज्ञानिक लेख, अनेक महत्वपूर्ण विभागों, संस्थानों के अध्यक्ष)**

शं. 17 क्या ईश्वर चौथे, सातवें आसमान या बैकुंठधाम में नहीं बैठा है?

समा. नहीं, अनन्त ईश्वर का तिलभर के संसार या स्थान विशेष में रहना संभव नहीं है।

शं. 18 ईश्वर भक्तों के दुःख दूर कैसे करता है? **समा.** अपने भक्तों को ज्ञान, बल व सामर्थ्य देकर।

शं. 19 जन्म लेने से ईश्वर में क्या दोष आते हैं?

समा. जन्म लेने से ईश्वरः-सर्वज्ञ से अल्पज्ञ, सर्वत्र से एकत्र, स्वतंत्र से परतंत्र, निराकार से साकार, निर्विकार से विकारी और पवित्र से अपवित्र हो जाएगा।

शं. 20 मूर्ति से ईश्वर की याद व ध्यान होता है, इसलिए मूर्तिपूजा में दोष नहीं है?

समा. ये सत्य नहीं। इतने विशाल ब्रह्मांड, सूर्य, चंद्रमा, पहाड़ व शरीर की रचना को देखकर जिसको ईश्वर की याद अथवा ध्यान नहीं होता, उसका मानवकृत मूर्ति में भी ईश्वर का ध्यान नहीं लगेगा।

शं. 21 निराकार ईश्वर का दर्शन या साक्षात्कार किसे कहते हैं?

समा. ईश्वर के ज्ञान, बल व आनन्दादि की अनुभूति होने को ही **'दर्शन'** या **'साक्षात्कार'** कहते हैं।

शं. 22 ईश्वर का साक्षात्कार कौन कर सकता है?

समा. ईश्वर का उपासक, वेदों का विद्वान, धर्मात्मा-मुमुक्षु, योगी संन्यासी।

शं. 23 जी, सच्चे आस्तिक की क्या पहचान होती है?

समा. १. सच्चा आस्तिक सदैव निर्भय, प्रसन्न रहता है। २. भौतिक सुखों में आकर्षित नहीं होता। ३. सब प्राणियों से आत्मवत् व्यवहार करता है। ४. वेदानुसार निष्काम कर्म करता है।

शं. 24 सभी मत-सम्प्रदाय ईश्वर के प्रतीक पूजते हैं, क्या बहुमत से मूर्तिपूजा सत्य सिद्ध नहीं होती?

समा. सत्य का निर्णय तर्क व प्रमाणों से होता है बहुमत से नहीं, जैसे- एक सूर्य तमनाशक है, अनंततारे नहीं।

शं. 25 प्रमाण किसे कहते हैं?

समा. किसी पदार्थ का सत्यस्वरूप जिस साधन से जाना जाए या निश्चय किया जाए वह **'प्रमाण'** है।

शं. 26 तर्क किसे कहते हैं?

समा. किसी कारण को देखकर किसी विषय में विचार करना, कि यह वस्तु ऐसी होनी चाहिए यह **'तर्क'** है।

शं. 27 मूर्ति किसे कहते हैं?

समा. जिसमें रूप-रंग व आकार हो, उसे **'मूर्ति'** कहते हैं।

शं. 28 क्या मनुष्य भी मूर्ति है?

समा. हाँ, मनुष्य भी चेतन मूर्ति है।

शं. 29 मूर्ति कितने प्रकार की होती है?

समा. दो - जड़ मूर्ति व चेतन मूर्ति।

शं. 30 जड़ मूर्तियां कौन सी हैं?

समा. पृथ्वी, सूर्य, पहाड़, कार, मोबाईल आदि।

शं. 31 चेतन मूर्तियां कौन सी हैं?

समा. माता-पिता, शिक्षक, अतिथि आदि देवता।

शं. 32 जड़ मूर्तिपूजा कैसे करते हैं?

समा. ईश्वर रचित पृथ्वी, जल, सूर्यादि और मनुष्य रचित घर, कार, मोबाइलादि जड़ पदार्थों का रख-रखाव व उनका बुद्धिपूर्वक उपयोग लेकर सुखी होना **'जड़ मूर्तिपूजा'** है।

शं. 33 चेतन मूर्तिपूजा की विधि क्या है?

समा. माता-पिता, आचार्य, विद्वानादि पालनकर्ता लोगों से विद्या-सुशिक्षा लेना। उनकी आज्ञा का पालन करना। उनके प्रति निंदा, हिंसा, कटुवचन न बोलना। तन, मन व धन से उनकी सेवा, रक्षा करना **'चेतन मूर्तिपूजा'** कहलाती है।

(1) **'' मैं समझता हूँ कि ईश्वर विषयक यह विचार कि वह मानवीय आकृति तथा गुणों से युक्त है, वैज्ञानिक विचार के विरुद्ध है।'' प्रो० जे. बी. कोन (F.R.S., D.Sc., L.L.D, F.C.S सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक)**

'' विज्ञान के दृष्टिकोण से, मैं परमात्मा को किसी ऐसे पुरुष के रूप में नहीं सोचता जो किसी मानवीय राजा की तरह कहीं सिंहासन पर बैठा हो।'' पाल क्लेरेंस एबरसोल्ड (जीव भौतिकविद्, अणुशक्ति आयोग - अमेरिका)

शं. 34 ईश्वर की मूर्ति नहीं होती, क्या वेदों में इसका प्रमाण है?
समा. हाँ, **'न तस्य प्रतिमाऽस्ति'** यजुर्वेद 32.3 अर्थात् 'ईश्वर की प्रतिमा-मूर्ति नहीं होती।'
शं. 35 लोग सर्वव्यापक, निराकार, ईश्वर की मूर्तिपूजा क्यों करते हैं?
समा. अपनी अज्ञानता, अविद्या, हठ-दुराग्रह, स्वार्थ, भय और गलत सीखने-सिखाने से।
शं. 36 क्या श्रीराम ने रामेश्वरम् में महादेव की मूर्ति स्थापित कर पूजा नहीं की थी?
समा. नहीं की। देखो- **'अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोत् विभुः।'** अर्थात्-
हे सीते! यह वह स्थान है जहां पर विभु अर्थात् सर्वव्यापक महादेव ईश्वर ने हम पर कृपा की थी।
अतः 'विभु' होने से महादेव की मूर्ति पूजा स्वयं असिद्धि हो गई।
शं. 37 क्या सच्ची प्रार्थना व समर्पण से ईश्वर हमारे पाप क्षमा कर देता है?
समा. नहीं, सच्ची प्रार्थना से दयालु प्रभु हमें पाप से बचने व दुःख सहने की महानशक्ति देता है।
शं. 38 ईश्वर दयालु है तो हमारे पाप क्षमा क्यों नहीं करता? समा. इसलिए कि -
1. क्षमा करने से सुधार कभी नहीं होता। 2. वह दयालु है, हमें पापों से बचाना चाहता है।
3. ईश्वर न्यायकारी है, जैसा कर्म वैसा फल। 4. कर्मफल न देने से ईश्वर अन्यायकारी होता है।
शं. 39 क्या कोई धर्मगुरु आदि हमारे पाप कर्मों को अपने उपर ले सकता हैं?
समा. नहीं ले सकता। अपने किए कर्मों का फल करोड़ जन्म लेकर भी स्वयं ही भोगना पड़ता है।
शं. 40 कुछ महापुरुष दुष्टों के पाप कर्मों को क्षमा कर देते हैं, क्या ये सत्य है?
समा. नहीं, अपितु महापुरुष दुष्टों के अन्याय को सह लेते हैं, द्वेष नहीं करते, यही क्षमा का अर्थ है।
शं. 41 जी, क्या तीर्थ, मन्दिर, पीर-दरगाह और सैयद जाने से पाप नहीं छूटते?
समा. नहीं, पापों का नाश तो ईश्वर भक्ति, योगाभ्यास, सत्यभाषण और परोपकारादि से होता है।
शं. 42 प्रायश्चित किसे कहते हैं?
समा. किए गए पाप कर्मों के प्रति घृणा-ग्लानि व कुछ कष्ट भोगने के भाव को **'प्रायश्चित'** कहते हैं।
शं. 43 प्रार्थना से पाप क्षमा हो जाते हैं, इस भ्रम का क्या कारण है?
समा. स्वार्थी पंडे-पुजारी, कथावाचक, झूठे धर्मगुरु, ज्योतिषी व अज्ञान-अविद्या ।
शं. 44 सब शंकाओं का समाधान व विद्याओं का मूल कारण क्या है?
समा. **'ईश्वर'** व उसकी दी गई **'वेद विद्या'**। [1]
शं. 45 पूजाघरों में रखी मूर्तियां ईश्वर की नहीं है तो फिर किसकी हैं?
समा. कुछ तो पूर्वज महापुरुषों की हैं और कुछ काल्पनिक निराधार हैं।
शं. 46 क्या धार्मिक, सत्यवादी, देशभक्तों, महापुरुषों के चित्र या मूर्ति घर में रख सकते हैं?
समा. हाँ, अवश्य रखें। उनके जीवन से शिक्षा ग्रहण करें और अपने जीवन को भी महान बनाए।
लेकिन अप्रामाणिक, विज्ञान विरुद्ध चित्र न रखें। प्रामाणिक चित्र रखें व उनकी सुरक्षा भी करें।
शं. 47 परमेश्वर की भक्ति न करने से क्या हानि हो सकती है?
समा. ईश्वर भक्तिहीन कभी भी पाप कर्मों से छुटकर सुख-शांति प्राप्त नहीं कर सकता।
शं. 48 संसार में परमपूज्य और धारण करने योग्य देवता कौन है? समा. 'परमपिता परमेश्वर'।
शं. 49 मनुष्य के जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है? समा. 'परमेश्वर की प्राप्ति'।

[1] **'' सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।''**
महान दार्शनिक, शास्त्रार्थ महारथी, वेदज्ञ-महर्षि दयानन्द सरस्वती
'' जितने भी ऐसे सवाल हैं, जिनका अभी तक जवाब नहीं दिया जा सकता, उन सबका ईश्वर ही एक जवाब है।'' प्रो० डोनाल्ड हेनरीपोरटर (गणितज्ञ, भौतिकविद् मैरियन कॉलेज)

योगाभ्यास

जी, आपने ईश्वर प्राप्ति, मुक्ति व ब्रह्मचर्य रक्षा का उपाय योगाभ्यास कहा था, कृपया बताइए-

प्र. 1 योग किसे कहते हैं? उ० सांसारिक विचारों को रोक ईश्वरादि की अनुभूति करना **'योग'** है।

प्र. 2 योग का ज्ञान कैसे होता है? उ० महर्षि पतंजलि रचित **'योगदर्शन'** अर्थात् **'अष्टांगयोग'** से।

प्र. 3 योग के 8 अंग कौन से हैं? उ० यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

प्र. 4 यम किसे कहते हैं? उ० अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, ये 5 **'यम'** हैं।

प्र. 5 नियम किसे कहते हैं? उ० शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान, ये 5 **'नियम'** हैं।

प्र. 6 आसन किसे कहते हैं? उ० जिसमें सुखपूर्वक बैठकर ध्यान कर सकें, उसे **'आसन'** कहते हैं।

प्र. 7 प्राणायाम किसे कहते हैं? उ० श्वास-प्रश्वास की गति को यथाशक्ति रोक देना **'प्राणायाम'** है।

प्र. 8 प्रत्याहार किसे कहते हैं? उ० इन्द्रियों के देखना आदि कार्यों को बंद कर देना **'प्रत्याहार'** है।

प्र. 9 धारणा किसे कहते हैं? उ० मन को मस्तकादि किसी स्थान में स्थिर करना **'धारणा'** है।

प्र. 10 ध्यान किसे कहते हैं? उ० ईश्वर से भिन्न विषय में मन का न जाना **'ध्यान'** है।

प्र. 11 समाधि किसे कहते हैं? उ० ज्ञान व आनन्दादि गुणवाले ईश्वर की अनुभूति करना **'समाधि'** है।

प्र. 12 अहिंसा किसे कहते हैं? उ० किसी के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार न करना **'अहिंसा'** है।

प्र. 13 सत्य किसे कहते हैं? उ० अपना निर्भ्रमज्ञान दूसरों को वैसा ही बताना **'सत्य'** कहलाता है।

प्र. 14 अस्तेय किसे कहते हैं? उ० मन, वाणी, शरीर से चोरी न करने को **'अस्तेय'** कहते हैं।

प्र. 15 ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं? उ० जितेन्द्रिय होकर धातुशक्ति की रक्षा करना **'ब्रह्मचर्य'** है।

प्र. 16 अपरिग्रह किसे कहते हैं? उ० ईश्वर प्राप्ति में बाधक अनावश्यक विषयों का त्याग **'अपरिग्रह'** है।

प्र. 17 शौच किसे कहते हैं? उ० शरीर व मन की शुद्धि करने को **'शौच'** कहते हैं।

प्र. 18 संतोष किसे कहते हैं? उ० पूर्णपरिश्रम से प्राप्त धनादि में संतुष्टि **'संतोष'** कहलाता है।

प्र. 19 तप किसे कहते हैं? उ० विद्यादि शुभगुणों की प्राप्ति में कष्ट सहना **'तप'** कहलाता है।

प्र. 20 स्वाध्याय किसे कहते हैं? उ० ईश्वर विषयक सद्ग्रंथों का अध्ययन करना **'स्वाध्याय'** है।

प्र. 21 ईश्वरप्रणिधान क्या है? उ० समस्त पदार्थों व कर्मों को ईश्वरार्पित करना **'ईश्वरप्रणिधान'** है। (1)

प्र. 22 अहिंसा के क्या लाभ हैं? उ० अहिंसा की परिपक्वता से वैर-भाव छूट जाता है।

प्र. 23 सत्य के क्या लाभ हैं? उ० सत्य से मनुष्य के सब शुभ मनोरथ सफल हो जाते हैं।

प्र. 24 अस्तेय के क्या लाभ हैं? उ० अस्तेय की सिद्धि से उत्तम-उत्तम पदार्थ प्राप्त होते है।

प्र. 25 ब्रह्मचर्य के क्या लाभ हैं? उ० ब्रह्मचर्य पालन से शारीरिक व बौद्धिक बल बढ़ता है।

प्र. 26 अपरिग्रह के क्या लाभ हैं? उ० अपरिग्रह से आत्मज्ञान की प्राप्ति व अभिमान नष्ट होता है।

प्र. 27 शौच के क्या लाभ हैं? उ० शौच से मन की प्रसन्नता और इन्द्रियों का नियंत्रण होता है।

प्र. 28 संतोष के क्या लाभ हैं? उ० संतोष से संसार का सबसे उत्तम सुख प्राप्त होता है।

प्र. 29 तप के क्या लाभ हैं? उ० तप से शरीर, इन्द्रियों की शुद्धि व दृढ़ता प्राप्त होती है।

प्र. 30 स्वाध्याय के क्या लाभ हैं? उ० स्वाध्याय द्वारा प्रभु से मेल होकर मुक्ति प्राप्त होती है।

प्र. 31 ईश्वरप्रणि. के क्या लाभ हैं? उ० ईश्वरप्रणिधान से मनुष्य अति शीघ्र समाधि प्राप्त कर लेता है।

(1)

ईश्वरप्रणिधान-ईश्वरसमर्पण की विधि

1. सर्वव्यापक ईश्वर की सम्मति से कार्य करना, जैसे-बच्चा माता-पिता से सम्मति लेकर कार्य करता है।

2. कर्म करते हुए सर्वव्यापक ईश्वर की उपस्थिति स्वीकार करना, जैसे - कक्षा में गुरु जी ।

3. मैं जो शुभकर्म कर रहा हूँ ईश्वर के ज्ञान, बल व सामर्थ्य से कर रहा हूँ।

4. किए हुए शुभकर्मों को ईश्वरार्पित करना कि ये शुभकार्य आपकी सहायता से पूर्ण हुए हैं।

5. शुभकर्मों के बदले कोई लौकिक सुख न चाहना, निष्कामकर्म करते हुए ईश्वर अर्थात् मोक्ष की कामना करना।

उपरोक्त पांच बातें मिलकर 'ईश्वरप्रणिधान' या ईश्वरसमर्पण' कहलाता है।

प्र. 32 मुक्ति किसे कहते हैं? **उ०** क्लेशों का नाश होकर ईश्वरप्राप्ति को **'मुक्ति'** कहते हैं।

प्र. 33 क्लेश किसे कहते हैं? **उ०** अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश, ये **'पंचक्लेश'** हैं।

प्र. 34 अविद्या किसे कहते हैं? **उ०** पाप को पुण्य व चेतन को जड़ मानना **'अविद्या क्लेश'** है।

प्र. 35 अस्मिता किसे कहते हैं? **उ०** नित्य आत्मा व अनित्य बुद्धि को एक मानना **'अस्मिताक्लेश'** है।

प्र. 36 राग किसे कहते हैं? **उ०** पूर्व भोगे सुखों के चिंतन में लगे रहना **'राग क्लेश'** है।

प्र. 37 द्वेष किसे कहते हैं? **उ०** पूर्व भोगे दु:खों व साधनों पर क्रोध बुद्धि होना **'द्वेष क्लेश'** है।

प्र. 38 अभिनिवेश किसे कहते हैं? **उ०** मैं सदा बना रहूँ, मरूँ नहीं, ये **'अभिनिवेश क्लेश'** है।

प्र. 39 क्लेशों के क्या दोष हैं? **उ०** ये पंचक्लेश ही पाप-पुण्य,जन्म-मरणादि दु:खों के मूल कारण हैं।

प्र. 40 क्लेशनाशक उपाय क्या हैं? **उ०** सद्ग्रंथ स्वाध्याय, योगाभ्यास, यथार्थज्ञान व ईश्वरप्रणिधान हैं।

प्र. 41 क्लेशों का मूल क्या है? **उ०** अविद्या अर्थात् मिथ्याज्ञान।

प्र. 42 अविद्या का नाशक क्या है? **उ०** विद्या अर्थात् तत्वज्ञान।

प्र. 43 विद्या का मूल क्या है? **उ०** ईश्वरोक्त वेद-विद्या।

प्र. 44 प्राणायाम के क्या लाभ हैं? **उ०** स्मृतिशक्ति, ज्ञान, बल व सूक्ष्मबुद्धि की प्राप्ति।

प्र. 45 ध्यान के क्या लाभ हैं? **उ०** ध्यान से एकाग्रता व मन इन्द्रियों पर नियंत्रण होता है।

प्र. 46 ध्यान कहां करना चाहिए? **उ०** शांत, एकांत व स्वच्छ वातावरण में ध्यान करना चाहिए।

प्र. 47 जप किसे कहते हैं? **उ०** मन में या बोलकर ईश्वर का अर्थसहित गुणगान करना **'जप'** है।

प्र. 48 एकाग्रता के क्या लाभ हैं? **उ०** एकाग्रता से शीघ्र लक्ष्य प्राप्ति होती है।

प्र. 49 योग के आसन कौन से हैं? **उ०** पद्मासन, सुखासन, सिद्धासन, स्वस्तिकासन।

प्र. 50 शीर्षादि आसन क्या हैं? **उ०** शीर्षासन, चक्रासन, धनुरासन आदि व्यायाम के आसन है।

प्र. 51 कपालभाति आदि योग है? **उ०** नहीं, **अष्टांगयोग** से भिन्न कोई योग नहीं है।

प्र. 52 योग विद्या का मूल क्या है? **उ०** ईश्वरोक्त **'वेद'**, जो **सब सत्य विद्याओं का मूल है**।

प्र. 53 सत्य के अन्य क्या लाभ हैं? **उ०** सच्चा-निर्भीक, स्वाभिमानी होकर ईश्वर से सुख पाता है।

प्र. 54 झूठ से क्या हानि है? **उ०** झूठा-भयभीत व अपमानित होकर ईश्वर से दंड पाता है।

प्र. 55 ईश्वर दंड कैसे देता है? **उ०** पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि योनियों में जन्म देकर।

प्र. 56 क्या कसाई से गाय बचाने या जीवन बचाने हेतु झूठ बोल सकते हैं? **उ०** नहीं।

प्र. 57 बिना झूठ बोले कसाई से गाय को कैसे बचाएं? **उ०** निम्न उपायों से-
ब्राह्मण ज्ञानबल से, क्षत्रिय बाहुबल से, वैश्य धनबल से, शूद्र तीनों को सूचित कर रक्षा करे।

प्र. 58 क्या योगी भविष्य बता सकता है? **उ०** नहीं, सारी बातें नहीं बता सकता।

प्र. 58 अष्टांगयोग से भिन्न योग क्या है? **उ०** मत-मतान्तरों की स्वनिर्मित कल्पनाएँ हैं।

प्र. 59 अहिंसा, सत्यादि द्वारा ये उपरोक्त 'परम लाभ' कब प्राप्त होते हैं?

उ० जब व्यक्ति 'अहिंसादि यमों' और 'शौचादि नियमों' को परिपक्व बना आचरण करता है तब।

प्र. 60 योगाभ्यास किसे कहते हैं?

उ० यम-नियमादि योग के आठ अंगों का मन,वाणी,शरीर से पालन करना ही **'योगाभ्यास'** कहलाता है।

प्र. 61 'अष्टांगयोग' अर्थात् 'योगाभ्यास' का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उ० 'सम्पूर्ण दु:खों से निवृत्ति' और 'पूर्णानन्द परमेश्वर की प्राप्ति' करना व कराना है।

प्र. 62 वर्तमान में योगदर्शन के अध्ययन व क्रियात्मक योगाभ्यास का आदर्श केंद्र कहां पर है?

उ० 'दर्शन योग महाविद्यालय' आर्यवन, रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जिला साबरकांठा (गुज.) 383307.

स्मरणीय

1	मनुष्य मात्र के 'धर्म' का 'मूल उपदेष्टा' है ☞	ईश्वर
2	मनुष्योत्पत्ति के साथ प्राप्त होने वाला 'ज्ञान' या 'संविधान' है	वेद
3	विश्व की समस्त भाषाओं की मूल 'प्राचीनतम भाषा' है	संस्कृत(1)
4	संसार की 'प्राचीनतम पुस्तक' है	ऋग्वेद(2)
5	हमारा 'राष्ट्रीय गौरव' बढ़ता है	राष्ट्रभाषा हिन्दी से
6	संसार के सर्वप्रथम 'वैदिक शासक' थे	महर्षि मनु
7	'योग विद्या' का मूल स्थान है	भारतवर्ष
8	इतिहास में प्राचीनतम 'आयुर्वेदिक चिकित्सक' थे	महर्षि चरक
9	संसार की प्राचीनतम सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है	आयुर्वेद
10	इतिहास में प्राचीनतम शल्य चिकित्सक 'सर्जन' थे	महर्षि सुश्रुत
11	'संस्कृत व्याकरण शास्त्र' के अद्वितीय विद्वान थे	महर्षि पाणिनि
12	'गणित विद्या' के 'आदिजनक' हैं	भारतीय(3)
13	'सूर्य स्थिर है' यह ज्ञान सर्वप्रथम दिया	आर्यभट्ट ने
14	'पृथ्वी गोल है' यह सर्वप्रथम सिद्ध किया	भारतीयों ने
15	वेदानुसार प्राचीनतम 'मनुष्य रचित संविधान' है	मनुस्मृति
16	संसार का 'प्राचीनतम ऐतिहासिक काव्य' है	वाल्मीकि रामायण
17	भारतीय 'सृष्टिसम्वत्' (नववर्ष) मनाया जाता है	चैत्रमास, शुक्ल, प्रतिपदा को
18	'गुण-कर्मानुसार' श्रेष्ठता सिद्ध करने का अधिकार दिया	मनुस्मृति ने
19	श्री राम एवं वीर हनुमान आदि के शुद्धचरित्र का वर्णन है	वाल्मीकि रामायण में
20	हमारे देश का परमोत्तम व प्राचीनतम नाम है	आर्यावर्त
21	'अशोक की लाट' पर स्थापित कलाकृति है हमारा	राष्ट्रीय चिह्न
22	धर्म पर न्योछावर होने वाला 'विद्यार्थी' था	वीर हकीकत राय '14 वर्ष'
23	प्राचीन गुरुकुल विश्वविद्यालय थे	नालंदा वि.वि., तक्षशिला वि.वि., विक्रमशीला वि.वि.
24	अद्वितीय समाज सुधारक, महायोगी, राष्ट्रभक्त 'संन्यासी' थे	महर्षि दयानन्द सरस्वती
25	अपने चारों पुत्रों को देशहित बलिदान करने वाले महावीर योद्धा थे	गुरु गोविन्द सिंह जी
26	पूरे विश्व में एकमात्र शुद्ध बोली जाने वाली भाषा है	संस्कृत
27	'तीर्थराज प्रयाग' का बिगड़ा हुआ नाम है	इलाहाबाद
28	सत्य-असत्य निर्णायक, अंधविश्वास-पाखंड विनाशक ग्रंथ है	सत्यार्थ प्रकाश
29	पृथ्वीराज का बनाया 'यमुना स्तम्भ' आजकल कहा जाता है	कुतुब मीनार
30	भारत के प्रथम सुविख्यात् 'नोबेल पुरस्कार' विजेता वैज्ञानिक थे	डॉ. सी. वी. रमण
31	औरंगजेब का बड़ा भाई दारा शिकोह परमभक्त था	भारतीय उपनिषदों का

(1) '' किसी समय संस्कृत भाषा सारे संसार में बोली जाती थी।''
प्रसिद्ध भाषाविद् 'बोप' (Bopp in Edinburg Review)
'' 'संस्कृत' युरोप और एशिया की सौ से अधिक भाषाओं की जननी है।''
जर्मन भाषाविद् रूडिगर (Rudiger)

(2) ''इसमें संदेह नहीं कि वेद संस्कृत के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। उपलभ्यमान सबसे प्राचीन संस्कृतग्रंथों में भी उनकी विद्यमानता का स्पष्ट निर्देश पाया जाता है। वे मनुष्यमात्र की उन्नति के लिए अपनी अद्भुत शान में दिव्य प्रकाशस्तम्भ का काम देते हैं।'' (Historical Research by Prof. Heeren, Vol. II. P. 127)

(3) '' बीजगणित तथा रेखागणित का आविष्कार और ज्योतिष के साथ उसका प्रथम प्रयोग हिन्दु (आर्यों) के द्वारा ही हुआ ।''
प्रो० मोनियर विलियम्स (संस्कृत प्रोफैसर, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय)

32	भारतीय वैदिक दर्शनों की संख्या है	छः, षड्-दर्शन
33	31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक दुःखों से मुक्त मनुष्य रहता है	मोक्ष में
34	वैदिक संस्कारों की कुल संख्या है	सोलह संस्कार
35	महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित विश्व कल्याणकारिणी संस्था है	आर्य समाज (1)
36	राष्ट्रीय प्रतीक का 'सत्यमेव जयते' वाक्यांश है	मुण्डकोपनिषद् का (2)
37	दलितोद्धारक, क्रान्तिकारी, निर्भीक संन्यासी थे	स्वामी श्रद्धानन्द जी
38	शहीद भगत सिंह की शिक्षा हुई	डी. ए. वी. स्कूल, लाहौर
39	समस्त जनता को नियंत्रण में रखने वाला उपाय है	दण्ड (3)
40	दुनियां का सबसे अद्भुत आश्चर्य है	सृष्टि रचना
41	तनाव मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है	योगाभ्यास
42	'भगवद् गीता' अंश है	महाभारत का
43	ज्वरादि रोगों से प्राप्त कष्ट को कहते हैं	आध्यात्मिक दुःख
44	शत्रु, सर्प, कीटादि से प्राप्त कष्ट को कहते हैं	आधिभौतिक दुःख
45	अकाल, अतिवृष्टि, भूकम्पादि से प्राप्त कष्ट को कहते हैं	आधिदैविक दुःख
46	सम्पूर्ण विश्व पर धर्मपूर्वक 'चक्रवर्ती राज्य' रहा है	आर्यों का (भारतीयों का)
47	'शेरे पंजाब' के नाम से सुविख्यात् क्रान्तिकारी थे	लाला लाजपत राय
48	'लौह पुरुष' के नाम से सुविख्यात् महानायक थे	सरदार वल्लभ भाई पटेल
49	क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खां घनिष्ठ मित्र था	रामप्रसाद बिस्मिल का
50	क्रान्तिकारी 'बिस्मिल' ने फांसी के फंदे का स्वागत किया	वेदमंत्रों के उच्चारण से
51	विश्वमंच पर भारतीय संस्कृति का डंका बजाया	स्वामी विवेकानन्द जी ने
52	'मातृदिवस-पितृदिवस' मनाया जाता है	प्रतिदिन 'पितृयज्ञ' से
53	अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाली 'महिला योद्धा' थीं	झांसी की रानी लक्ष्मीबाई
54	देश का सशक्त नेतृत्व करने वाली प्रथम 'महिला प्रधानमंत्री' थीं	श्रीमती इंदिरा गांधी
55	फांसी पर चढ़ने से पहले वेदमंत्रों से यज्ञ करनेवाले क्रान्तिकारी थे	पं. रामप्रसाद बिस्मिल
56	विश्व की शांति सेनाओं में 'सर्वश्रेष्ठ आचरण' रहा है	भारतीय सेना का
57	हमारे मिसाइल मैन 'भारत रत्न' वैज्ञानिक 'राष्ट्रपति' थे	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
58	विकलांगो को सम्मानसूचक 'दिव्यांग' शब्द दिया	प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने(4)
59	'वायुशुद्धि' का सर्वोत्तम, सरल व सस्ता साधन है	अग्निहोत्र = यज्ञ-हवन
60	'विश्व का सर्वोत्तम पशु' जिसके मूत्र में 'सोना' पाया गया है	भारतीय देशी गाय

(1) **'' यदि आर्य समाज सो गया तो हिन्दू समाज मर जायेगा।''**

'भारतरत्न' महामना पँडित मदनमोहन मालवीय जी (बनारस हिन्दू वि0 वि0 के संस्थापक)

(2) **सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पंथा विततो देवयानः ॥ मुण्डकोपनिषद् 3.1.6 ॥**

'' (सत्यम्) सत्य (एव) ही की (जयते) जय होती है (अनृतम्) झूठ की (न) नहीं, (सत्येन) सत्य से ही (देवयानः) मुक्तिप्राप्ति का (पंथा) मार्ग (विततः) फैला हुआ है।''

(3) **दण्ड शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति। दण्ड सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म विदुर्बुद्धा : ॥ मनु० 7.14 ॥**

''दण्ड ही सब पर शासन करता है, दण्ड ही जनता का संरक्षण करता है। सोते हुओं में दण्ड ही जागता है, इन गुणों के कारण विचारशील मनुष्य दण्ड को ही 'धर्म' कहते हैं।''

(4) **मूकाऽन्ध-बधिर-व्यङ्गा नोपहास्याः कदाचन।**

'' गूंगे, अंधे, बहरे तथा अपंग (लूले-लंगड़े) लोगों का कभी भी मजाक नहीं उड़ाना चाहिए।''

गुरु-शिष्य संवाद

शि. 1 जी, 'संवाद' या 'बातचीत' की सर्वोत्तम विधि क्या है?

गुरु 'संवाद' तर्क, प्रमाण व सिद्धांतयुक्त होना चाहिए, इनसे रहित संवाद न करें और न ही सुनें।

शि. 2 जी, आपकी पुस्तक का नाम है 'सत्य सिद्धांत', इसका क्या तात्पर्य है?

गुरु पदार्थ का निश्चयात्मक ज्ञान कि यह ऐसा ही है,अन्य प्रकार का नहीं, इसे **'सत्य सिद्धांत'** कहते हैं।

शि. 3 क्या ईश्वर ने हमारी मृत्यु का समय, स्थान व तरीका पहले ही निश्चित कर रखा है?

गुरु नहीं, ईश्वराज्ञा है कि **''जीवेम शरदः शतम्''** यजु.36.24 अर्थात् 'हम सौ वर्षपर्यन्त जीवें।'

शि. 4 जो हुआ ठीक हुआ, जो हो रहा है वह भी ठीक है और जो होगा वह भी ठीक होगा, क्या ये ठीक है?

गुरु आप नहीं पढ़े, आप नहीं पढ़ रहे, आप नहीं पढ़ोगे, क्या यह मान्यता ठीक है? नहीं ना।

शि. 5 संसार में जो हो रहा है, सब ईश्वर की इच्छा से हो रहा है, क्या ये मान्यता ठीक है?

गुरु नहीं, संसार में बलात्कार, हत्याएं, अन्याय, अत्याचार, मिलावट मनुष्य करते हैं, ईश्वर की इच्छा तो सर्वत्र प्रेम, दया, न्याय, सुख-शांति की होती है क्योंकि वह **'दयालु'** है।

शि. 6 जी, क्या दयालु ईश्वर गौ आदि पशु-पक्षियों के कत्ल करने का आदेश देता है?

गुरु नहीं देता, गौ के दुग्ध, गोबर व मूत्र से सर्वाधिक विषनाशक ऊर्जा मिलती है। (1)

शि. 7 क्या ऐसी कल्याणकारिणी गाय को 'राष्ट्रीय पशु' घोषित किया जा सकता है?

गुरु हाँ, जीवन से सम्बंधी जो भी कल्पनाएं हैं, उनमें सर्वाधिक सुन्दर, सरस और उपयोगी यह गौ ही है। (2)

शि. 8 ईश्वर जो करता है सब ठीक ही करता है, क्या ये मान्यता ठीक है?

गुरु जी हाँ; ईश्वर सब ठीक ही करता है क्योंकि वह सर्वज्ञ, द्रष्टा, साक्षी व न्यायकारी है।

शि. 9 क्या भगवान भक्त के वश में रहते हैं?

गुरु नहीं, वह सर्वशक्तिमान, न्यायकारी है किसी के दबाव में नहीं आता। ये भक्तों संग धोखा है।

शि. 10 ईश्वर के घर देर है पर अंधेर नहीं, क्या ये मान्यता ठीक है?

गुरु नहीं, सर्वव्यापक ईश्वर में न देर है, न अंधेर है, वह सब कार्य समय पर न्यायपूर्वक करता है।

शि. 11 जी, दयालु ईश्वर को मानने वाले भी दुःखी देखे जाते हैं, ऐसा क्यों?

गुरु इसीलिए कि वे ईश्वर की आज्ञानुसार अपने गुण-कर्म-स्वभाव को नहीं बनाते।

शि. 12 कई नास्तिक लोग ईश्वर को ही नहीं मानते फिर भी सुखी देखे जाते हैं, ऐसा क्यों?

गुरु ऐसा इसीलिए कि वे ईश्वर की बातें मानते हैं, जैसे-परिश्रम, ईमानदारी, विद्या पढ़ना आदि।

शि. 13 जी, लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली परेशानियों से बचने का क्या उपाय हैं?

गुरु इसके लिए आप ''उन लोगों की सलाह अवश्य लें, जो आप से पहले ही आप वाले लक्ष्य को प्राप्त कर चुके हैं।'' इससे आप बहुत सी परेशानियों से बच जायेंगे।

(1) **यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्। तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो सोऽवीरहा ॥ अथर्व० 1.16.4 ॥**

''जो दुष्ट हमारे गौ, अश्व और मनुष्यों का विनाश करता है, उसे हमें शीशे से (गोली से) बींध देना चाहिए।''

साहस्रो वा एष शतधार उत्स यद् गौः॥ शतपथ ब्राह्मण 7.5.2.34 ॥

''यह गौ वह झरना है जो 'साहस्र' अनन्त, असीम है, जो 'शतधार' सैंकडों धाराओं वाला है।''

'गाय का गोबर तथा मूत्र रेडिएशन प्रभाव को दूर करते हैं' – रूसी वैज्ञानिक

(2)

स्वराज्य और गाय

'मेरे विचार के अनुसार गौ रक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं है। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य के सवाल से भी बड़ा मानता हूँ। मेरे नजदीक गौ वध व मनुष्य वध एक ही चीज है।'

महात्मा गांधी 'शाकाहार क्रांति' मई 90 (शाकाहार या मांसाहार) श्रुत संवर्धन संस्थान, मेरठ

शि. 14 'नास्तिकता' अर्थात् ईश्वर को ही न माने तो क्या हानि है?

गुरु नास्तिक व्यक्ति या समाज कभी भी पापमुक्त, निर्भय और शांतिप्रिय नहीं हो सकता। (1)

शि. 15 जी, सकारात्मक 'Positive' सोच का क्या अर्थ है?

गुरु अच्छे कार्य को कठिन होते हुए भी सिद्ध करने के 'संकल्प' को **'पोजिटिव'** सोच कहते हैं।

शि. 16 नकारात्मक 'Negative' सोच किसे कहते हैं?

गुरु किसी कार्य को गलत तरीके से सिद्ध करने के 'संकल्प' को **'नेगेटिव'** सोच कहते हैं।

शि. 17 सकारात्मक 'Positive' सोच में सहायक गुण कौन-कौन से हैं?

गुरु स्वास्थ्य, उत्साह, कठोर परिश्रम, समय की परख, धैर्य व ईश्वरसमर्पण।

शि. 18 चिंतन किसे कहते हैं? **गुरु:** दो पक्ष बनाकर तर्क-वितर्क उठाना फिर प्रश्न उठाना, फिर उसका उत्तर खोजना, फिर प्रश्न उठाना, फिर उसका उत्तर खोजना, इसे **'चिंतन'** कहते हैं।

शि. 19 जी, आपने प्रश्नोत्तरादि में भारतीय ऋषियों के प्रमाण क्यों नहीं दिए?

गुरु क्योंकि आजकल लोगों को तत्त्वज्ञानी ऋषियों की अपेक्षा वैज्ञानिकों पर अधिक विश्वास है।

शि. 20 जी, छोटी-छोटी बातों का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

गुरु बड़ा भारी महत्व है। ''जब हम छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देते हैं, तब हमारी महान उन्नति होती है, और महान उन्नति कोई छोटी बात नहीं होती।''

शि. 21 जी, महान उन्नति के क्या उपाय हैं?

गुरु 1 ध्यान से सुनना 2 गहराई से विचार करना 3 सही निर्णय लेना 4 उसे शीघ्र आचरण में लाना। (2)

शि. 22 जी, हमें 'स्वयं' के बारे में क्या सोच रखनी चाहिए?

गुरु यही सोचें कि ''मैं महापुरुषों जैसा क्यों नहीं हूँ , ऐसा काम करें कि आप महान बनें और लोग सोचें कि वो आप जैसे क्यों नहीं हैं।'' (3)

शि. 23 जी, स्वभाव कैसा होना चाहिए?

गुरु ऐसा होना चाहिए कि ''जहाँ रहो वहाँ के लोग आपसे प्रेम करें, चले जाओ तो याद करें, जहाँ नहीं पहुंचे वहाँ लोग आपका इंतजार करें।'' अर्थात् सत्य, सरल व मधुर स्वभाव।

शि. 24 अभिवादन का सर्वोत्तम शब्द क्या है? **गुरु : नमस्ते जी** अर्थात् मैं आपका सम्मान करता हूँ।

(1) **''नास्तिकता का अर्थ है युद्ध और कलह। वैज्ञानिक के रूप में इनमें से मैं एक को भी पसंद नहीं करता। सिद्धांत रूप में मैं इसे तर्क विरुद्ध और मिथ्या (झूठ) समझता हूँ। जहां तक इसके व्यावहारिक पहलू का सम्बंध है, मैं नास्तिकता को घोर विपत्ति का जनक मानता हूँ।''**

प्रो० ओस्कर लियो ब्राउएर (भौतिकविद् और रसायनविद्, सान जांस स्टेट कॉलेज, कैलिफोर्निया, अमेरिका)

''जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रखे हैं, उस का गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मूर्खता है।'' महर्षि दयानन्द (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम् समु०)

(2) **न श्वः श्वमुपासीत! को हि मनुष्यस्य श्वो वेद ॥ शतपथ ब्राह्मण 2.1.3.9)**

''कल करुँगा, कल करुँगा'' ऐसी बात नहीं सोंचनी चाहिए। मनुष्य के कल को कौन जानता है। ''निठल्ले बैठे मनुष्य का भाग्य भी बैठा रहता है, खड़े मनुष्य का भाग्य भी खड़ा हो जाता है। सोने वाले का भाग्य भी सोया रहता है, और चलने वाले का भाग्य भी चल पड़ता है।'' इसीलिए- ''चरैवेति-चरैवेति'' परिश्रम करते हुए चलते रहो, चलते रहो....।

(3) **ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥ यजु० ३२.१४ ॥**

''हे ईश्वर। जिस मेधा बुद्धि की कामना विद्वान तथा महापुरुष करते हैं। उसी बुद्धि व धन से हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! मुझको मेधावी बनाइये, यह मेरी वाणी स्वाहा 'सत्य सिद्ध' होवे।''

चरित्र चर्चा

प्र. 1 आचार्य जी! कहते हैं-धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, लेकिन चरित्र गया तो सर्वस्व गया। आखिर चरित्र को ही सर्वोत्कृष्ट स्थान क्यों ?

उ० इसलिए कि-ज्ञान का आभूषण शांति है, धन का आभूषण सुपात्र को दान, धर्म का आभूषण निष्कपटता है, समर्थ का आभूषण क्षमा है, धैर्य का आभूषण वाणी पर संयम है, शास्त्र ज्ञान का आभूषण नम्रता है। किन्तु यह 'चरित्र' तो सबका ही सब दृष्टि से **'परम् आभूषण'** है।

प्र. 2 'चरित्र' किसे कहते हैं?

उ० जो सृष्टि के आरम्भ से लेके आज पर्यन्त सत्पुरुषों का विशिष्ट आचार-वयवहार है, उसी का नाम 'चरित्र' है। जिसको चरित्, शील, आचरण, सदाचार, व उत्तम चाल-चलन भी कहते हैं।

प्र. 3 सत्पुरुषों के चरित्र की विशेषताएं क्या होती हैं?

उ० वेदोक्त सत्य, न्याय, दया, परोपकार, विद्या, धैर्य, जितेन्द्रियता आदि शुभ गुणों का ग्रहण और अशुभ गुणों का त्याग करना आदि होती है।

प्र. 4 क्या वेदों के अतिरिक्त ग्रंथों से चरित्र व सदाचार की शिक्षा नहीं मिलती?

उ० मिलती है, लेकिन संसार की समस्त विद्या और विज्ञान का मूल **'वेद होने से वेदोक्त'** कहा।

प्र. 5 जी, विद्यार्थी लोग चरित्रवान कैसे बनते हैं?

उ० सुनों- ।। मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।।

अहोभाग्य उस मनुष्य का है कि जिसका जन्म धार्मिक, विद्वान माता-पिता और आचार्य [शिक्षक] के सम्बन्ध में हो क्योंकि इन तीनों की ही शिक्षा से उत्तम [चरित्रवान] मनुष्य होता है।

प्र. 6 जी, माता-पिता हमें चरित्र निर्माण की शिक्षा क्यों नहीं देते?

उ० माता-पिता चरित्र निर्माण की शिक्षा देते तो बहुत हैं पर हम उसकी उपेक्षा करते रहते हैं। उनके अनेक बार समझाने पर भी जब हम नहीं सुधरते तो वे प्रायः निराश हो जाते हैं।

प्र. 7 जी, यदि माता-पिता धार्मिक विद्वान न हों तो उनकी सेवा नहीं करनी चाहिए?

उ० देखो, 'हम जैसे भी थे माता-पिता ने हमें स्वीकार किया, वो जैसे भी हों हम उनको स्वीकार करेंगे'। क्योंकि जो ऐसा नहीं करता वह पुत्र 'कृतघ्न' और 'महापापी' भी होता है।

प्र. 8 विद्वान माता-पिता कैसी शिक्षा और उपदेश करें?

उ० जैसी पूर्वोक्त 'बाल-शिक्षा' के प्रश्न 23 के उत्तर में शिक्षा व उपदेश दिए हैं वैसी करें।

प्र. 9 जी, शिक्षकजन कैसी शिक्षा देकर विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण करते हैं?

उ० शिक्षकजन अपने विद्यार्थियों को उपदेश देते हुए कहते हैं कि-

आज से तुम हमारे ब्रह्मचारी शिष्य और ब्रह्मचारिणी शिष्या हो, तुम नित्य ईश्वर की उपासना किया करो, माता-पिता व गुरुजनों के आधीन हो विद्या और शरीर का बल बढ़ाया करो, रात्रि में शीघ्र शयन व प्रातः शीघ्र जागरण किया करो। अण्डा, मांस, नशा सेवन को विषतुल्य जानो, अपनी विद्या, बुद्धि, धन और बल के अभिमान से किसी का अपमान मत किया करो। अश्लील, वस्त्र, चित्र, मित्र त्यागकर अपने ब्रह्मचर्य-धातु की रक्षा किया करो आदि।

प्र. 10 जी, कौन विद्यार्थी सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त कर सकता है?

उ० जो विद्यार्थी धार्मिक विद्वान माता-पिता व शिक्षकों के उपदेशानुसार अपने गुण-कर्म-स्वभाव को बनाता है, वही विद्या पढ़ चरित्रवान होकर सम्पूर्ण सुख प्राप्त करता है।

प्र. 11 जी, चरित्र निर्माण में क्या-क्या बाधाएं है?

उ० आलस्य, अभिमान, निंदा, चुगली, ईर्ष्या-द्वेष, लोभ तथा पूर्वोक्त व्यसन आदि दोष बाधक हैं।

प्र. 12 चरित्रहीनता किसे कहते हैं?

उ० जो पवित्रात्मा-महापुरुषों के विरुद्ध आचरण करना है, वही '**चरित्रहीनता**' कहलाती है।

प्र. 13 क्या बलात्कारी-व्यभिचारी को ही चरित्रहीन नहीं कहते हैं?

उ० कहते हैं,लेकिन जो छात्र-छात्रा या स्त्री-पुरुष अन्य स्त्री-पुरुषों का दूषित मन से ध्यान, वार्तालाप, छेड़खानी, मौजमस्ती, एकांतवास और परस्पर मेल भी 'चरित्रहीनता' ही कहलाती है।

प्र. 14 चरित्रवान लोगों से युक्त परिवार की क्या विशेषताएं होती हैं?

उ० 1.प्रातः-सायं ईश्वरोपासना। 2.परस्पर अभिवादन। 3.परस्पर सत्य मधुर, शांतिदायक वाणी। 4.स्त्रियों का आदर सम्मान। 5.परस्पर संवेदना। 6.सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना। 7.निश्छल अतिथि सत्कार। 8.मद्य-मांसादि रहित। 9.समाज, राष्ट्र की हित भावना आदि हैं।

प्र. 15 क्या नीच कुलोत्पन्न व्यक्ति भी चरित्रवान हो सकते हैं?

उ० हाँ, नीच कुलों में भी मनुष्य धर्मात्मा होके चरित्रवान हो जाते हैं। जैसे-विदुर जी, देवी पन्नाधाय।

प्र. 16 चरित्रवान व्यक्ति को क्या-क्या लाभ होते हैं?

उ० 1.चरित्रवान व्यक्ति दीर्घायु पाता है। 2.मनचाही संतान पाता है। 3.चरित्रता से अक्षयधन पाता है। 4.सुचरित्रता सब प्रकार की कमी तथा कुरूपता आदि को निष्प्रभावी कर कुल गौरव बढ़ाती है।

प्र. 17 चरित्रहीन व्यक्ति को क्या-क्या हानि होती है?

उ० 1.चरित्रहीन व्यक्ति संसार में निन्दा प्राप्त करता है। 2.निरन्तर दुःख भोगता रहता है। 3.निरंतर रोगी रहता है और अल्पायु होता है। 4.अपनी कुलकीर्ति भी नष्ट कर देता है।

प्र. 18 जी, सुनते हैं श्री कृष्ण जी भी अनेक पर-स्त्रियों से मेल रखते थे, क्या ये सत्य है?

उ० नहीं, श्री कृष्ण जी की एक ही पत्नी थी रुक्मिणी देवी। चोरी-जारी आदि दोष तो स्वार्थी और व्यभिचारी, अविद्वान कथावाचकों ने अपने दोष ढ़कने के लिए लगा दिए।

प्र. 19 जी, श्रीकृष्ण जी का युद्धकाल में छल कपट करना क्या चरित्रहीनता नहीं थी?

उ० नहीं थी। पर अन्य लोग छल-कपट करें तो ये चरित्रहीनता है,लेकिन श्रीकृष्ण जी क्षत्रिय-राजा थे। वे सत्य, राष्ट्र रक्षार्थ विपत्ति में ऐसा करें तो ये चरित्रहीनता नहीं। ऐसा वेदानुकूल है।

प्र. 20 जी, चरित्रवान विद्यार्थीगण अथवा स्त्री-पुरुषों की पहचान किन गुणों से होती है?

उ० 1.आस्तिकता। 2. निरभिमानता। 3. वचनबद्धता। 4. कर्त्तव्यशील-सत्यवक्ता। 5.पर स्त्री-पुरुषों के प्रति पवित्र भावना। 6. उपदेश से पूर्व स्वयं आचरण करना आदि गुणों से।

प्र. 21 चरित्रवान् एवं चरित्रहीन मनुष्य में क्या मुख्य भेद होता है?

उ० चरित्रवान पतित होने पर भी गेंद के गिरने के समान तुरंत ही ऊपर उठ जाता है, जबकि चरित्रहीन पतित होता है तो मिट्टी के ढ़ेले के समान फिर कभी नहीं उठ पाता।

प्र. 22 तो क्या चरित्रपथ से भटके युवा लोग कभी चरित्रवान नहीं हो सकते?

उ० भटके हुए युवा तो निम्न उपायों से चरित्रपथ पर आरुढ़ हो सकते हैं, जैसे-
1.चरित्रवान धर्मात्मा-विद्वानों के संग से 2.अपने मन-बुद्धि-आत्मा की शुद्धि से
3.सत्य के जानने, मानने और ग्रहण करने से 4.प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण आदि करने से।

प्र. 23 और मिट्टी के ढ़ेले के समान न उठ सकने वाले चरित्रहीन कैसे होते हैं?

उ० 1.बिना विद्या पढ़े घमण्डी लोग। 2.गुणों में दोष और दोषों में गुण मानने वाले। 3.दुर्व्यसनी-दुष्ट वचन बोलने वाले। 4.सज्जनों के वैरी, जैसे-रावण, दुर्योधन, औरंगजेब।

प्र. 24 जी, क्या विद्या पढ़कर भी व्यक्ति चरित्रहीन हो सकता है?

उ० हाँ, जैसे-रावण, दुर्योधन, अफजल गुरु, भ्रष्टाचारी अधिकारी आदि।

प्र. 25 जी, रावण ने तो एक ही पाप किया था फिर भी वह चरित्रहीन क्यों?

उ० दुर्गुण तो एक ही काफी है,फिर रावण तो अहंकारी,मद्यपायी,सज्जनद्रोही,अत्यन्तकामी आदि था।

प्र. 26 जी, श्रीराम के चरित्र की भी कुछ विशेषताएं बताइए।

उ० श्रीराम आज्ञाकारी पुत्र, गुरु सेवक, आदर्श राजा, एक पत्नीव्रती, स्वजनपालक, आदर्श मित्र, आदर्श शत्रु, प्रतिज्ञापालक, ईश्वर के परमभक्त आदि विशेषताओं वाले थे।

प्र. 27 जी, कृपया 'आदर्श शत्रु' पर प्रकाश डालिए।

उ० सुनिए-जब श्रीराम ने युद्ध में रावण को मार दिया तब श्रीराम विभिषण जी से बोले-

मरणान्तानि वैराणि निर्वृत्तं नः प्रयोजनम्। क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव।।।।वा.रा.युद्धकांड।।

हे विभिषण! जब तक मनुष्य जीवित होता है तभी तक उसके साथ वैर रहता है। मरने पर वैर भी समाप्त हो जाता है। यह रावण मर चुका है और हमारा प्रयोजन भी सिद्ध हो चुका है, अब तो यह जैसा तुम्हारा भाई था वैसा ही मेरा भी है। अतः इसका सम्मानपूर्वक दाह-संस्कार करो। इसे कहते हैं 'आदर्श शत्रु'।

प्र. 28 जी, विभिषण के संदर्भ में 'घर का भेदी लंका ढ़हाये' क्या ये कहावत उचित है?

उ० नहीं, क्योंकि महात्मा विभिषण रावण व लंका के परम हितैषी थे, लंका तो रावण के घमण्ड़ से ढ़ही।

प्र. 29 जी, सत्पुरुषों और दुष्ट पुरुषों के चरित्र की मुख्य पहचान क्या है?

उ० **मनस्यन्यद् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्। मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।।**

मन में कुछ, वाणी में कुछ, तथा कर्मरूप में और ही करना 'दुष्टों की पहचान' है।

जैसा मन में वैसा वाणी में और वैसा ही कर्मरूप में करना 'सत्पुरुषों के चरित्र की पहचान' है।

प्र. 30 जी, अच्छी धार्मिक 'विदुषी माता और पुत्र' का कोई दृष्टांत सुनाइए।

उ० ठीक है, मैं आपको **'माता निर्माता भवति'** नामक दृष्टांत सुनाता हूँ -

एक सुन्दर-बलिष्ठ युवा घोड़े पर बैठकर किसी आवश्यक कार्य से कहीं जा रहा था। जंगल में रास्ते के बीच उसे एक गधा खड़ा मिला। उसने गधे को रास्ते से हटाने की काफी कोशिश की पर वह नहीं हटा। युवक बोला- हे महाशय! रास्ते से हट जाइये मुझे शीघ्र जाना है लेकिन गधा था कि टस से मस नहीं हुआ।

इस सारी घटना को पेड़ के नीचे बैठा एक साधु देख रहा था। उससे रहा नहीं गया और युवक के पास आकर बोला- हे नवयुवक! ये गधा आदर के योग्य नहीं, इसे जोर से एक बेंत मारो और आगे निकल जाओ। युवक बोला- मनुष्य का प्रथम परिचय वाणी से ही होता है। वही उसकी योग्यता प्रकट करती है। भद्रवाणी और सद्व्यवहार ही कुल का यथार्थ परिचय होता है। किसी भी प्राणी पर अत्याचार नहीं करना चाहिए। वो अपने कर्म का फल भोग रहा है, उसके कारण हम अपना स्वभाव क्यों बिगाड़ें। एकांत अथवा प्रतिकूल अवस्था में भी अपने स्वभाव और चरित्र की रक्षा करनी चाहिए। निरंकुश और चरित्रहीन की रक्षा न स्वदेश में होती है न परदेश में। क्योंकि **'यथा राजा तथा प्रजा'** 'जैसा राजा होता है, प्रजा भी वैसी ही होती है'। **'ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं वि रक्षति'**, 'आस्तिकता, विद्या और जितेन्द्रियता से ही राजा अपने राष्ट्र की पूर्ण रक्षा कर सकता है।'

ये सब सुनकर साधु सन्न रह गया और युवक से निवेदन करते हुए बोला- हे नवयुवक! कृपया अपना परिचय और अपने उपदेशक गुरु का नाम बतायें।

युवक हाथ जोड़कर नम्रता से बोला-हे साधु महाराज! मैं इस राज्य का भावी युवराज शत्रुदमन हूँ। और मेरी उपदेशक गुरु मेरी माता जी हीं हैं। साधु ने ये सब सुना तो मन ही मन उस उपदेशक माता को नमन करते हुए कह उठा **'माता निर्माता भवति।'** सच कहा है 'माता ही मनुष्य के भावी जीवन व चरित्र निर्माण की आधार होती है।'

स्वास्थ्य रक्षा

देव 1 आचार्य जी! कृपया बुद्धि व बल वृद्धि के उपाय व विनाश के कारणों पर प्रकाश डालिए?

आ० बहुत अच्छा, पर ध्यान रहें बुद्धि वृद्धि का अर्थ है स्मरणशक्ति व ज्ञानवृद्धि करना। **देवः** जी।

देव 2 आचार्य जी! शीघ्र 'बौद्धिक विकास' कैसे हो सकता है?

आ० 1. रात को जल्दी सोना, प्रातः जल्दी उठना। 2. ईश्वर का ध्यान करना, सदा सत्य बोलना। 3. दूसरों की सेवा-सत्कार आदि करने से। 4. गणित, विज्ञान जैसे कठिन विषय पढ़ने से। 5. दूसरों के अनुभव का प्रयोग लेने से। 6. ज्ञात विषय अन्यों को पढ़ाना आदि से।

यश 3 जी! बुद्धि का 'शीघ्र विनाश' करने वाले कारण क्या-क्या हैं?

आ० क्रोध, दुर्जनसंग, विद्वानों का तिरस्कार, ब्रह्मचर्य नाश आदि से शीघ्र बुद्धि नष्ट होती है।

देव 4 जी! ब्रह्मचर्य नाश से शीघ्र बुद्धि नाश कैसे होता है?

आ० **आहारस्य परं धाम शुक्रं तद्रक्ष्यमात्मनः। क्षयो ह्यस्य बहून् रोगान् मरणं वा नियच्छति॥** चरक नि. सुनो-खाए हुए आहार का 'परमसार' है वीर्य धातु। अतः युवकों को अपने धातु की बड़े यत्न से रक्षा करनी चाहिए। ब्रह्मचर्य नाश से 'बुद्धि नाश' क्या अनेक रोग व मृत्यु तक हो सकती है।

यश 5 जी! ब्रह्मचर्य का व्यापक अर्थ क्या है?

आ० ब्रह्मचर्य अर्थात् ईश्वरचिंतन, ब्रह्मचर्य अर्थात् वेद-विद्या अध्ययन, ब्रह्मचर्य अर्थात् वीर्य रक्षण हैं।

देव 6 जी! कई बार 'पढ़ा' व 'याद किया' विषय जल्दी भूल जाते हैं, ऐसा क्यों होता है?

आ० विषय को गंभीरता से न लेना, अन्य कार्यों में रूचि एवं मानसिक दुर्बलता आदि हो सकते हैं।

यश 7 जी! 'मानसिक दुर्बलता' के क्या कारण हो सकते हैं?

आ० धातुक्षय, मलावरोध(कब्ज), लम्बे रोगी रहना, अत्यधिक मोबाईल का प्रयोग आदि हैं।

दक्ष 8 जी! कहते हैं 'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्। इसे समझाइये।

आ० इसका अर्थ है कि-जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है, निर्बुद्धि के पास बल कहां। अब बुद्धि का चमत्कार सुनिए-' स्वपक्ष के कुछ लोग शत्रुपक्ष में चले गए हैं' ऐसी सूचना मिलने पर 'महामति चाणक्य' ने कहा- जो लोग धनादि के लोभ में शत्रुपक्ष में चले गए; और जो अब तक हमारे पक्ष में हैं वे भी भले ही चले जावें। केवल एक वस्तु जोकि प्रयोजन सिद्धि में सैंकड़ों सेनाओं से बढ़कर है और जिसने 'नन्द साम्राज्य' को जड़ से उखाड़कर अपने पराक्रम की महिमा दिखा दी है-वह मेरी 'तेजस्विनी बुद्धि' मुझसे कभी दूर न जावे।

दक्ष 9 जी! ऐसी 'तेजस्विनी बुद्धि और पराक्रम' प्राप्ति का क्या उपाय है?

आ० ब्रह्मचर्य का पालन, योगाभ्यास और परमेश्वर की उपासना ही है जिनके द्वारा शारीरिक, आत्मिक और बौद्धिक बल की प्राप्ति होती है।

देव 10 जी! 'शारीरिक अशुद्धि' को दूर करने के क्या उपाय हैं?

आ० स्नान करना। सदैव स्नान करने वाले विद्यार्थी की आयु, बल, पवित्रता, आरोग्यता व बुरे-बुरे स्वप्नों का न आना और तीव्रबुद्धि की प्राप्ति होती है।

देव 11 जी! बुरे-बुरे स्वप्न आने के क्या कारण हैं?

आ० गंदे विचार, अश्लील चल-चित्रादि, कुसंगति, चटपटे बाजारू खाद्य पदार्थ, ठीक से नींद न आना, कब्ज बुरे स्वप्नों के कारण हैं, जो ब्रह्मचर्य रक्षा और बल-बुद्धि के भी परमशत्रु हैं।

यश 12 जी! कब्ज का स्वप्नदोष आदि विकारों से क्या सम्बन्ध है?

आ० शरीर में मलाशय और मूत्राशय के पास ही शुक्राशय स्थित है। मल-मूत्र के दबाव से गर्मी के कारण शुक्राशय उत्तेजित होकर स्वप्नदोष या धातु विकार आदि रोग हो जाते हैं।

देव 13 जी! हमें प्रायः कब्ज बहुत रहती है, इसका क्या कारण है?

आ० अनियमित-बेमेल-रूक्षाहार, अनियमित शयन-जागरण, आसन-व्यायाम न करना आदि।

यश 14 जी! स्वप्न विकार से बचने के क्या उपाय हैं?

आ० 1.रात्रि में हल्का-सुपाच्य भोजन लेना। 2.शुभ संकल्प व ईश्वर से प्रार्थना करके सोना। 3.सोने से पूर्व अतिगर्म दूध सेवन न करना। 4.रात्रि में 10 बजे सोना प्रातः 5 बजे उठना। 5.अश्लील विषयों से घृणा बनाए रखना। 6.मल-मूत्रादि त्यागकर, पैर धोकर सोना आदि हैं।

दक्ष 15 जी! व्यायाम-आसन आदि के क्या-क्या लाभ हैं?

आ० 1.व्यायामादि से रस-रक्तादि धातुएं बढ़ती हैं। 2. कष्ट सहने का सामर्थ्य व उत्साह बढ़ता है। 3.वीर्यधातु शरीर-बुद्धि वृद्धि में लग जाती है। 4. कुरूपता नष्ट होके सुडोलता आती है।

देव 16 जी! कई बार आंखों के आगे अंधेरा सा आना, चक्कर आना क्यों होता है?

आ० इसका कारण शरीर व मस्तिष्क की कमजोरी, धातुक्षीणता व अन्य भी कारण हो सकते हैं।

दक्ष 17 जी! क्या कोई ऐसी भी 'जड़ी-बूटी' है जिसके सेवन से सब रोग नष्ट हो जाएं?

आ० हाँ, है ना।

दक्ष 18 जी! क्या है? कृपया बताइये ना।

आ० तो सुनिए-**त्रय उपस्तम्भा इति-आहारःस्वप्नो ब्रह्मचर्यमिति॥** (चरक सूत्र. 11.35) आहार-निद्रा-ब्रह्मचर्य-ये तीन स्तम्भ या तीन जड़ी-बूटियाँ हैं। इन तीनों का सावधानी से सेवन करने वाला आजीवन बल-बुद्धि से समृद्ध होकर पूर्ण स्वस्थ रहता है।

देव 19 जी! 'ब्रह्मचर्य' का इतना महत्व क्यों दर्शाया जा रहा है?

आ० इसलिए कि जो पीछे चार आश्रम बताए थे उनमें तीन आश्रमों का आधार ये 'ब्रह्मचर्याश्रम' ही तो है। इसके बिना अन्य तीनों कभी भी सुखी व निरोगी नहीं रह सकते। जीवन में जो जितना चारित्रिक महान बना, उसकी ब्रह्मचर्य नींव उतनी ही गहरी व मजबूत रही है।

यश20 जी! क्या ये बल-बुद्धि स्वास्थ्यवर्धक 'ब्रह्मचर्यादि बूटी' लड़का-लड़की दोनों के लिए समान है?

आ० हाँ, विद्या-बल, बुद्धिवर्धक ये 'ब्रह्मचर्य' लड़का-लड़की दोनों के लिए परमावश्यक है।

संवाद खण्ड

देव जी! बहुत बार सुनते हैं कि धातु नाश से कोई हानि नहीं होती, क्या ये सत्य है?

आ० नहीं। यदि कोई आपकी गाड़ी से आधा पैट्रोल निकाल दे तो क्या वह गाड़ी आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचा देगी?

देव जी! नहीं पहुँचायेगी।

आ० इसी प्रकार धातु भी जीवन यात्रा का ईंधन है, जो शरीर को धारण करता है और जीवन यात्रा को बिना किसी रोग-व्याधि के लक्ष्य तक पहुँचा देता है।

यश जी! ये तो बनता रहता है, निकल भी जाये तो आखिर हानि ही क्या है?

आ० अच्छा आप सब बताओ कि-जो भी आप दिन-रात याद करते हो यदि वो सब दिमाग से 'डिलीट' हो जाए तो कोई हानि है या नहीं?

दक्ष जी! बहुत हानि है। जो हमने दिन-रात याद किया वो ही यदि 'डिलीट' हो गया तो फिर भविष्य में सफल कैसे होंगे?

आ० तो फिर बताइये जो ब्रह्मचर्य धातु आपने महीनों पौष्टिक आहार, फल, मेवा, दूध-घी आदि खाकर शरीर में 'स्टोर' की, यदि वही बीच-बीच में साफ हो जाए तो ये छोटी हानि है या बड़ी?

दक्ष जी! ये तो महान हानि है।

आ० और देखो-हमारे माता-पिता कितनी मेहनत से हमारा ध्यान रखते हैं। यदि फिर भी हमारी किसी मूर्खता से उन्हें दु:ख हो तो क्या ये घोर हिंसा व अन्याय नहीं है?

देव **जी! सच है। कई माता-पिता कहते हैं कि देखो-खूब खिलाते-पिलाते हैं पर सूखता जाता है।**

आ० सही बात है, गन्ने को देखो जब उसमें रस होता है तो कैसा सुन्दर व सुड़ौल लगता है और जब उसका रस निकाल दिया जाता है तो शीघ्र ही सूखकर नष्ट हो जाता है।

दक्ष **जी! हमारे कई साथी बहुत 'बलिष्ठ' और 'मेधावी' थे पर कुसंगति के कारण आज वे बहुत निराश रहते हैं। आखिर कुसंगति विनाश कैसे कर देती है?**

आ० देखो दक्ष, हम मनुष्यों में अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के संस्कार विद्यमान रहते हैं। उसी के अनुसार हम सांसारिक विषयों में आकर्षित होते हैं। जब हमें धार्मिक माता-पिता, विद्वान शिक्षक व सम्बन्धी जन उपदेश करते हैं तो हमारे अच्छे शुभ संस्कार उभर आते हैं और हम जीवन में बहुत उन्नति कर जाते हैं, लेकिन जब अच्छे सम्बन्धी नहीं मिलते और दुर्जन दुष्ट लोग मिल जाते हैं, जिनके मुख में तो होती है 'शहद सी वाणी' और मन में भरा होता है हलाहल 'विष'। तब वे हमें लोभ-लालच व सुख दिखाकर पाप कर्म करने को प्रेरित करने लग जाते हैं। तभी हमारे अशुभ संस्कार जो अभी तक दबे हुए थे वो उभर आते हैं और शुभ संस्कार दबते चले जाते हैं।

कुसंस्कारों का सुख पहले तो बड़ा रुचिकर लगता है लेकिन कुछ काल बाद परिणाम स्वरूप वह सुख भयंकर दु:ख की दल-दल में फंसा देता है। जिससे निकलना अति कठिन हो जाता है। कुछ काल बाद दुष्ट-दुर्जन तो किसी दूसरे समर्थ का जीवन नरक करने को निकल पड़ते हैं, लेकिन कुसंगति का असर हमारे जीवन में जहर की तरह काम करता रहता है।

इसलिए प्रिय विद्यार्थियों! न तो कुसंगति में फंसो, न किसी लड़का-लड़की को फंसने दो। अपने मित्रों को कुछ अपमान सहकर भी बचाओं। अच्छे सच्चे मित्र खोना भी किसी हानि से कम नहीं होता। **बात समझ में आई या सो गये?**

दक्ष **आचार्य जी! सोये हुए तो पहले थे, अब तो कुछ आंख सी खुली है। कुछ अज्ञान का अंधेरा सा छंटने लगा है ब्रह्मचर्य और चरित्र की महिमा सुनकर।**

यश **आचार्य जी! कृपा करके हमारी एक 'शंका' का 'समाधान' और कर दीजिए।**

आ० ठीक है। बताइये आप सबकी क्या 'शंका' है?

दक्ष **जी! यही कि-'वर्तमान में कुछ युवा इस 'ब्रह्मचर्य' की कीमत क्यों नहीं समझ पा रहे हैं?**

आ० शाबाश! बहुत ही 'सर्वकल्याणकारी शंका' की है आप विद्यार्थीजनों ने, तो सुनों-

वर्तमान काल में हमें घर-बाहर, विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में कहीं भी मनुष्य जीवन का उद्देश्य नहीं बताया जाता अपितु जिस प्रकार अन्य प्राणी खाने-पीने व सोने में ही अपना जीवन बिता रहे हैं, उसी प्रकार मनुष्य का पढ़ना-पढ़ाना, परिश्रम करना, पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करने का उद्देश्य बस विषयभोगों की पूर्ति के लिए ही हो रहा है।

वर्तमान में मनुष्य ने इतने भोग-विलास के साधन इकठ्ठे कर लिए हैं कि लगता ही नहीं इन भोगों के अतिरिक्त भी कोई मनुष्य जीवन है। तो जो वर्तमान में दिखाया जाएगा, पढ़ाया जाएगा, सिखाया जाएगा उसी को तो मनुष्य आचरण में लाएगा या नहीं?

दक्ष **जी! वैसा ही आचरण में लाएगा।**

आ० यदि आज घरों व शिक्षण संस्थानों में सर्वत्र ये सिखाया जाए कि मनुष्य जीवन उत्कृष्ट व शुभ कर्मों का फल है। और मनुष्य जीवन का परम उद्देश्य परम शान्ति, परम तृप्ति, परमानन्द परमेश्वर की प्राप्ति करना और कराना है। स्त्री, पुरुष, धन-सम्पति, भोग-विलास, पद-प्रतिष्ठा आदि कोई भी हमें सौं जन्मों में भी तृप्त व शांत नहीं कर सकते, बिना सद्विद्या, योगाभ्यास व ईश्वर भक्ति के। जब इस प्रकार पढ़ाया, सिखाया जाएगा तब ही मनुष्य भेद समझेंगे पशु जीवन में और मनुष्य जीवन में, पाप में और पुण्य में, भोगाभ्यास में और योगाभ्यास में।

यश **जी! सही है, जब इस प्रकार सिखाएंगे तभी तो समझ में आएगा 'जीवन का लक्ष्य'।**

आ० तो जिन युवक-युवतियों के जीवन का कोई 'महान लक्ष्य' ही नहीं वो क्या कीमत समझेंगे इस 'ब्रह्मचर्य' और 'ब्रह्मचर्याश्रम' विद्या काल की?

इस 'ब्रह्मचर्य' का महत्त्व तो समझा **'महर्षि दयानन्द सरस्वती जी'** ने जिन्होने विश्व में वेद व वैदिक संस्कृति का डंका बजा दिया, इसका महत्त्व जाना **'अमर शहीद भगत सिंह जी'** व **'बिस्मिल जी'** आदि शहीदों ने जिन्होने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये और अंग्रेज देश छोड़ने पर मजबूर हुए, इस ब्रह्मचर्य का रहस्य जाना **'डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी'** ने जिन्होने भारत को विश्व की महाशक्ति बना दिया। आज भी देश के मेधावी युवक-युवतियां इनसे प्रेरणा लेकर ब्रह्मचर्य पालनपूर्वक देश को प्रत्येक क्षेत्र में महाशक्ति बनाने में जुटे हुए हैं।

बोलो ये सही है या नहीं?

दक्ष **जी हाँ, सही है और जुटे हुए हैं।**

तो, प्रिय विद्यार्थियों! जिसके **'जीवन का लक्ष्य'** कुछ क्रांतिकारी, लोकल्याणकारी करने का होता है, उसके लिए तो **'ब्रह्मचर्य'** सांसारिक आघातों के लिए **'ब्रह्मास्त्र'** ही है। इसलिए कहा है कि-

पत्थर सी हो मांस पेशियाँ, लोहे से भुजदण्ड अभय।
रग-रग में हो लहर आग की, तभी जवानी पाती जय।।

आयुर् खण्ड

इस खण्ड़ में आयुर्वेद के कुछ सुपरीक्षित बल-बुद्धि व स्वास्थ्यवर्धक उपाय बताये जा रहे हैं। जो अति सरल व सुलभ होते हुए भी अति उपयोगी हैं।

स्मृति-मस्तिष्क एवं हृदय बलवर्धक उपाय

1. 1 ग्राम सोंठ का चूर्ण, 1 ग्राम ब्राह्मी का चूर्ण, देशी खाण्ड मिले 1 गिलास गाय के निवाये दूध के साथ 1 माह नियमित लेने से बल-बुद्धि व आयु की वृद्धि होती है।

2. 20 ग्राम ब्राह्मी चूर्ण, 60 ग्राम त्रिफला चूर्ण, 5 ग्राम काली मिर्च चूर्ण व सबके समान मिश्री मिलाके रख लें। 5 से 10 ग्राम की मात्रा 4 से 5 सप्ताह पानी के साथ नियमित लेने से मस्तिष्क की दुर्बलता व घबराहट दूर होती है।

3. आयुर्वेद का 'सारस्वत चूर्ण' 3 से 5 ग्राम की मात्रा में उत्तम शहद या गाय के घी के साथ मिलाकर प्रातः-सायं खाली पेट 1 से 2 माह तक लेने से तीव्र बुद्धि होती है और स्मरण शक्ति बढ़ती है।

4. 'सारस्वतारिष्ट' 4 चम्मच दवा और 4 चम्मच पानी मिलाकर प्रातः-सायं भोजन के 1/2 घण्टे बाद 4 से 5 सप्ताह तक सेवन करने से धातु, स्मृति एवं मस्तिष्क बल वृद्धि होती है।

5. सेब का बढ़िया मुरब्बा 100 ग्राम प्रातः-सायं भोजन से 1 घण्टा पूर्व खाने से 4-6 सप्ताह में चिड़चिड़ापन, हृदय की घबराहट, सिर दर्द व कमजोरी में लाभ होता है।
6. आंवले का मुरब्बा 1-1 नग, 1 चांदी के वर्क में लपेटकर प्रातः-सायं खाली पेट खाने से जलन, अम्लपित्त, नेत्ररोग एवं घबराहट में लाभ होता है।
7. नित्य प्रातः काल मालकंगनी के 1 या 2 बीज कुचलकर दूध अथवा जल के साथ निगलने से 20-25 दिन में स्मरणशक्ति बढ़ जाती है।
8. मालकंगनी का असली तेल 4-5 बूंद हल्के निवाये दूध में मिलाकर 3-4 सप्ताह तक पिया करें, इसके सेवन करने से मस्तिष्क पुष्ट होकर, स्मरण शक्ति बढ़ जाती है।

कोष्ठबद्धता 'कब्ज' नाशक उपाय

1. 'हरड़ का मुरब्बा' 10 ग्राम रात को सोने से 1 घण्टा पहले गर्म दूध से सेवन करें।
2. 'गुलाब का गुलकंद' 20 ग्राम चबाकर 1 गिलास गर्म दूध के साथ सोने से पहले सेवन करें।
3. 'त्रिफला चूर्ण' 1 छोटा चम्मच रात को सोने से 1 घण्टा पूर्व लेने से दस्त साफ होता है।
4. पञ्चसकार चूर्ण 1 छोटा चम्मच रात को गर्म पानी के साथ सेवन करने से दस्त साफ आता है।

बलपुष्टिवर्धक उपाय

1. बढ़िया मोटी अश्वगंधा लाकर कूट-पीस चूर्ण बना लें। 5-5 ग्राम चूर्ण प्रातः-सायं खाली पेट मिश्री मिले हल्के गर्म दूध के साथ सेवन करें। इस प्रकार 3-4 माह लगातार प्रयोग करने से मोटापा बढ़ता है, नया रक्त बनता है। बल एवं धातु वृद्धि होती है।
2. बबूल की बिना बीज की फली, बबूल की कोंपल दोनों छाया में सुखाई हुई 50-50 ग्राम, बबूल का गोंद 50 ग्राम। तीनों का चूर्ण बना समभाग मिश्री मिलाकर रख लें। प्रातः - सायं खाली पेट 6-6 ग्राम की मात्रा गुनगुने दूध से लें। सामान्य होने पर भी ये धातु दोषों को दूर करता है। स्वप्नविकार व पेशाब के साथ धातु जाने में उत्तम लाभ करता है।

स्मृतिवर्धक मेधा रसायन

बढ़िया ब्राह्मी, घुड़वच, सोंठ, शतावर, गिलोय, वायविडंग, शंखपुष्पी और जटामांसी सब 25-25 ग्राम लेकर कपड़छन चूर्ण बनाकर रख लें।

मात्रा-2-2 ग्राम प्रातः-सायं खाली पेट ताजा पानी से लें ।

उपयोग - यह योग मेधावर्धक, स्मृतिवर्धक, वाणी के दोषों- तुतलाना, हकलाना, शब्द का उच्चारण स्पष्ट न होना आदि दोषों को दूर करता है। इसके सेवन से अच्छी नींद आती है, पेशाब साफ आता है। जो बालक स्वप्न में डर जाते है उनको भी यह लाभ करता है।

विद्यार्थियों, वकीलों के लिए तो यह परम् उपयोगी है।

-:निर्देश:-

1. उपरोक्त औषध की मात्रा किशोरावस्था एवं बड़ी आयु वालों के लिए है।
2. औषध सेवन काल में भी व पश्चात भी जो-जो सावधानियां 'आहार गुण-दोष' व 'स्वास्थ्य रक्षा' विषय में वर्णित है। उनका पालन करना अतिआवश्यक है।

प्रश्न पत्र का प्रारूप

समय १ घंटा **पूर्णांक-१००**

प्रश्न. १ सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइये :- **(५० प्रश्न)**

1. विश्व की 'प्राचीनतम भाषा' है :-
   क. हिन्दी ख. अंग्रेजी ग. वैदिक संस्कृत घ. उर्दू
2. योग के अंग होते हैं :-
   क. पांच ख. सात ग. आठ घ. अठारह
3. महायज्ञ होते हैं :-
   क. तीन ख. पांच ग. सात घ. आठ

प्रश्न. २ सही उत्तर लिखिए :- **(१० प्रश्न)**

4. अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है .....
5. तनावमुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है .....
6. ईश्वर का मुख्य नाम है .....

प्रश्न. ३ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :- **(१० प्रश्न)**

7. ..... के बिना कोई सुधरता नहीं ।
8. धर्म का आधार है ..... और विज्ञान ।
9. पूर्वकृत कर्मों के प्राप्त फल को ..... कहते हैं ।

प्रश्न. ४ सही/गलत (✓/✗) का निशान लगाइये :- **(१० प्रश्न)**

10. मुक्ति एक जन्म में होती है । ( )
11. वेद शब्द का अर्थ है 'ज्ञान' । ( )
12. क्षमा से सुधार कभी नहीं होता । ( )

प्रश्न. ५ सही मिलान कीजिए :- **(१० प्रश्न)**

13.	क. गुरु	चेतन	.....
14.	ख. वायु शुद्धि	माता	.....
15.	ग. आत्मा	यज्ञ	.....

प्रश्न. ६ निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- **(१० प्रश्न)**

16. छल-कपट किसे कहते हैं ? उ0 .....
17. विद्यार्थी का आहार कैसा हो ? उ0 .....
18. मातृदिवस कब मनाया जाता है ? उ0 .....
19. चेतन मूर्तिपूजा की विधि क्या है ? उ0 .....
20 हे परमेश्वर! आप सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान.....। प्रार्थना लीखिए।

वेदोक्त मानव-धर्म

ओ३म् दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।
(यजुर्वेद ३६.१८)

अर्थ : (**दृते०**) हे सब दुःखों के नाश करने वाले परमेश्वर! आप हम पर ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे हम लोग आपस में वैर को छोड़ के एक दूसरे के साथ प्रेमभाव से वर्त्तें (**मित्रस्य मा०**) और सब प्राणी मुझ को अपना मित्र जान के बन्धु के समान वर्त्तें। ऐसी इच्छा से युक्त हम लोगों को (**दृꣳह**) सत्य सुख और शुभ गुणों से सदा बढ़ाइये (**मित्रस्याहं०**) इसी प्रकार से मैं भी सब मनुष्यादि प्राणियों को अपने मित्र जानूं और हानि, लाभ, सुख और दुःख में अपने आत्मा के समतुल्य ही सब जीवों को मानूं (**मित्रस्य च०**) हम सब लोग आपस में मिल के सदा मित्र भाव रखें और सत्यधर्म के आचरण से सत्य सुखों को नित्य बढ़ावें। जो ईश्वर का कहा धर्म है, यही एक सब मनुष्यों को मानने के योग्य है।

(ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका)

मनुष्य उसी को कहना कि-**मननशील हो कर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे।** अन्यायकारी बलवान से भी न डरे **और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं-कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों-उन की रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और** अधर्मी चाहे चक्रवर्त्ती सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उस का नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि **और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उस को कितना ही दारूण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।**

(सत्यार्थ प्रकाश-स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश)

।। नमस्ते ।।